ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही ५४०
नवंबर **2008** 		वर्ष २ अंक ३

संपादक 		*सहायक संपादक*
सिमरजीत सिंघ 		सुरिंदर सिंघ निमाणा
एम. ए, एम. एस. सी. 		*एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बीएड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303**
संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

यदि आपको 'गुरमति ज्ञान' नहीं मिला या आप चंदे सम्बंधी कोई जानकारी लेना चाहते हैं या अपना पता बदलवाना चाहते हैं या कोई और जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो मो. नं. 098148-98001 पर संपर्क करें।

विषय सूची

गुरबाणी विचार

मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥
गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥
निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥
गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥
गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥
नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥१३॥ *(पन्ना ११०९)*

बारह माहा तुखारी की इस पावन पउड़ी में पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी महाराज मंघर (मार्गशीर्ष) मास की ऋतु एवं वातावरण के प्रसंग में जीव-स्त्री को अपने मनुष्य-जीवन अथवा जन्म को इस मास रूपी विशेष चरण प्रभु-नाम-सुमिरन एवं चिंतन में सफल तथा अर्थपूर्ण करने का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि मंघर मास उस जीव-स्त्री के लिए पूर्णत: अनुकूल है जो अपने हृदय में परमात्मा के गुणों अथवा रूहानी और नैतिक गुणों का आत्मसात करती हुई इन्हें अपने जीवन-यापन का अभिन्न अंग बना लेती है। ऐसी सौभाग्यशाली जीव-स्त्री सदैव गुणों को ग्रहण करती रहने के कारण गुणवंती कहलवाती है। वह गुणों को इसलिए अपनाती है कि ऐसा करने से मेरा मालिक परमात्मा प्रसन्न होता है जो कि सदैव कायम रहने वाला है।

गुरु पातशाह परमात्मा के सदैव स्थिर रहने के गुण के साथ-साथ उसे 'चतुरु सुजाणु' वर्णन करते हुए संकेत देते हैं कि गुणवंती जीव-स्त्री कभी निज बुद्धिमता अथवा व्यक्तिगत मति को रूहानी विकास के मार्ग की बाधा नहीं बनने देती। वह इसके साथ चलायमान अथवा अस्थिर संसार की अस्थिरता भी भली-भांति महसूस करती है। आसा की वार में पावन कथन है :

किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ *(पन्ना ४६८)*

गुणवंती जीव-स्त्री प्रभु के साथ परिचित हो जाती है और अपना ध्यान प्रभु-हुक्म को समझने-मानने की तरफ ही लगाये रखती है। प्रभु की कृपा-दृष्टि से ही वह प्रभु-गुणों के वर्णन करते विभिन्न रूपों को श्रवण करती रहती है जिससे प्रभु-नाम में उसका मन लग जाता है और सांसारिक मोह-माया एवं भटकाव का उसका दुख भाग जाता है। गुरु जी फरमान करते हैं कि ऐसी जीव-स्त्री प्रभु को प्रिय हो जाती है और वह अपने हृदय की भक्ति-भावना उसी के लिए सदैव बनाये रखती है अर्थात् जो मनुष्य परमात्मा की स्तुति में लगा रहता है और रूहानी तथा नैतिक गुण ग्रहण करता रहता है उसका मनुष्य-जन्म का उद्देश्य पूर्ण होता है।

धार्मिक स्वतंत्रता के पक्ष में खड़े कर्मकाण्ड विरोधी गुरमति सिद्धांत

धर्म मूलत: अत्यंत आवश्यक कर्त्तव्यों की पूर्ति का नाम है। यह मात्र कर्मकाण्डों का करना कदापि नहीं है। यह बात अलग है कि आज धर्म और कर्मकाण्ड समान अर्थों का प्रभाव देते प्रतीत हो रहे हैं। धर्म के मूल और वास्तविक प्रयोजन व उद्देश्य से अंजान-अज्ञात लोग मुख्य रूप से भ्रम-भ्रांति वश होकर कर्मकाण्डों को निभाते हुए स्वयं द्वारा धर्म का पालन करने का ख्याल करते प्राय: ही दृश्टव्य होते हैं। हमारे भारतवर्ष में प्राचीन काल में जब शासक-प्रशासक धर्म का मूल प्रयोजन समझने वाले थे तो जनसाधारण भी सच्चे धर्म का धारक था, परंतु जब धर्म के क्षेत्र में स्वार्थ ने अपने पांव पसार लिये तो धर्म कुछ चालाक लोगों के हाथों में स्वार्थों की पूर्ति के एक शस्त्र के रूप में अमलो-व्यवहार में लाया जाने लगा। बिना किसी प्रकार के संस्कारों के किया गया निष्पक्ष विश्लेषण हमें इस ऐतिहासिक निष्कर्ष पर ले जाता है कि हमारे देश में पुराण और स्मृति ग्रंथों की रचना के और इनकी स्वीकृति के काल-खंडों में ऐसा अमलो-व्यवहार धर्म के नाम पर होने लगा और वह अब तक भी चलता आ रहा है। यही प्रचलन फिर देश-कौम की स्वतंत्रता को समाप्त कर विदेशी आक्रमणकारियों और विदेशी शासकों की गुलामी करने का एक प्रमुख कारण बना। वास्तव में कर्मकाण्ड निभाते हुए मनुष्य सर्व-शक्तिमान से दूर रहता है और उसमें निष्क्रियशीलता, शिथिलता, आलस व दरिद्र आदि अवगुणों का बोलबाला हो जाता है जिससे फिर स्वाभिमान, देश-प्यार, सच्ची प्रभु-भक्ति-भावना आदि गुण आलोप हो जाते हैं।

ऐसी ही स्थिति थी जब भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिमी खंड पंजाब के एक ग्राम राय भोय की तलवंडी में श्री गुरु नानक देव जी महाराज का आगमन हुआ जिन्होंने मृतक के समान हो चुकी कौम में प्राणों का पुन: संचार किया। उसे भक्ति-शक्ति के विस्मादी संयोग की गुरमति विचारधारा और इस पर आधारित निराली जीवन-युक्ति बख्शिश की। गुरु जी अत्यंत गंभीर प्रकृति के स्वामी थे। प्रभु-भक्ति, देश-प्यार, मानव-प्यार, सद्भावना और सर्वसांझीवालता आदि के मूल धर्म-तत्व आप में बहुत भरपूर थे और आपका व्यक्तित्व अत्यंत मनमोहक था। आप ऊंचे-मध्य वर्ग से संबंधित सरकारी नौकरी प्राप्त सुखों-सुविधाओं वाले जीवन का परित्याग करके लोगों को उनसे छीना गया धर्म उन्हें फिर से प्राप्त कराने के मिशन में संलग्न हो गए और फिर आपने कदापि पीछे मुड़कर नहीं देखा।

अन्य अनेकों व्यक्तिगत और सामाजिक, सभ्याचारक अवगुणों को निकालने के साथ-साथ गुरु जी का सर्वप्रथम ध्यान धर्म को कर्मकाण्डों से मुक्त कराने की ओर था। इसी प्रसंग में गुरु जी के युवा-काल के प्रथम चरण में एक घटना घटित हुई। चली आ रही परंपरा के अनुसार आपको जनेऊ धारण कराने हेतु पिता महिता कालू जी ने कुल के पुरोहित पंडित हरदयाल के साथ परामर्श करके दिन निश्चित किया। रिश्तेदारों, मित्रों और पड़ोसियों को इस अवसर पर आमंत्रित किया गया। खाद्य पदार्थों का प्रबंध किया गया। जब प्रारंभिक रीतियों को निभाने के उपरांत पुरोहित पंडित हरदयाल ने गुरु जी के गले में जनेऊ डालने के लिए अपनी बांह आगे बढ़ाई तो गुरु जी ने स्पष्ट व तीखा प्रश्न किया कि यह धागा उनको क्यों पहनाया जा रहा था! पंडित हरदयाल ने अपनी व्याख्या देने का प्रयास करते हुए गुरु जी को प्रेरित करने का हरेक संभव प्रयत्न किया

कि यही धागा है जिसको पहनकर आप धर्म की ऊंची कुल के साथ अपना सम्बंध स्थापित कर सकते हैं; इसी के साथ आपकी समाज में प्रतिष्ठा बन सकती है और आप सम्मान के पात्र बन सकते हैं। जनेऊ को पहने बिना तो इंसान शूद्र के समान ही रहता है और इससे भी अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसके बिना कोई मुक्ति का अधिकारी नहीं हो सकता। इसे पहनने से आपको स्वाभाविक ही लोक-परलोक के सभी सुख मिल सकते हैं।

अपनी सशक्त गुरमति विचारधारा के अनुरूप गुरु जी ने कहा कि हे पंडित! यदि किसी मनुष्य के अपने कर्म नेक नहीं हैं, वह धर्मी नहीं है। यदि वह अपने जिम्मे लगते कर्त्तव्यों को पूरा नहीं करता तो भला वह प्रतिष्ठा को, सम्मान को कैसे प्राप्त कर सकता है? क्या कोई परमात्मा को धोखा दे सकता है? उस सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान से क्या कोई कुछ छुपा सकता है? मनुष्य-मात्र को लोक-परलोक में सम्मान केवल उसके अपने व्यक्तिगत अच्छे या बुरे कर्मों के अनुसार ही मिल सकता है। गुरु जी ने इस ऐतिहासिक प्रसंग को अपनी पावन बाणी में स्वयं भी लिखा है। आसा की वार में अंकित अपने पावन शबदों में गुरु जी ने पंडित हरदयाल से हुई वार्तालाप का संकेत मात्र उल्लेख करते हुए दर्शाया है कि धार्मिक चिन्ह यदि दिखलावा मात्र बन जाएं तो ये लाभ का नहीं बल्कि नुकसान का कारण बनते हैं। पावन वचन अंकित है कि हे पंडित! यदि तेरे पास दया की कपास, संतोष का सूत्र, जत की गांठ और सत्य के ऐंठन वाला जनेऊ है, जो न कभी टूटेगा, न मैला ही होगा और जो मृत शरीर का संस्कार होने के समय भी अग्नि में नहीं जल पायेगा तो मैं वह आपके हाथों से पहनने को तैयार हूं। ऐसे सत्य ज्ञान एवं सत्य आचरण-उन्मुख वचनों का सामना करने की क्षमता किसमें थी? यह गुरु जी के गुरमति सिद्धांतों की उस समय के समाज में एक गर्वयोग्य विजय थी। इस घटना से आपने समाज को उसके मूल रूहानी प्रयोजन, नैतिक कर्त्तव्यों और मानवीय मूल्यों से अवगत कराया और चेताया। यह घटना गुरु जी के अद्वितीय जीवन के प्रथम चरण की ऐतिहासिक एवं विशेष घटना है। भले ही इस घटना के उपरांत गुरु जी द्वारा सत्य-प्रचार-यात्राओं को प्रारंभ करने के बीच का काल परिवारिक कर्त्तव्यों और नौकरी की जिम्मेवारियों को भी निभाने का समय है परंतु इस घटना का प्रभाव गुरु जी के सदैव अंग-संग ही रहा।

गुरु नानक पातशाह द्वारा की अथाह कमाई रंग लाई। आपने न सिर्फ आजीवन लोगों को सत्य-धर्म ही चेताया बल्कि नाशवान मनुष्य शरीर की समय के साथ बंधी अन्य विवशताओं के संदर्भ को सम्मुख रखते हुए आपने अपने सर्वाधिक योग्य सिख भाई लहणा जी को श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में स्थापित करके गुरमति चेतना लहर की निरंतरता कायम रखी। कुल दस गुरु साहिबान ने गुरमति लहर को अपने-अपने समय में जो विशेष योगदान देकर प्रवाहित रखा वह सुनहरी अक्षरों में लिखित गुरु-इतिहास है, जिसका एक-एक पन्ना पलटते ही अनेकों विस्मादी कारनामे पाठकों के सम्मुख खुलते हैं जिन कारनामों को पढ़-सुन कर समस्त संसार विस्माद और हैरानी के आलम में पहुंच जाता है और 'धन्य गुरु! धन्य गुरु!' उच्चारण करता है। समस्त संसार दस गुरु साहिबान का बहुत ऋणी है। इस हमारे भूखंड का तो एक-एक कण गुरु साहिबान का देनदार है।

दस गुरु साहिबान में नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज ने जो कुछ कर दिखाया वह अद्वितीय है। परंतु हम यहां उनका मात्र एक सुकर्म ही उल्लेख अधीन ला रहे हैं और वह वक्त के पीड़ित धर्म के धारकों की गुहार पर उनकी बांह पकड़ना, उन्हें धैर्य बंधाना, बांह पकड़ी की लज्जा रखते हुए उन्हें कह देना कि जाओ अपने सूबेदार काश्मीर को कह दो कि वह हम पर जुल्मो-जब्र का दौर बंद करके हमारे श्री गुरु तेग बहादर जी को धर्म-परिवर्तन

कराये, हम सभी स्वतः इस्लाम धारण कर लेंगे। यह स्थापित को एक बड़ी ललकार थी। समय के जालिम प्रबंध ने सोचा कि शायद वे गुरु जी को विचलित कर सकने में सक्षम हो जाएंगे, इसके लिए उन्होंने लालच, डरावा, मान-प्रतिष्ठा देना आदि अनेक हथकण्डे अपना कर देख लिये, परंतु गुरु जी ने अपना शीश देकर जुल्मो-अत्याचार पर विराम लगा दिया और समस्त भारतीय कौम अथवा जनसाधारण को आत्म-सम्मान के साथ जीना और उसूलों की खातिर मरना दर्शा कर उनको आत्म-बल बख्शिश किया। गुरु जी ने यह अद्वितीय बलिदान जन-साधारण से छीनी जा रही धार्मिक स्वतंत्रता को पुनः स्थापित करने हेतु दिया। इस अपूर्व शहादत का समस्त संसार के पास कोई अन्य उदाहरण नहीं है। निज धर्म की रक्षा खातिर कुर्बान होने का भी बहुत बड़ा महत्व है। दूसरे धर्म के लिए कुर्बान होने का उदाहरण विश्व धर्मों के इतिहास में प्रथम बार श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज ने ही प्रस्तुत किया। इस शहादत के कारण हकूमत की जबरन धर्म-परिवर्तन की नीति को एक जबरदस्त रोक लग गई। लोग भय और विवशता की मनोस्थिति से बहुत सीमा तक बाहर निकले और गुरमति सिख धर्म के धर्मी योद्धाओं, शूरवीरों की सूची में अपना नाम दर्ज कराने के लिए जान हथेली पर लेकर निकले।

दशमेश पिता ने खालसा पंथ सजाकर निज-धर्म, पर-धर्म और मानव-धर्म सुरक्षित रखने का स्थायी प्रबंध कर दिया और जुल्म व अन्याय पर आधारित तत्कालीन राजनैतिक प्रबंध की नीवों को हिला दिया। श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज की अपूर्व कुर्बानी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने धर्म हेतु किया साका कथन करते हुए पिता गुरु को 'तिलक जंञू राखा प्रभु ता का' फरमान किया है।

कुछ विद्वान लेखक यह कथन करते सुनते दीखते हैं कि गुरु नानक साहिब ने तो जंञू (जनेऊ) पहनने से इंकार कर दिया परंतु श्री गुरु तेग बहादर जी ने उसी तिलक जंञू की रक्षा की खातिर अपना शीश दे दिया! यह बहुत ही विलक्षण प्रकार की बात है। लेकिन ये दोनों बातें गुरु-घर के ऊंचे व निर्मल उसूलों अथवा गुरमति सिद्धांतों के पूर्णतः अनुरूप हैं। इनमें कोई वास्तविक आत्म-विरोध बिलकुल नहीं। गुरु नानक साहिब ने जनेऊ पहनने से इसलिए इंकार किया कि यह मात्र कर्मकाण्ड और दिखावा बन चुका था और तत्कालीन धर्मधारकों के जीवन-यापन और तर्जे-जिंदगी से इस का रंचक मात्र भी संबंध न रह गया था और गुरु नानक साहिब चाहते थे कि लोगों का सत्यवादी आचरण हो और वे धर्म के रूहानी तथा नैतिक गुणों के संग्रह रूप जाबते को अपनाएं, धर्म के नाम पर दंभ-पाखंड का प्रचलन छोड़ दें। श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज ने तिलक जनेऊ की रक्षा इसलिए की कि समय का अत्याचारी शासक बादशाह औरंगजेब हिंदोस्तान को दार-उल-इस्लाम बनाना चाहता था और वह सबसे अधिक गणना वाले हिंदू धर्म को मिटाकर अपनी इस चाहत को मूर्तिमान करना चाहता था। श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज के पास जब इस धर्म के प्रतिनिधि मंडल ने कशमीर से आकर अपनी करुण-कथा रो-रो कर सुनायी और मात्र नौ वर्ष के बाल गोबिंद राय ने भी पिता गुरु जी को इस धर्म-कार्य को मूर्तिमान करने का आग्रह किया तो गुरु जी ने निज-बलिदान का संकल्प ले लिया। हम सबको विशेष करके भारतवासियों को गुरु जी के लासानी बलिदान को सदैव स्मर्ण रखना चाहिए। हमको इसके साथ-साथ विलक्षण सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक पातशाह का धर्म को कर्मकाण्डों से ऊपर शुद्ध-निर्मल रूप कायम रखने का ख्याल भी करना चाहिए। यह कसौटी यदि सभी धर्मों के धारक अपनी-अपनी जीवन-जाच में शामिल कर सकें तो यह उनकी सर्वसांझे गुरु साहिबान को सबसे अधिक अनुकूल श्रद्धांजलि होगी।

आज के मानव-जीवन में
श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-दर्शन की भूमिका

*-डॉ. जसबीर सिंघ साबर**

आजकल के समय में मानव-जीवन की सोच प्रमुख रूप में विज्ञान की दुनिया में दिन-प्रतिदिन बहुत बढ़ती जा रही है। ऐसी बात स्वाभाविक ही है क्योंकि विज्ञान ने मनुष्य को आश्चर्यजनक सुख देने वाली सुविधाएं प्रदान की हैं। नील गगन की छत के नीचे खुले मैदानों में रहने और कंदमूल खाकर जीवन व्यतीत करने वाले यह मानव आज एयरकंडीशंड कारों में घूमने-फिरने, गगनचुंबी इमारतों में रहने और छत्तीस प्रकार के भोजन खाने के समर्थ हो गया है।

विश्वीकरण की लहर के अन्तर्गत नित्य नई वैज्ञानिक खोजें और पदार्थक सुखों ने विश्व मानव समाज का दृश्य ही बदल डाला है परन्तु इन पदार्थक सुखों की प्राप्ति ने मानव-जीवन को व्यवहारिक स्तर पर एक-दूसरे का दुख-सुख बांटने, साथियों के साथ समय बिताने और पारिवारिक रिश्ते-नाते निभाने वाली इच्छा को समाप्त करके परिवार और रिश्तेदारों से तोड़ कर ऐसा वातावरण पैदा कर दिया है जहां वह अपने ही सुखों की घेराबंदी में कैद होता जा रहा है। निजवाद और निजलाभ इस पदार्थक सुखदायी जीवन का आधार हैं, जिससे मानवीय रिश्ते दिन-प्रतिदिन टूट रहे हैं। विज्ञान की रोज नई खोजों के कारण जहां पर शारीरिक सुखों की सूची लम्बी हो रही है वहां पर मन की शान्ति भंग होने के कारण मानव-जीवन मानसिक तनाव का शिकार होता जा रहा है। मारू हथियारों को बनाने और भंडार करने की होड़, आज विश्व-शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। दूसरे की जर, जोरू और जमीन पर कब्जा जमाने की इच्छा प्रचण्ड हो रही है। आपाधापी, रिश्वतखोरी, लोभ-लालच, बेइंसाफी, धर्म के नाम पर फिरकू दंगे, आतंकवाद, हिंसा और बलात्कार की दिल को कंपाने वाली घटनाओं के साथ-साथ दिन-प्रतिदिन बढ़ रही बेरोजगारी, भुखमरी, गरीबी, अनपढ़ता और जानलेवा बीमारियों के कारण मानव-जीवन, भीतर से खोखला होता जा रहा है। ऐसी विस्फोटक स्थिति के सम्मुख यू. एन. ओ. सहित विश्व की हर संस्था, मानव-जीवन को सुधारने हेतु चिंतातुर है। परमाणु हथियारों को नष्ट करने की संधियां, भाषण और समझौते तो हो रहे हैं पर इस विस्फोटक स्थिति में सुधार होता नज़र नहीं आ रहा है। इसका स्पष्ट कारण इस स्थिति को पैदा करने वालों का, अध्यात्मवादी सुर वाली नैतिक कदरों-कीमतों को सुनने-सुनाने से कतराना है। इसलिए तबाही के किनारे पहुंच चुके इस मानव जीवन को बचाने के लिए एक ऐसे विधि-विधान के अनुसरण की आवश्यकता है जो इसको डूबने से बचाने में समर्थ हो। अगर इसको ठीक प्रसंग में ईमानदारी और दियानतदारी के साथ समझकर अपनाया जाए तो ऐसी परिस्थितियों में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-दर्शन इस कार्य की पूर्ति के लिए गम्भीर और सार्थक भूमिका निभा सकता है।

आजकल की विस्फोटक स्थिति के सम्मुख जहां तक श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-दर्शन का सम्बंध है इसको पढ़कर और सुनकर मानव-सोच हैरान रह जाती है कि श्री गुरु नानक देव जी के समकालीन मानव-जीवन की दशा और दिशा आज की दशा और दिशा से सुखद नहीं थी। उस समय भी *"कूड़ु फिरै परधानु वे लालो"* और

**निदेशक, निदेशालय सिख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स, शि: गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

"सरमु धरमु दुइ छपि खलोए" अथवा *"अंधी रयति गिआन विहूणी"* और *"धनु जोबनु दुइ वैरी होए"* वाली स्थिति बनी हुई थी, जिसके फलस्वरूप हर तरफ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के अंधकार ने हाहाकार मचाई हुई थी। श्री गुरु नानक देव जी के समकालीन समाज में हकूमत की बागडोर विदेशी मूल के हाकिमों के हाथों में थी जिनकी रुचियां ज़ालिमाना थीं और देसी ठाकुरों का स्वभाव निर्दयी और मालिकाना था। पुजारी वर्ग इनकी सरप्रस्ती में कर्मकाण्डों में लिप्त होकर अहंकारग्रस्त बना हुआ था। ये ऐसे वर्ग थे जो आज के परमाणु हथियारों की तरह ही खतरनाक बने हुए थे। इनकी बात न मानने वाले प्राणी का सिर कलम कर दिया जाता था परन्तु श्री गुरु नानक देव जी ने हक, सच और इंसाफ की बात करते समय निरभउ और निरवैर भावना के अधीन न तो समय के इन हाकिमों का डर ही माना और न ही पुजारी वर्ग के फतवों की परवाह की। सुलतानपुर लोधी में आप जी ने मोदीखाने की सेवा करते समय रिश्वतखोर हाकिमों को अनदेखा करते हुए आम लोगों को उनका बनता हुआ अनाज देते समय 'तेरा-तेरा' का बोल उचारा, नमाज पढ़ते समय नवाब को नमाज में ध्यान न देने पर टोका, मलक भागो के पकवानों में लहू बताया, हरिद्वार में पूर्व की ओर पानी न देकर पश्चिम की ओर पानी दिया, कुरुक्षेत्र में सूरज-ग्रहण के अवसर पर अग्नि को जलाया, जगन्नाथपुरी के मंदिर में परम्परागत ढंग से आरती का उच्चारण न करते हुए गुरमति आरती (गगन मै थालु) का उच्चारण किया और जनेऊ पहनने से इंकार किया। ये कुछ ऐसी घटनाएं हैं जो इस तथ्य को पुष्ट करती हैं।

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-दर्शन की खूबसूरती और विशेषता इस तथ्य में बनती है कि आप जी ने अपने समकालीन मानव-समाज के जीवन में जुड़ी हर उस परम्परा और विधि-विधान को नकारा जो मानव-जीवन का कल्याण करने में असमर्थ बन चुकी थी और उसके बदल में ऐसा विधि-विधान मानव-समाज को दिया जो मानव-जीवन का कल्याण करने में सार्थक और समर्थ था। दरअसल सुजान पुरुष सदा ही भूतकाल से प्रेरणा लेकर वर्तमान की जरूरतों को सन्मुख रखते हुए भविष्य की योजनाएं बनाया करते हैं। यही कार्य श्री गुरु नानक देव जी ने किया। श्री गुरु नानक देव जी ने समकालीन मानव-समाज के जीवन के भूतकाल को देखा, वर्तमान को समझा, पश्चात् उसके भविष्य को सुधारने के लिए ऐसे नये सिद्धांतों की सृजना की और विचार दिये जो सदीव काल मानव-जीवन को सुधारने के साथ-साथ समय की धारा के साथ चलते हुए उसकी कसौटी पर न केवल पूरा ही उतरते हैं बल्कि उन पर अमल करने में मानव को कोई कठिनाई महसूस नहीं होती।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा बख्शिश किये जीवन-दर्शन के इस पैंतड़े को देखकर हैरानी होती है कि आप जी ने बाणी-संचार के माध्यम से जिस ढंग और दिलेरी से मानव-समाज में फैले हुए गुमराहकुन व्यर्थ कर्मकाण्डी सिस्टम को नकारा और उसके बदल में ऐसे सिस्टम को उभारा जो मानव-हितकारी और कल्याणकारी था, वह जुगत कमाल की है। उनकी बाणी में हर बात तर्क दृष्टि से कही गई है। इस तर्क-समय भी आप जी हर बात प्रेम-भावना वाली दृष्टि से कहते हुए दूसरे के साथ संवाद रचाते हैं। संवाद करते समय भी आपका रुख तानाशाही वाला नहीं बल्कि मीठे सुर वाला, नम्र भाव वाला और प्रेम के मजीठ रंग में रंगा हुआ होता था। आप जी पहले दूसरे की बात सुनते थे, समझते थे फिर अपनी बात कहते थे। यह एक ऐसा विधान है जिसके अन्तर्गत मानव-जीवन की हरेक समस्या को समझा और सुलझाया जा सकता है। इसीलिए आप जी ने समूची मानवता को संदेश दिया :

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ *(पन्ना ६६१)*

हम देखते हैं कि आज का मानव विश्व स्तर पर अपनी बात कहने का केवल इच्छुक ही नहीं बल्कि उसको हर हाल में मनवाने की कोशिश करता है। बेशक उसकी बात जायज हो या नाजायज, वह दूसरे की बात सुनने को तैयार ही नहीं और न ही अपनी बात मनवाने के लिए दूसरों के जज़बातों और हालात की परवाह ही करता है बल्कि अनदेखी ही करता है, परन्तु श्री गुरु नानक देव जी को यह बात मंजूर नहीं थी। इसलिए उनके जीवन-दर्शन की कार्यशैली तानाशाह जैसी नहीं बल्कि संवाद पर आधारित है। इसलिए मानव-जीवन में एकसुरता, सहनशीलता और अमन-चैन के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने विश्व-मानव को संदेश दिया कि सबसे पहले दूसरों की बात सुनो और उनके जज़बातों को ठेस पहुंचाये बिना अपनी बात कहो। श्री गुरु नानक देव जी आज के धार्मिक, सामाजिक और राजसी नेताओं की तरह मानव को अपनी बातों को मनवाने के लिए धरने लगाने, मुजाहरा करने, झाड़-फूंक करने और तोड़-फोड़ करने के लिए नहीं उकसाते बल्कि प्रेम-संगीत की सुरलहरियों के माध्यम से *"सभ महि जोति जोति है सोइ"* कहते हुए एक-दूसरे को एक साथ जोड़ते हैं। दरअसल यह जीवन-युक्ति एक ऐसी मानसिक अवस्था पैदा करती है जो विभिन्न सभ्याचारों के मनुष्यों में आपसी सांझ पैदा करते हुए उनको सांझी किस्मत व सांझे विश्वास का भाईवाल बनाती है। जैसे आज फिरकू दंगे व नस्ली भेदभाव मानव-समाज को तार-तार कर रहे हैं, श्री गुरु नानक देव जी ने इस स्थिति को अनुभव करते हुए ही सुलतानपुर मे मानव-कल्याण के लिए जो नारा *"न को हिंदू न मुसलमान"* दिया था, उसको सही दिशा में अपनाना आज के मानव की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है। ऐसा ही संदेश श्री गुरु नानक देव जी ने मक्के की यात्रा करते समय वहां के हाजियों को दिया था:

पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई ?
बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।
(भाई गुरदास जी, वार १:३३)

आज भी शुभ कर्मों को अमल में लाने की आवश्यकता है। मानव-संसार में एकसुरता, सहनशीलता और अमन-शांति का पैगाम देने के लिए श्री गुरु नानक देव जी की ओर से की गई चार उदासियां बहुत प्रसिद्ध हैं। यह उदासियां भारत, मक्का, मदीना, बगदाद, रूस, तिब्बत, श्रीलंका आदि के उन प्रसिद्ध स्थानों से संबंधित हैं जो हिन्दू धर्म, इस्लाम, सूफियों और योगियों के गढ़ समझे जाते थे। यहां विशेषता इस बात में है कि श्री गुरु नानक देव जी अपनी विचारधारा के संचार के लिए स्वयं इन स्थानों पर चल कर गये थे और इन विभिन्न धर्मों के प्रमुखों के साथ ज्ञान-चर्चा करते समय संवाद-शैली के अन्तर्गत सबसे पहले उनकी बात सुनी और उसके पश्चात् मानव-भलाई के लिए अपनी बात उनको सुनाई। आप जी ने स्पष्ट किया कि धर्म एक ही हुआ करता है, जिसकी आधारशिला सत्य पर आधारित होती है, फिरकाप्रस्ती, नफरत और मानव को बांटने वाले तत्व किसी भी धर्म का हिस्सा नहीं हुआ करते, इसलिए श्री गुरु नानक देव जी ने मानव को बांटने वाले ऐसे तत्वों को धर्म-क्षेत्र से खारिज करते हुए कहा कि सच्चा धर्म वह होता है जो मानवता की सेवा और भलाई की चाहना करने वाला हो :

एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ (पन्ना ११८८)

आज के मानव को श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-दर्शन के नीचे लिखे प्रमुख मानव-हितु सुनहरी सिद्धांत अपने जीवन को ऊंचा, शुद्ध और अच्छा बनाने के लिए मध्यकालीन समाज के मानव

से भी अधिक आवश्यक हैं, जो संक्षेप में इस प्रकार हैं :

१. सांझीवालता : साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥ (पन्ना ७६६)

२. भ्रष्टाचार : हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ (पन्ना १४१)

वढी लै कै हकु गवाए ॥ (पन्ना ९५१)

३. अच्छे-बुरे कार्य : ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ (पन्ना ९१८)

४. किरत-कमाई : घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

५. स्वाभिमान/आत्म-सम्मान : जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

६. सच-आचार : सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥ (पन्ना ६२)

७. औरत का सम्मान : सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ (पन्ना ४७३)

८. सम-दृष्टि : एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥ (पन्ना ७३०)

—फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥
सभना जीआ इका छाउ ॥ (पन्ना ८३)

९. कथनी व करनी : कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥ (पन्ना ५६)

१०. कर्मफल : फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ (पन्ना ४६८)

११. कर्म-काण्ड : पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ (पन्ना ६३५)

१२. कलह-क्लेश : कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ (पन्ना १४२)

१३. गृहस्थ : सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ (पन्ना ६६१)

१४. चोरी : चोर की हामा भरे न कोइ ॥
चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥ (पन्ना ६६२)

१५. जात-पात : जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥ (पन्ना १३३०)

१६. धन-दौलत : इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥ (पन्ना १२८२)

१७. धन-यौवन : धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥ (पन्ना ४१७)

१८. नशे का विरोध : इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥ (पन्ना ५५३)

१९. नम्रता : मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ (पन्ना ४७०)

२०. पर-स्त्री से दूरी : पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइ ॥
गलि जेवरी धंधै लपटाइ ॥ (पन्ना २२६)

२१. परोपकारी : विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ (पन्ना ३५६)

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-दर्शन के उपरोक्त ये ऐसे २१ अनमोल रत्न हैं, जिनको ईमानदारी से मानने और अपनाने से आज के मानव-जीवन में पैदा हुई निजवाद, निजलाभ और संकीर्ण रुचियों वाली सोच को मिटाया जा सकता है। जिस स्तर पर आज का मानव-जीवन पहुंचा हुआ है वह केवल उसके शारीरिक सुखों तक ही सीमित है। केवल पदार्थक सुख मानव-जीवन का आत्मिक विकास नहीं कर सकते। आत्मिक विकास के लिए अध्यात्मवादी कीमतों को अपनाना समय की आवश्यकता है। ये अध्यात्मवादी कदरें-कीमतें वहां से ही मिल सकती हैं जहां सत्य का बोलबाला हो। श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-दर्शन आज के मानव की इस जरूरत को पूरा करने में पूरी तरह समर्थ है। ऐसी जीवन-शैली ही मानव-संसार में पैदा हो चुकी अपने-अपने देशों की खुशहाली वाली संकीर्ण सोच को बदल कर मानव-चेतना में सहनशीलता, एकसुरता और अमन-शांति की भावना पैदा करने का सुचारू कार्य कर सकती है। ❁

मानवता के पथ-प्रदर्शक श्री गुरु नानक देव जी एवं उनका मिशन

*-स. गुरबख्श सिंघ 'प्यासा'**

जब भी इतिहास के किसी काले दौर के पन्ने फड़फड़ा कर खुल जाते हैं तो उसके समानान्तर उस अंधकार को पछाड़ने वाला प्रकाश-पुंज दैवी आभा को बिखेरता दृष्टिगोचर होता है। यथार्थ में अंधेरे ही प्रकाश को प्रकट करने का नमित बनते हैं।

इसी प्रकार १५वीं शताब्दी के उस अंधकारमय युग में, जब चारों ओर फैले अन्याय एवं अत्याचार से मानवता त्राहि-त्राहि कर रही थी। तब १४६९ ई में श्री गुरु नानक देव जी ने, पिता श्री कल्याण राय (महिता कालू) जी के घर में, माता तृप्ता जी की पावन कोख से, राय भोय की तलवंडी नामक नगर में जन्म लिया जो अब 'ननकाणा साहिब' के नाम से प्रसिद्ध है और पाकिस्तान में स्थित है।

उस अंधे युग का (शब्द-चित्र) उल्लेख श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी पद्यमय पावन बाणी (जो शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित है) में विस्तार से किया है अर्थात् राजे हिंसक दरिन्दे बन गये थे और उनके अहलकार कुत्तों की तरह व्यवहार कर रहे थे एवं न्यायकर्त्ता रिश्वत के आधार पर न्याय करते थे। चारों ओर अनाचार का बोलबाला था, धर्म पाखंड का पर्याय बन कर रह गये थे और कथित धर्माधिकारी जनसाधारण को वहमों एवं भ्रमों के जाल में उलझा कर, जोकों की तरह उनका खून चूस रहे थे। समाज को दिशा देने में समर्थ योगी पलायन करके जंगलों एवं पर्वतों की गुफाओं में जा छुपे थे। जहां एक ओर बहुदेववाद ने अलगाव पैदा किया था दूसरी ओर वर्ण-व्यवस्था को जन्म से जोड़ देने के कारण समाजिक ढांचा चरमरा कर रह गया था। कथित अछूत लोग नारकीय जीवन भोग रहे थे। और तो और (जगत-जननी) नारी-जाति की हालत अत्यन्त शोचनीय थी। वह मात्र एक निकृष्ट एवं घृणित जीव थी, जो किसी एक की दृष्टि में जहर की पुड़िया थी तो दूसरे की दृष्टि में 'नरक का द्वार' अथवा 'पांव की जूती' समझी जाती थी। प्राय: सब धर्मों को मानने वालों ने व्यवहारिक रूप में तिरस्कारित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

जहां धर्म जोड़ने के स्थान पर तोड़ने में संलग्न है और उनका दर्शन व्यवहार की वस्तु न होकर मात्र कलाबाजियों का पुंज बन कर रह गया हो अथवा बौद्धिक विलास का साधन, वहां करुणा, प्रेम एवं सदाचार का क्या काम? सारांश यह कि समाज के तीनों अंग (सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक) जर्जर हो चुके थे।

ऐसे शोचनीय हालात थे श्री गुरु नानक देव जी के सम्मुख। एक मृतप्राय समाज के अंदर चेतना का पुन: संचार करके एक स्वस्थ एवं आदर्श समाज की स्थापना की, जिसकी इकाई मानव, सही अर्थों में मानवता की पहचान हो, उसके क्रिया-कलापों में मानवता छलकती हो, दया एवं करुणा का ईश्वरीय गुण हिलोरे लेता हो; बंधुत्व एवं बराबरी का भाव

**२२, प्रभु पार्क सोसायटी, नजदीक- आसोपालव सोसायटी, पुरानी छानी रोड, वडोदरा-३९०००२ (गुजरात)।*

जिसका जीवन-दर्शन हो, जो निर्भीकता के गुण का धारणी हो, जिससे उसके सत्याचारी होने के लक्ष्य की पूर्ति हो सके, जो सबको अपना मित्र बनाने में विश्वास रखता हो और दूसरों की निःस्वार्थ सेवा ही अपना परम धर्म मानता हो।

इसके लिए कठिन साधना ही नहीं, शृंखलाबद्ध प्रयास और एक लम्बी अवधि दरकार थी। इतिहास साक्षी है कि इस मिशन को संपूर्णता प्रदान करने के लिए, जहां दो शताब्दियों से अधिक का समय लगा वहां श्री गुरु नानक देव जी की दैवी ज्योति को नौ अन्य जामों अर्थात् शरीरों द्वारा साधना करनी पड़ी, जिसके फलस्वरूप एक परिपूर्ण मानव अर्थात् जो संत भी था और सिपाही भी, के रूप में साकार हुआ, जो मात्र, सृष्टिकर्त्ता के प्रति उत्तरदायी था। उसकी रजा को खिले माथे मानना, उसका परम धर्म था और सत्य एवं न्याय के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देना उसका कर्त्तव्य था। उसको परीक्षाओं के हर कठिन दौर में खरे उतरने पर समय ने सराहा और उसका अभिनंदन किया।

श्री गुरु नानक देव जी ने तत्कालीन समाज की अधोगति के मूल कारण को पहचान कर मानव मानव को एक डोर में पिरोने के लिए एकेश्वरवाद को व्यवहारिक रूप देने को, सूत्र के रूप में चुना, जिससे एक पिता की संतान होने के धरातल पर बंधुत्व एवं बराबरी का भाव उपजाया जा सके, जहां मानव-निर्मित, जात-पात, ऊंच-नीच अथवा लिंग-भेद आड़े न आये, जहां घृणा के लिए कोई स्थान न हो, जहां ईश्वर की सेवा उसके बंदों की सेवा हो, एक-दूसरे का सुख-दुख सांझा हो, सारी सृष्टि के प्रति एक सम्मानपूर्ण दृष्टि हो कि अंतिम आकांक्षा के फलीभूत होने पर सृष्टिकर्त्ता सृष्टि के कण-कण में विद्यमान प्रतीत होने लगे।

ऐसा युगांतरकारी परिवर्तन क्या मात्र लीपा-पोती द्वारा संभव था? क्या किसी खोखली नींव पर कोई पायदार निर्माण संभव है?

उन्होंने समाज की इस अधोगति के मूल कारणों को पहचान कर एक कुशल शल्यचिकित्सक की भांति, गल-सड़ चुकी मान्यताओं को झटकने एवं अपने अर्थ खो चुके बिन्दुओं को नये अर्थ-बोधों से उपचार करने का क्रांतिकारी दृष्टिकोण अपनाया।

सर्वप्रथम उन्होंने अपने विचारों को लोगों तक पहुंचाने के लिए लोक-बोली एवं लोक-भाषा को माध्यम बनाया और सदियों से चले आ रहे इस मिथक को तोड़ा कि धर्म एवं धर्म-दर्शन की व्याख्या मात्र संस्कृत भाषा में ही संभव है। मूलाधार के रूप में प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान-पक्ष को सम्मान दिया वहां उसके कर्मकाण्ड को भी नकारा।

इस नव-दृष्टि का शुभारंभ तब ही हो गया था जब उन्होंने थोथे कर्मकाण्ड के रूप में जनेऊ धारण करने से इंकार कर दिया था।

इसी प्रकार सृष्टि-कर्त्ता के किसी विशेष दिशा एवं विशेष स्थान पर न होकर सर्वत्र होने को दृढ़ करवाने हेतु इस्लाम के केन्द्र 'मक्का' को चुना। यह कोई इकलौता उदाहरण नहीं है जहां उन्होंने निर्भीकतापूर्वक अपनी बात कही हो उनका सारा जीवन एवं उनके द्वारा उचरित बाणी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। उन्होंने एक मात्र सृष्टि-कर्त्ता और एक मात्र धर्म अर्थात् सत्य-धर्म के दैवी संदेश को दृढ़ करवाने के लिए देश-देशांतर का भ्रमण किया। उनकी इन यात्राओं (जिन्हें उदासियां कहा जाता है) का घेरा भारत ही नहीं, सुदूर श्रीलंका, अफगानिस्तान, बलोचिस्तान, ईरान, इराक और सऊदी अरब (मक्का-मदीना) तक फैला हुआ है। ये यात्राएं

चार चरणों में २० से भी अधिक वर्षों में पूर्ण हुईं। अफरा-तफरी के उस युग में इन यात्राओं की कठिनाइयों की कल्पना कर पाना कठिन है। इनमें सभी भारतीय प्रमुख नगर एवं मुख्य धर्मों के केन्द्र एवं तीर्थ-स्थल थे, जहां उन्होंने ईश्वर-भक्ति एवं प्रेम के सहज मार्ग को व्याख्यात किया और प्रचलित थोथे कर्मकाण्डों पर निर्भीकतापूर्वक वार किये एवं भ्रमों का निराकरण किया।

उनकी इन सीखों (उपदेशों) को ग्रहण करके अनुसरण करने वालों का **'सिख'** अर्थात् **'शिष्य'** का नाम पड़ गया। वे जहां-जहां भी गये, ऐसे सिखों की संगतें स्थापित होती गयीं। इस पर अनेकता में एकता पनपने लगी। उन्हें पालन करने के लिए तीन सरल से सूत्र दिये गये—(१) किरत करो (सच एवं हक की कमाई) (२) नाम जपो (प्रभु का सुमिरन) (३) वंड छको (मिल-बांट कर खाना)।

सृष्टिकर्त्ता का विशेष नाम अथवा धाम नहीं। वह सर्वव्यापक है और उसका किसी भी प्रचलित नाम से सुमिरन किया जा सकता है क्योंकि उसके लिए प्रयुक्त नाम उसके किसी न किसी गुण के लखायक हैं। वह मात्र सत्य-स्वरूप है, क्योंकि उसका कोई आकार नहीं, इसलिए उसकी कोई मूर्ति नहीं बन सकती। वह सबका रचयिता है, निर्भय है निरवैर है, काल से परे है, अजोनी है और स्वयंभू है।

इस प्रकार ऐसे **'एक'** की अटूट डोर से बांध कर बंधुत्व एवं बराबरी की भावना का बीजारोपण किया गया।

उन्होंने किसी कल्पित स्वर्ग अर्थात् बहिश्त का कोई ऐसा प्रलोभन नहीं दिया जहां कामधेनु, पारिजात अथवा अन्य ऐश-इशरत के सामान मुहैया होंगे। चमत्कार, रिद्धियां-सिद्धियां, वरदान आदि जो प्राय: महापुरुषों के दैवी पुरुष होने के प्रमाण माने जाते रहे हैं, को ईश्वरीय विधान में अनावश्यक दखल माना और सत्य का अनुसरण करने वालों को जीवन में आने वाले हरेख सुख-दुख को ईश्वर की इच्छा/रजा मान कर खिले माथे सहन करने का उपदेश दिया, जिससे प्रभु में अभेद होने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

वैसे प्रत्येक मुख्य धर्म सत्य पर आधारित है, परन्तु व्यवहारिक रूप में खंडित सत्य ही प्रधान था। प्रत्येक समुदाय-विशेष अपने ही अनुयाइयों का भला चाहता था। यहां तक कि उनका ईश्वर-विशेष मात्र उनका ही शुभेच्छु था। दूसरे के ईश्वर से महान एवं विलक्षण। इस भ्रमपूर्ण विचारधारा ने घृणा के ऐसे विष के बीज बोये कि भिन्न-भिन्न धर्मों/समुदाओं के अनुयायी एक दूसरे के खून के प्यासे बन गये और यह लावा अक्सर फूटता रहता था।

इसके उपचार हेतु एकेश्वरवाद के यथार्थक स्वरूप को व्यवहारिक बनाना अति आवश्यक था।

वहमों, भ्रमों एवं पाखंडों के निरावरण करने का उनका ढंग भी न्यारा था। जनसाधारण तक अपनी बात पहुंचाने के लिए वे तीर्थ-स्थलों का चुनाव करते, जहां विशेष त्यौहारों पर लोग इकट्ठे होते थे, जिनमें जनसाधारण के साथ-साथ धार्मिक मुखिये भी होते थे। वे अनजान बनकर प्रचलित रीतियों के विपरीत आचरण शुरू कर देते और जब लोग उनके कारज-व्यवहार पर हंसते तो सहज रूप में सरल ढंग से अपनी बात कहते और थोथे कर्मकाण्ड की व्यर्थता दर्शा कर सत्य से अवगत करवाते।

ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जैसे कि वैसाखी के पर्व पर हरिद्वार में लोगों को सूर्य की ओर मुख कर अपने पूर्वजों को जल चढ़ाने पर, आपका विपरीत दिशा में जल उलीचना और

पूछने पर अपने सूखते खेतों में जल देने की बात से हास्य का पात्र बनना। फिर तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात कहना कि यदि मेरा उलीचा पानी इसी धरती पर मेरे खेतों की प्यास नहीं बुझा सकता तो आपका दिया पानी सुदूर ग्रहों तक कैसे पहुंच सकता है। इसी प्रकार कुरुक्षेत्र में सूर्य-ग्रहण पर लोगों के पुण्य-दान करने की प्रथा की व्यर्थता दर्शाना एवं पुरी में ढोंगी साधू की चमत्कारिक शक्तियों का पाज खोलना।

विश्वास एवं अंधविश्वास के अंतर को समझा कर वस्तुस्थिति से अवगत करवा कर चेतना एवं विवेक बुद्धि के उपयोग करने की भावना को जागृत करना उनका ध्येय था जिससे खरे-खोटे की पहचान हो सके।

अब तक यह विचारधारा चली आ रही थी कि मनुष्य की देह ही सब पापों की जड़ है, परन्तु श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्य की देह को 'सृष्टि-कर्त्ता का मंदिर' कहा। अपने शुभ-कर्मों द्वारा ही हम ईश्वर के कृपा-पात्र बन सकते हैं। उसे व्यर्थ कर्मकाण्डों अथवा आडम्बरों से प्रभावित नहीं किया जा सकता। धर्मी दिखने के लिए परपंचों का सहारा लिया जाता है, वरना धर्मी होने के लिए सत्याचारी होना आवश्यक है। इसलिए उन्होंने शुभ-अमलों (कर्मों) पर बल दिया। उन्होंने हिन्दुओं को सच्चा हिंदू और मुसलमानों को सच्चा मुसलमान बनने का उपदेश दिया। पराये हक को मुर्दा खाने के तुल्य बताया, जो हिन्दू के लिये गाय और मुसलमान के लिए सूअर खाने के बराबर है।

ऐमनाबाद नगर में धनी मलिक भागो पर यह तथ्य उजागर किया कि तेरे अनुचित ढंग की कमाई से बने भोज में गरीबों का रक्त भरा हुआ है और भाई लालो की हक-कमाई से बनी मोटे अनाज की रोटी दूध-युक्त है।

यदि बाबर के अत्याचार देखें तो उसे भी निर्भीकतापूर्वक 'जाबर' कहने से संकोच नहीं किया और उसके अत्याचारों की भरपूर आलोचना की। अपने को कथित अछूतों का संगी बताया। सदियों से तिरस्कृत नारी-जाति को समाज में बराबरी दिलाने के व्यवहारिक प्रयास किये। सब प्रकार के भेदभाव दूर करने के लिए संगत एवं पंगत की प्रथा आरंभ की। संगत में सब मिल-बैठ कर ईश्वर का गुण-गायन करते थे और पंगत में सब मिल-बैठ कर भोजन करते थे, जहां राजा और रंक समान थे। यह भेदभाव-रहित एवं बराबरी पर आधारित समाज की रचना के लिए एक क्रांतिकारी कदम था।

आपने सृष्टिकर्त्ता के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना पर बल दिया। उसकी अनंतता को *"पाताला पाताल लख आगासा आगास"* कह कर प्रकट किया। इस पुरातन मिथक को तोड़ा कि धरती बैल के सींगों पर खड़ी है। मात्र यह एक ही धरती नहीं ऐसी कई धरतियां हैं। एक मछली दरिया की भला कैसे थाह पा सकती है? उनकी दृष्टि में कोई छोटा या बड़ा नहीं है, क्योंकि *"सभ महि जोति जोति है सोइ ॥"* सच्चे मन से प्रभु-सुमिरन करने से मन निर्मल हो जाता है। यदि मन निर्मल होगा, तभी सत्य का आचरण संभव है। मनुष्य के कर्म ही उसे अच्छा अथवा बुरा बनाते हैं। प्रभु रूपी केंद्र से हम जितना दूर होंगे, हमारी भटकन उतनी बढ़ जाएगी।

अपने जीवन-दर्शन एवं ईश्वरप्रदत्त मिशन को जहां उन्होंने अपने जीवन-काल में उदाहरणों द्वारा प्रयुक्त किया वहां उनका विस्तृत वर्णन उन्होंने अपनी पावन बाणी में किया है, जिसे उन्होंने उन्नीस भारतीय रागों में संगीतबद्ध किया है। उन्होंने ९७३ शबदों की रचना की

है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित हैं।

उन्होंने अपनी पावन बाणी को निर्धारित रागों में गायन करने के लिए अपने साथ भाई मरदाना जी, जो एक मुसलमान रबाबी (रबाब का साज बजाने वाला) थे, को अपना संगी बनाया, जो जीवन-पर्यन्त उनके साथ रहे।

आपके दो पुत्र—बाबा श्रीचंद और बाबा लखमी दास थे।

अपने मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने शिष्य भाई लहणा जी को उपयुक्त जान कर, अपनी ज्योति उनमें प्रविष्ट करते हुए दूसरे गुरु के रूप में गुरगद्दी पर पदासीन कर दिया, जिन्हें श्री गुरु अंगद देव जी का नाम दिया गया और स्वयं १५३९ ई में करतारपुर में अखण्ड ज्योति में लीन हो गये।

आपका मिशन, युगों-युगांतरों तक इसी प्रकार सत्य के अनुयाइयों को सत्य का राह दिखाता रहेगा।

उनकी सर्वप्रियता इस पुरातन लोक-उक्ति में पूरी तरह समाई हुई है :

बाबा नानक शाह फकीर।
हिन्दू का गुरु, मुसलमान का पीर।

कविता

नानक शाह फकीर

माता तृप्ता का बेटा और बहन नानकी का वीर।
सूरज चमका ज्ञान का, धुंध अज्ञानता की चीर।
दीन-दुखियों और मसकीन इंसानों की सुन पुकार,
अकाल पुरख ने भेजा, पीरों का पीर बाबा नानक पीर।
सच्चा सौदा करके सच कमाया और दिखाई सच्ची राह,
'तेरा-तेरा' करके तोले, दुकान पे बैठा इक शाही फकीर।
उसे झुक-झुक कर सलाम करते, कई राजा व शहंशाह,
वह बड़ा शहंशाह जिसके, बाला और मरदाना वज़ीर।
दी सति करतार की सदाअ, बख्शी नाम-दान की दात,
तकदीरों के मारे लोगों की, उसने बदल दी तकदीर।
बाबा ने सुनाई धुर की बाणी, पढ़े-सुने हर इक प्राणी,
मुश्किल घड़ी में भी न, बहने दे आंखों से नीर।
कर्मकांडों से मुक्ति दिलाकर, खोला मुक्ति का द्वार,
गुरु नानक ने तोड़ दी, अंधविश्वासों की हर जंजीर।
बहुत बढ़ गए मलिक भागो, कौडे राक्षस, सज्जन ठग,
बदलो अपनी बाणी से फिर, इन सब की ज़मीर।
लोग हैं कम तौलते, झूठ बोलते, जरा भी न डरते,
इस दुनिया की हालत हो गई, बहुत ज्यादा गंभीर।
पढें, सुनें, समझें व मानें, गुरु नानक की बाणी को,
बदल जाएगी हालत अपनी, बदल जाए जग की तस्वीर।

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर', बी-एक्स, ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जालंधर-१४४००४

सिख विचारधारा के विकासात्मक चरण में गुरु नानक साहिब की उदासियों का योगदान

-डॉ. अन्जुमन सरां*

श्री गुरु नानक देव जी की उदासियां (यात्राएं)

भारत में प्रचिलत धर्मों के मुख्य केन्द्रों में जाकर उनको सिखी का उपदेश करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने कई स्थानों की यात्राएं कीं। इन यात्राओं के दौरान वे मानव-जाति को शांति और प्रेम का संदेश प्रचारित करते थे। उन्होंने चार महान यात्राएं की थीं जिनका संक्षिप्त निरूपण इस प्रकार है :-

प्रथम उदासी

श्री गुरु नानक देव जी सर्वप्रथम १४९७ ई से १५०८ ई तक पूर्वी यात्रा में रहे और आसाम तक गये। इस काल में मुख्यत: उन्होंने हिन्दू तीर्थ-स्थानों की यात्रा की। मुख्य तीर्थ-स्थानों में श्री गुरु नानक देव जी ने प्रचार का एक अद्भुत तरीका अपनाया। उदाहरणार्थ, हरिद्वार में गंगा-स्नान करने वाले लोगों को उन्होंने उगते सूर्य को जल अर्पित करते देखा। श्री गुरु नानक देव जी कारण तो जानते थें फिर भी पूछने लगे कि वे लोग क्या कर रहे हैं? लोगों ने उत्तर दिया कि सूर्य-लोक में स्थित अपने पूर्वजों को अंजलि दे रहे हैं। श्री गुरु नानक देव जी तुरंत पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर पानी उस ओर उछालने लगे। इस बार लोगों ने पूछा कि वे क्या कर रहे हैं? तो श्री गुरु नानक देव जी ने उत्तर दिया कि वे पंजाब में स्थित अपने खेतों को पानी दे रहे हैं। उनसे कहा गया कि यह पानी तीन सौ मील दूर उनके खेतों में कैसे पहुंचेगा? गुरु जी ने उत्तर दिया कि यदि यह पानी मेरे खेतों में नहीं पहुंच सकता जो कुछ ही सौ मील हैं, तो भला तुम्हारा पानी यहां से इतनी दूर सूर्य-लोक में कैसे जा सकता है? इस उत्तर ने उन लोगों की आंखें खोल दीं।

दूसरी उदासी

तत्पश्चात् गुरु जी ने श्रीलंका तक जाकर दक्षिण की यात्रा १५१० ई से १५१५ ई तक की। इस उदासी में उनका मुख्य उद्देश्य प्रसिद्ध बौद्ध तथा जैन तीर्थ-स्थानों का भ्रमण करना था। इस यात्रा में उन्होंने बौद्ध-धर्म के अनुयायियों को परम-तत्व के अस्तित्व और उसमें विश्वास की भावना को दृढ़ करवाया। प्रत्येक विवादास्पद प्रश्न का हल उल्लेखनीय ढंग से निकालते। हिन्दू दाह-क्रिया और मुसलमानी दफन-क्रिया के सम्बंध में गुरु जी ने इस प्रकार कहा :

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ *(पन्ना ४६६)*

तीसरी उदासी

१५१६ ई से १५१८ ई तक का समय उनकी तीसरी उदासी का समय है। इस यात्रा के दौरान वे जम्मू-कश्मीर, सिरमौर, सुमेर पर्वत, बद्रीनाथ, तिब्बत, भूटान और नेपाल आदि स्थानों तक गए।

*गांव-धौलपुर, डाक बटाला, जिला गुरदासपुर (पंजाब)

भाई गुरदास जी द्वारा रचित 'वारों' की पहली वार के २८वें से ३१वें पदों में लिखा है कि श्री गुरु नानक देव जी इस यात्रा के दौरान मानसरोवर तक गये थे। वे योगियों और सिद्धों के केन्द्र उत्तर दिशा में गये। उन्होंने गोरख नाथ तथा मच्छेन्द्र नाथ के कई अनुयायियों से वार्तालाप किया। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा—'असत्य का अन्धकार चारों ओर फैला हुआ है। सत्य का चन्द्रमा अदृश्य हो गया है। मैं उसे ढूंढने निकला हूं। पृथ्वी पाप के बोझ से कराह रही है। योगीगण तो पर्वतों में चले गये तथा अपनी देह को राख मलने के अलावा और कुछ नहीं जानते। फिर संसार की रक्षा कौन करेगा? गुरु बिना संसार अज्ञान के सागर में डूब रहा है।' ज्ञात होता है कि श्री गुरु नानक देव जी तिब्बत में मानसरोवर तथा उसके भी आगे तक गये थे।

चौथी उदासी

१५१८ ई से १५२२ ई तक का काल पश्चिम दिशा की उदासी का है, जब श्री गुरु नानक देव जी ने मुस्लिम देशों का भ्रमण किया। इस यात्रा के दौरान भाई मरदाना जी उनके साथ थे। श्री गुरु नानक देव जी ने हाजियों जैसे वस्त्र धारण किये, बगल में एक पोथी तथा दरी, हाथ में एक मोटा डंडा था। मक्का में सोते समय गुरु जी काबे की तरफ पैर कर सो गये जो पवित्र इस्लामी तीर्थ-स्थल है। मुल्ला ने क्रोधित हो इन्हें जगाया और अल्लाह के घर के प्रति अनादर दिखाने के लिए कुवचन कहे। परन्तु गुरु जी ने बड़े आदर के साथ कहा—"मेहरबानी करके मेरे पैर उस दिशा में घुमा दो जहां सर्वव्यापक ईश्वर मौजूद नहीं। इस प्रकार मुल्लां को सत्य-ज्ञान का अनुभव कराया कि ईश्वर तो सर्वव्यापक है।

भाई गुरदास जी ने गुरु जी का बगदाद जाना माना है। उन्होंने लिखा है :

फिरि बाबा गइआ बगदादि नो बाहरि जाइ कीआ असथाना। *(वार १:३५)*

अरब से श्री गुरु नानक देव जी ईराक पहुंचे, कुछ समय बगदाद ठहरे, जो इस्लाम के खलीफा का प्रधान स्थान था। वे शहर के बाहर ठहरे। तुर्की-अरबी-मिश्रित भाषा में एक शिलालेख में श्री गुरु नानक देव जी की बगदाद-यात्रा अंकित है। रेलवे स्टेशन से डेढ़ मील दूर एक कब्रगाह के पास घेरे की दीवार में वह पत्थर लगा हुआ है। प्रथम विश्व-युद्ध के समय जब कुछ भारतीय सैनिक युद्ध के लिए ईराक गये थे और वे बगदाद में रहे थे तो यह शिलालेख उनकी नज़रों में आया और एक सिख अफसर ने जनवरी, १९१८ ई के लॉयल गजेट लाहौर में (पृष्ठ ४) यह शिलालेख छपवाया। शिलालेख स्पष्ट नहीं पढ़ा जाता और विभिन्न लेखकों ने विभिन्न ढंग में इसका अनुवाद किया। भाई वीर सिंघ का अनुवाद इस प्रकार है—"जब मुराद ने महात्मा संत बाबा नानक की इमारत की भग्नावस्था देखी तो उसने अपने हाथों एक नई इमारत खड़ी की ताकि यह ऐतिहासिक रूप से परम्परागत काम आ सके और शिष्य की सेवा कायम रहे। ९१७ या ९२७ हिज़री फूटनोट में कहा गया है कि इसकी भाषा तुर्की तथा अरबी का मिश्रण है।"

इसका ठीक अर्थ चाहे जो भी निकले, इस शिलालेख से कुछ बातें तो स्पष्ट हो ही जाती हैं। इसमें साफ-साफ बाबा नानक फकीर तथा ९२७ हिज़री तिथि का उल्लेख है, जिसे प्राय: सभी स्वीकार करते हैं। ९२७ हिज़री का आरम्भ दिसंबर, १५२० में तथा अन्त नवंबर, १५२१ में हुआ। नवंबर, १५२१ में श्री गुरु

नानक देव जी सैयदपुर पंजाब में थे। उसी समय पंजाब पर बाबर का आक्रमण हुआ। इस आक्रमण की तिथि श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं १५७८ वि. बताई है। उन्होंने आंखों देखे गवाह के रूप में सैयदपुर में बाबर द्वारा किए गए कत्लेआम का विशद् विवरण किया है। इसका यह अर्थ हुआ कि १५२० के अंत में गुरु जी बगदाद में थे और इसके शीघ्र बाद वहां से चल पड़े थे।

इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी देश-विदेश की यात्राओं के समय अपने असाधारण व्यक्तित्व का प्रभाव न केवल पण्डितों, मौलवियों और नाथों-सिद्धों पर ही छोड़ा बल्कि आपके विचारों से सर्वसाधारण भी पर्याप्त लाभान्वित हुआ। गुरु साहिब की विवेक बुद्धि और सहिष्णुता की भावना ने भारतीयों को अत्यन्त प्रभावित किया।

कविताएं

जगत गुरु नानक

गुरु नानक बाणी शबद युगांतर।
मिला न कोई जिसके समानांतर।
दीन दुनी और ये धरती अंबर,
सभी स्थानों पे पासास अपरंपर।
मानस की नैया डोलती फिरती,
बहुत उफनते समाजों के भव सागर।
ऊंच-नीच जात-पात जीने न देती,
सांस-सांस मानस हुए थे आतुर।
नारी के न कभी सूखते आंसू,
जीवन बन जाता कठिन कठिनतर।
हर दिन ज़ालिम राजे जुल्म कमाते,
फैला घोर अंधियारा देसों-देशांतर।
फिर आदि गुरदेव जगत गुरु नानक,
लाखों सूर्य उदय हुए उदयागर।
मानस नैया के पतवार संभले,
जप जाप विचार दिये, लहर बनाकर।
दिया नया जीवन-प्रवाह विश्व मानव को,
किरत कर्म चरित्र अराधन रोशनागर।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तन वाली सड़क, शाला पुराना, गुरदासपुर। मो: ९४१७१-७५८४६

गुरु नानक देव अभिनंदन

मीठी बाणी से जिसने,
संदेश सुनाया पावन।
गुरु नानक देव के चरणों में,
आओ करें श्रद्धा वन्दन!
आडम्बर का कर विरोध,
अंधविश्वास का खंडन।
भूली-भटकी जनता को,
एक पथ दिखलाया नूतन!
था समय कि सुलभ नहीं थे,
यात्रा के आधुनिक साधन।
लंबी यात्राएं करके,
संदेश दिया अति पावन!
कायम कर सिख पंथ दिखाया,
मानव-सेवा श्रेष्ठ धर्म।
मानव-मानव में अपनापन ही,
प्रभु-भक्ति चिन्तन का मर्म।
सिख धर्म के महान गुरु से,
धन्य-धन्य धरती का आंगन।
देता है इतिहास समादर,
करते सभी लोग अभिनंदन।

-डॉ. दीनानाथ 'शरण', दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०000४

'आसा की वार' के परिप्रेक्ष्य में गुरु नानक साहिब के समय का समाज

*-डॉ. अविनाश शर्मा**

भारतीय इतिहास का मध्य युग राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सभी रूपों में विनष्ट होते हुए देश के जर्जर जीवन की ज्वलंत कहानी है। चारों ओर राजनीतिक विप्लव, अशान्ति, निराशा और दरिद्रता का भीषण राग छिड़ा हुआ था। सामान्य जनता के जीवन की गति दुख और दैन्य की स्थिति में मृतप्राय: बन रही थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही समाजों में मिथ्या आडम्बर बढ़ रहे थे। सामाजिक जीवन के उज्जवल आदर्शों पर ढोंग, पाखंड, अनाचार और अनैतिकता की कालिमा छाई हुई थी। निराश और निरुत्साह जनता कुछ सुख और शांति की आशा में धर्म की ओर प्रेरित हो रही थी, परन्तु तत्कालीन धार्मिक अवस्था भी बड़ी विशृंखल और विकृत थी। समाज में पंडितों और मुल्लाओं का बोलबाला था जो भोली-भाली जनता को धर्म के नाम पर लूट रहे थे। उच्च-वर्गीय समाज द्वारा निम्न-वर्गीय समाज के प्रति घोर घृणा व उपेक्षा का व्यवहार, समाज में दयनीय स्थिति, अन्धविश्वास और धर्म के मिथ्या आडम्बर आदि हिन्दू और मुस्लिम दोनों समाजों की आत्मा को जर्जर बना रहे थे। जहां तक निम्न वर्ग का प्रश्न है उनमें भस्म रमाने वाले और अलख जगाने वाले ढोंगी साधुओं और झूठे योगियों का प्रभाव बढ़ रहा था। इस प्रकार समाज और धर्म दोनों ही घोर हीनावस्था को प्राप्त थे। उनमें किसी प्रकार का उत्साह नहीं था और न स्फूर्ति, न जीवन और न शक्ति थी।

संक्षेप में यह उस क्रांति की पृष्ठभूमि है जिसका सूत्रपात एक ऐसे अपूर्व स्रोत से हुआ, जिसने मृतप्राय: युग-जीवन में लोक-कल्याण के प्रशस्त मार्ग का निर्माण किया, जिसने जनजीवन की आत्मा को जीवित रखने के लिए विरोधी शक्तियों से खुलकर संघर्ष किया, जिसने अटल विश्वास और प्रचण्ड आंधी सा साहस लेकर अपने युग के वातावरण को झकझोर डाला, जिसका व्यक्तित्व स्वयं एक जलती हुई मशाल था जिसकी चमक से युग-धर्म और समाज-विरोधी शक्तियां सिहर उठीं, जिसके पक्षाघात पर मिथ्याचार, झूठे ढकोसले, रूढ़ियां और सामाजिक जीवन की कुत्सित प्रवृत्तियां अपने उच्च सिंहासनों से नीचे गिर कर धराशायी हो गईं। इस क्रांति का शंखनाद किया अपने युग के सबसे बड़े सत्यपुरुष श्री गुरु नानक देव जी ने, जिनका आगमन मध्ययुगीन सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और साधना जगत की महत्त्वपूर्ण घटना है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित आसा की वार के रचनाकार श्री गुरु नानक देव जी हैं। भले ही इस पावन बाणी का विषय-वस्तु पूरी तरह आध्यात्मिक है फिर भी इस पावन बाणी का अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि इस पावन बाणी के आध्यात्मिक स्वरूप को ऐतिहासिक एवं सामाजिक सरोकारों से अलग नहीं किया जा सकता।

'आसा की वार' रचना में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दर्शाये अनेक सरोकारों के माध्यम से युग के सामाजिक इतिहास की झलक मिलती है। गुरु जी ने प्रचलित परम्पराओं के द्वारा उस युग के इतिहास को सजीव करने का यत्न किया है। इनमें से कुछ परम्पराएं निम्नलिखित हैं :

१. गुरु-शिष्य परम्परा

गुरु-शिष्य परम्परा भारत में अनादि काल से प्रचलित है। प्राचीन काल में ही इस परम्परा को सामाजिक मान्यता मिल गई थी। मानव अपने आप में सच्चे ज्ञान के अभाव के कारण बहुत कमजोर है। उसे किसी न किसी ज्ञानवान पुरुष का सहारा चाहिए, जो उसे उसकी मंजिल तक ले जाए। श्री गुरु नानक देव जी के समय में भी यह परम्परा प्रचलित थी। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि शिष्य के संसार की उलझनों में उलझे हुए मन को

१२०५, अर्बन अस्टेट, फेज-१, जालंधर-१४४०२२

गुरु अपने ज्ञान के द्वारा शुद्ध, स्वच्छ तथा अहं से रहित करके उसे ज्ञान की धारा में बांध देता है। गुरु, शिष्य की प्रवृत्ति को आध्यात्मिकता की रोशनी में नहला कर मानवता तक ले ही नहीं जाता बल्कि उस पर अपने आशीर्वादों का अम्बार भी लगा देता है।

श्री गुरु नानक देव जी के समय कुछ लोग अपनी चालाकी से थोड़ी सी विद्वता के बल पर, कुछ पुस्तकों के कुछ शब्दों को याद करके अपने आप को ज्ञानी, संत, भक्त एवं ऋषि समझने लगे थे। ऐसे लोगों के कारण यह परम्परा अपना महत्त्व खोने लगी थी। ये नकली संत स्वयं ज्ञानहीन थे और अपने पीछे ज्ञानहीनों की अनेक सेनाएं खड़ी करने लगे थे, जो समुदायों में दीवारें खड़ी कर रहे थे ताकि उनकी दुकानदारी चलती रहे। श्री गुरु नानक देव जी ने इन गुणहीन 'गुरुओं' को देखकर यह कहा था कि मानव-समाज को इन नकली गुरुओं से बच कर रहना चाहिए। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि जिस समाज में अपूर्ण गुरु होंगे उस समाज में उन गुरुओं से कई गुना अधिक अपूर्ण शिष्य होंगे। अपूर्ण गुरु-शिष्य समाज को बर्बादी की ओर ले जाते हैं। गुरु जी का विचार है कि समाज में जो मार-काट तथा आपोधापी मची हुई है वह सब अज्ञानी-शिष्यों की देन है। इतिहास-निर्माण में ज्ञानवान 'गुरुओं' का बहुत बड़ा हाथ है। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी के सम्बंधों ने इस परम्परा को चार चाँद लगा दिए थे।

२. ब्राह्मण-काजी विवाद

श्री गुरु नानक देव जी के समय भारतवर्ष में हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा आम था। दोनों धर्मों के कथित अगुआ और अनुयाई एक-दूसरे के प्रति घृणा की आग भी उगल रहे थे। इन धर्मों में भी अनेक सम्प्रदाय बन गए थे जो एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। 'आसा की वार' में श्री गुरु नानक देव जी ने जहां पाखंडी ब्राह्मणों की तस्वीर उतारी है वहीं उन्होंने मुल्लाओं और काजियों के मैले रूप को भी दर्शाया है। ये लोग अपने बाहरी रूप के कारण अपने आप को भद्र पुरुषों की कतार में खड़ा करते थे। ब्राह्मण धोती समेत साफ वस्त्र पहन, माथे पर तिलक लगाकर, सुंदर भेष बनाकर संसार को लूटते थे। 'आसा की वार' में जनेऊ, सन्ध्या-गायत्री जैसे भेष को पाखंड बताया है क्योंकि ये लोग 'सत-सन्तोष' आदि दस गुणों से हीन थे।

श्री गुरु नानक देव जी ने जब अधिकतर मुसलमानों के व्यवहारिक जीवन को देखा तो उन्हें पता चला कि उनका जीवन भी ब्राह्मणों की तरह कर्मकाण्डों में फंसा हुआ है। सत्य यह है कि ऐसे तथाकथित धर्म व्यक्ति के अहं को बढ़ावा देते हैं और वे समाज में कट्टरपन को फैलाते हैं। 'आसा की वार' में ऐसे लोगों पर भी व्यंग्य किया गया है। काजी खुदा के नाम पर लोगों से अन्याय और अनेक प्रकार के अत्याचार करते थे। ब्राह्मणों और काजियों द्वारा निर्मित समाज पाप के पैसे से बढ़ता-फूलता था। श्री गुरु नानक देव जी ने मलिक भागो की रोटियों से खून निकाल कर उस समाज के पाप को उजागर किया था। ब्राह्मणों द्वारा आयोजित दिखावे की तीर्थ-यात्रा को भी गुरु जी ने अमान्य ठहरा दिया था। इस प्रकार का समाज, जिसकी नींव में अन्याय और अत्याचार हो, कैसे अच्छा हो सकता है? श्री गुरु नानक देव जी स्वयं ऐसे समाज को बदलना चाहते थे। उन्होंने लोगों को पाप की कमाई से दूर रहने का उपदेश देकर एक नया समाज रचने की कोशिश की।

इस प्रकार के विश्लेषण से यह सिद्ध हो जाता है कि उस समय लोग लूट-खसूट, मार-काट आम करते थे, जिस कारण समाज में अराजकता फैली हुई थी। इसके विपरीत श्री गुरु नानक देव जी ने नए समाज के निर्माण के लिए लोगों को 'किरत कमाई' के लिए तैयार किया। 'आसा की वार' में श्री गुरु नानक देव जी ने अपने समय को बहुत शिद्दत के साथ चित्रित किया है। इस चित्रण के साथ-साथ समाज में फैले भ्रष्टाचार, वाह्याचार तथा रूढ़िवादी विचारों की उन्होंने निन्दा भी की तथा नए समाज की रूप-रेखा प्रस्तुत की। 'आसा की वार' का एक-एक शबद मानव-कल्याण के लिए है। ईश्वर की स्तुति करती हुई धार्मिक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक स्थिति सम्बंधी टिप्पणियां 'आसा की वार' में साकार होती हैं। ये टिप्पणियां किसी विशेष धर्म के लिए नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए हैं, इसीलिए तो श्री गुरु नानक देव जी सभी धर्मों के अनुयाइयों में पूजनीय हैं।

महान समाज-सुधारक श्री गुरु नानक देव जी

*-श्री सुरिंदर कुमार अग्रवाल**

श्री गुरु नानक देव जी एक महान समाज-सुधारक थे। उन्होंने देश व समाज को एक नई दिशा दी। भारत-भ्रमण कर उन्होंने अपने उपदेशों से जनसामान्य को परिचित कराया। तत्कालीन रूढ़िवादिता और शासकों की क्रूरता को देखते हुये व्यवहारिक अध्यात्मवाद का प्रतिपादन किया जिसमें छुआछूत तथा जाति-भेद नहीं था। उन्होंने भूखों को भोजन दिया तथा जो अछूत समझे जाते थे उन्हें पास बिठकार प्रेम से भोजन कराया। फिर धार्मिक शिक्षा दी। जब हमारा देश बाहरी आक्रांताओं और लोक-विरोधी शासकों से पीड़ित तथा परेशान था, तब गुरु जी ने देश-कौम के लिये ढाल बनकर संरक्षण दिया।

श्री गुरु नानक देव जी सत्य के पुजारी थे। उन्होंने जो कुछ कहा वह आडंबर-मुक्त था। धर्म के विषय में लंबी-चौड़ी बातें करने से कोई लाभ नहीं है। सिद्धांत वही सच्चा और ठीक है जो व्यवहार में लाया जा सके। वे कहते हैं—हम सत्य-धर्म अपनायें, असत्य से बचें, सत्य-स्वरूप ईश्वर के आदेश का पालन करते रहें। जो लोगों पर उपकार, पीड़ितों की सेवा नहीं करते वे श्री गुरु नानक देव जी की दृष्टि में मानव-हितैषी नहीं हैं। श्री गुरु नानक देव जी तिब्बत और हिमालय के दुर्गम प्रदेशों में बहुत से सिद्धों-योगियों से मिले और उनसे कहा— "आप यहां निज मोक्ष की प्राप्ति हेतु साधना में लीन हैं और संसार की दशा दयनीय है। शासकगण कसाई बन गये हैं, धर्म पंख लगाकर उड़ गया है, चारों तरफ झूठ की काली रात छाई हुई है। उसमें सच्चाई का चन्द्रमा कहीं दिखाई नहीं देता।"

श्री गुरु नानक देव जी भगवान के विराट रूप के उपासक थे। उन्हें संसार के सब पदार्थ और प्राणी भगवान के रूप में ही दिखाई पड़ते थे। वे कहते थे, हम सब उस आदि तत्व का अंश हैं तो आपस में लड़ाई-झगड़ा, ईर्ष्या, द्वेष कैसा?

व्यवहारिक अध्यात्मवाद

श्री गुरु नानक देव जी ने सारे समाज को अनेक भागों में बंटा देखा तो अनुभव किया कि इसी कारण कौम निर्बल होकर ठोकरें खा रही है, पुजारियों ने धर्म पर एकाधिकार कर लिया है। वे धार्मिक संस्कार कराना अपनी बपौती समझकर मुफ्त का माल उड़ा रहे हैं। इसी वर्ग ने अपने स्वार्थ-साधन के लिये जनता को राजनैतिक और सामाजिक चेतना से हीन बना दिया है, जिससे वे मूक बनकर देशी और विदेशी हाकिमों का तरह-तरह से अन्याय सह रहे हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने जब समाज का रोग पहचान लिया तो एक ऐसा संगठन बनाने का निश्चय किया जिससे धर्म को व्यापार की चीज न बनाया जाये, जिससे कोई भी धार्मिक और जातीयता की दृष्टि से छोटा-बड़ा न माना जाये। उन्होंने सामूहिक रूप से भगवान की स्तुति और गुणगान करने की बात कही, जिसमें कोई भेंट, पूजा, चढ़ावा या किसी

**द्वारा—अग्रवाल न्यूज एजेंसी, हटा, दमोह (म. प्र.)-४७०७७५*

एक व्यक्ति के लाभ का कोई सवाल न था। सब लोग एक साथ बैठकर गुरु जी के उपदेशों को सुनते थे।

जाति-प्रथा दूर करने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने सबको एक ही पंगत में बैठकर भोजन करने की परम्परा चालू की, क्योंकि चौंके-चूल्हे की पृथकता ने लोगों में भेदभाव की अनेक दीवारें खड़ी कर दी थीं।

भक्ति-कालीन जितने भी संत हुये हैं, वे सभी अपना परम्परागत कार्य करते हुये समाज-सेवा करते थे। इन संतों ने बताया कि हम समाज-सेवा करें पर निर्वाह के लिये समाज पर आश्रित न रहें। श्री गुरु नानक देव जी अपना निर्वाह खेतीबाड़ी और मूंज की रस्सियां बनाकर करते थे। श्री गुरु नानक देव जी ने सत्य-धर्म प्रसार का उद्देश्य पूर्ण करके साधू के बजाय गृहस्थों जैसा वेष धारण कर लिया क्योंकि वे साधुओं के गेरूआ वस्त्र, कंठीमाला, तिलक के आधार पर हिन्दू साधुओं के ठाठ-बाठ के दुष्परिणाम देख चुके थे। पं. श्री राम शर्मा आचार्य ने लिखा है, दिन-रात जीव-ब्रह्म, माया की चर्चा करना, जगत को असत्य बताना, सबसे निराला वेष धारण करना और रत्ती भर कार्य कर अपने निर्वाह का भार समाज पर डाल देना अध्यात्म का लक्षण नहीं है। साधू को सन्यासी बनकर दूसरों की कमाई पर आराम कर ठाठ-बाठ की जिंदगी जीना शोभा नहीं देता।

गुरु नानक साहिब ने समझ लिया था कि नकली अध्यात्मवाद समाज के लिये अभिशाप सिद्ध हो रहा है और लोगों में अंधविश्वास तथा झूठी श्रद्धा का एक बड़ा कारण है। अत: उन्होंने अपने यहां पुजारी और झाड़ू लगाने वाले को पंथ में समानता का दर्जा देकर बड़ा समाज-सुधार किया और भेदभाव करने वाले को चुनौती दी कि यदि तुम में मानवता है तो हमारे समान एक साथ बैठकर खाना खाओ और समानता का व्यवहार करो। जो इतना उदार हृदय नहीं बना सके, वे कालांतर में सिमट कर हाशिये पर रह गये हैं।

सच्ची आध्यात्मिकता न वेष से संबंध रखती है, न पूजा-पाठ से, न जप-तप से। यह ज्ञात हो कि निर्जन जंगलों में रहने वाले नंगे साधुओं को भी सामान्य बातों पर लड़ते देखा जा सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी के प्रचार का प्रभाव तत्कालीन भारतीय समाज पर पड़ा। जात-पात के बंधनों, खान-पान के नियमों, छूआ-छूत आदि बुराइयों से समस्त भारतवर्ष, विशेष कर पंजाब प्रांत को मुक्ति मिली। गुरु जी के सत्य-प्रचार का लाभ भारत के साथ लगते कुछ सीमावर्ती देशों के लोगों को भी मिला। समाज में विषमता को मिटाकर समता तथा एकीकरण कर जो महान कार्य श्री गुरु नानक देव जी ने किया वह आज फलता-फूलता नज़र आ रहा है।

सबका मालिक एक

श्री गुरु नानक देव जी ने ईश्वर को सम्राटों का सम्राट बताते हुये कहा है—आकाश, वायु, जल, अग्नि आदि पांच तत्व उसी की महिमा गाते हैं। धर्मराज, पाप-पुण्य के लेखाधिकारी चित्रगुप्त, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि समस्त देवता उसी का गुणगान कर रहे हैं। समाधि-अवस्था में रहने वाले सिद्धगण तथा सब संत भी उसी का गुणगान कर रहे हैं अर्थात् "सबका मालिक एक है", फिर लड़ाई-झगड़ा, मन-मुटाव कैसा?

श्री गुरु नानक देव जी ने जीनव-मरण एवं पुनर्जन्म की बात को कुएं से पानी खींचने वाली रहट का उदाहरण देते हुये समझाया, जैसे

पानी खींचने वाले बर्तन नीचे जाते हैं, पानी भरे ऊपर आ जाते हैं, खाली होकर फिर नीचे चले जाते हैं, ऐसा ही हमारा यह जीवन प्रभु के एक खेल के समान हैं।

श्री गुरु नानक देव जी अपना जीवन-निर्वाह खेती से करते रहे। उन्होंने आध्यात्मिक सिद्धांत को खेती के रूपक में बड़े सुंदर ढंग से समझा कर कहा, "किसान भाव रूपी पवित्र भूमि पर सत्य और संतोष रूपी बैलों द्वारा शांति का हल चलाता है। स्थिर, प्रज्ञता की खाद देकर वह काम अथवा कारज रूपी बीज बोता है। ऐसे चतुर किसान को फल की प्राप्ति होती है। वे आगे कहते हैं, शरीर को खेत बनाओ, उसमें नाम रूपी बीज बोओ, संतोष रूपी पटेला लगाओ और गरीबी का वेष धारण करो।

आध्यात्मिक रहस्य जन-भाषा में समझाना बड़ा महत्वपूर्ण है। पंडित श्री राम शर्मा आचार्य ने श्री गुरु नानक देव जी की जन-भाषा के प्रयोग की प्रशंसा करते हुये लिखा है, सामान्य जनता को उसी की भाषा में धर्म-ज्ञान देना उत्तम है। हिन्दुओं के धार्मिक संस्कारों को संस्कृत भाषा में ही किये जाने का आग्रह एक वर्ग विशेष द्वारा स्वार्थ की निगाह से ही किया जाता है। धार्मिक कार्य सदैव ऐसी भाषा में किये जायें ताकि सभी उन्हें समझ सकें। संस्कृत भाषा का प्रयोग एक जटिल और स्वयं तक सीमित कार्य है। इस कमजोरी को पहले बौद्ध और जैन धर्म वालों ने पहचाना और अपना धार्मिक साहित्य जन-भाषा में प्रस्तुत किया। अपने युग में श्री गुरु नानक देव जी ने अपने धार्मिक उपदेशों में मूलतः पंजाबी भाषा का प्रयोग किया है।

श्री गुरु नानक देव जी अपने समय के एक महान समाज-सुधारक थे। उन दिनों जब परिवहन के साधनों का अभाव था उन्होंने अपने निर्मल कल्याणकारी विचारों को समस्त दुनिया में फैलाने हेतु लम्बी-लम्बी यात्रायें कीं। उन्होंने हिन्दू समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत किया।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा लगाया गया गुरमति जीवन-युक्ति-रूप पौधा दिन-ब-दिन जड़ पकड़ता गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय में उसने इतना शक्तिशाली और विशाल रूप धारण कर लिया कि पंजाब तथा आस-पास के कितने ही स्थानों में असहाय जनसाधारण को गुरु नानक नाम-लेवा सिखों द्वारा संरक्षण प्राप्त हुआ। श्री गुरु नानक देव जी का जब ५००वां प्रकाश पर्व मनाया गया था तब भारत में छोटे-बड़े सभी नेताओं ने श्री गुरु नानक देव जी को धर्म तथा समाज का सच्चा संशोधक स्वीकार किया। जिस समय विदेशियों के आक्रमणों के कारण इस देश में, विशेषकर पंजाब में धर्म डूबने लगा था तो श्री गुरु नानक देव जी ने अपने सच्चे और निर्भीक उपदेशों द्वारा उसकी रक्षा की। उन्होंने लोगों को समझाया कि ईश्वर एक है, सारा विश्व उसी की संतान है।

आपका पत्र मिला

गुरमति ज्ञान के अगस्त तथा सितंबर माह के विशेष अंक प्राप्त हो गए हैं। लेखकों के सुंदर लेखों एवं कविताओं से सुसज्जित थे। साथ ही आप जी की पूरी टीम की लगन परिश्रम श्रद्धा विश्वास प्यार की मुंह बोलती तस्वीर प्रस्तुत करने वाले थे। स. करनैल सिंघ 'सरदार पंछी' जी की कविता 'आप भी सुने' में एक अजन्मी बच्ची की पुकार पत्थर दिलों तक कवि के शब्दों द्वारा ऐसी माताओं तक पहुंचे जो मादा-भ्रूण-हत्या जैसे पाप में सहभागिनी बनती हैं। वाहिगुरु 'गुरमति ज्ञान' को बुलन्दियों तक पहुंचाऐगा, ऐसी आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है।

-डॉ. मनजीत कौर, जयपुर।

सर्वधर्म सम्भाव प्रणेता श्री गुरु नानक देव जी

*-स. सुरजीत सिंघ**

सार्वभौमिक, सर्वमान्य, सर्वकालिक, सर्वधर्म सम्भाव, राष्ट्रीयता की मूल विचारधारा के प्रणेता श्री गुरु नानक देव जी भारतवर्ष की सीमाओं में ही नहीं, अपितु विश्व भर में भी महान दिव्य गुरु के रूप में सम्मानित हैं, क्योंकि आपकी बाणी, शिक्षा और उपदेश *"सभ ते वडा सतिगुरु नानक जिनि कल राखी मेरी"* के अनुरूप सामंजस्य, संतुलन एवं समन्वय स्थापित कर मानव-जीवन के अन्तरंग की आध्यात्मिक सम्पूर्णता के साथ-साथ वाह्य जीवन की यथार्थताओं का सुसामंजस्य है; देह परायण जीव को आत्म-नियंत्रण करने, आदर्शवादी विधान, नैतिक विकास की दिव्य शक्ति की प्रेरणा है; आत्मा, परमात्मा, जगत, प्रकृति, जीव, जीवन एवं कर्म की आदर्श संस्थापना प्रस्तुति है। स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व की स्थापना एवं जन-चेतना, जन-हित के कार्यों को मूल रूप प्रदान करने हेतु सन् १४६९ को श्री गुरु नानक देव जी का माता तृप्ता जी तथा श्री पिता मेहता कालू जी के गृह राय भोय की तलंवडी (ननकाणा साहिब) में आगमन हुआ। गुरु जी सर्वगुण सम्पन्न थे और उनके किसी भी गुण का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही होगा, अत: *"कलि तारन गुरु नानकु आइआ"* के अनुरूप सर्व-कल्याणकारी, सर्व-हितकारी, सरबत्त का भला ही सर्वत्र जीवन-आदर्श परिलक्षित हो रहा है-
"जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥"

श्री गुरु नानक देव जी महान हैं। उनके सिद्धांतों, आदर्शों का आधार सत्य-धर्म, मानव-धर्म और जीवन-धर्म ही रहा है। श्री गुरु नानक देव जी एकता के पुजारी थे। उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को एक मंच पर लाने का जीवन भर भरसक प्रयास किया, जहां न कोई छोटा है और न ही कोई बड़ा। श्री गुरु नानक देव जी ने 'मानव-मानव एक समान' का पाठ पढ़ाया और भिन्न-भिन्न विचारों के रहते हुये भी भाई-भाई की तरह जीवन-निर्वाह की शिक्षा दी :

जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥ (पन्ना ३४९)

श्री गुरु नानक देव जी सच्चे व निडर वक्ता थे। उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों, कर्मकांडों, पाखंडों-ढोंगों का घोर विरोध कर सही सच्चा मार्ग प्रशस्त किया। गुरु नानक साहिब महान होकर भी विनम्र थे। उन्होंने अपने आप को नीच से भी नीच मानकर कहा :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ (पन्ना १५)

गुरु जी महान क्रांतिकारी और समाज-सुधारक थे। उन्होंने लोगों के हृदय परवर्तित कर प्राचीन अंधविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों को निर्मूल साबित कर वास्तविकता, सत्य, सेवा, सुमिरन, ईश्वर, जीवात्मा, सृष्टि-रचना से जोड़ा। गुरु नानक साहिब ने गृहस्थ-आश्रम का

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)*

सदा उपदेश दिया है और भक्ति-आराधना हेतु घर-परिवार त्याग कर जंगलों में एकांतवास करने को सर्वदा नकारा। इसी के अनुरूप वे स्वयं ही एक पत्नी के आदर्श पति और दो संतानों के आदर्श पिता रहते हुये भी वैराग्यमयी जीवनयापन कर, मोह-माया से कोसों दूर रहे। उन्होंने नारी महानता प्रदर्शित करते हुये नारी को आदर्श जीवन की प्रेरणा देकर समाज में सवोच्चता प्रदान की है :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

गुरु जी का उद्देश्य असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म एवं अन्याय पर न्याय की विजय ही है। आपके अनुसार मनुष्य की पहचान उसके कर्मों से होती है, अच्छे कर्म उसे सर्वोच्चता प्रदान करते हैं, जबकि दुष्कर्म नीचे गिरा देते हैं। गरीब की सेवा ईश्वर-सेवा है, गरीब को दिया दान ही ईश्वर को स्वीकृत है। ईश्वर-भक्ति और नि:स्वार्थ सेवा से परमेश्वर को पाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

श्री गुरु नानक देव जी महान देश-भक्त थे। उन्होंने भारत पर आक्रमणकारी हुकूमत के अत्याचारों का डटकर दृढ़तापूर्वक विरोध किया और हिन्दुस्तान की दयनीय स्थिति का मार्मिक वर्णन कर **'बाबर को जाबर'** अर्थात् **'अत्याचारी शासक'** कहकर सम्बोधित किया। गुरु जी साहसी धार्मिक नेता थे। उन्होंने देश-विदेश की चार चरणों में लंबी यात्राएं कीं, जो लगभग २० से भी अधिक वर्षों तक चलीं और जिनका उद्देश्य ही सर्वधर्म सम्भाव, ईश्वर-भक्ति, समाज-सुधार और चरित्र-सुधार था। गुरु जी महान विचारक, सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी और चिन्तक थे, क्योंकि उन्होंने जैसा कहा वैसा वास्तविक जीवन स्वयं भी जीया। बाल्य-काल से ही श्री गुरु नानक देव जी सोचा करते थे कि मानव क्या है? सृष्टि क्या है? सच क्या है? विश्व में वैज्ञानिक खोज जो आज हो रही है, परंतु उसके तथ्यों की पुष्टि गुरु नानक साहिब जी ने ५०० वर्ष पूर्व ही कर दी थी।

गुरु जी उदारचित्त और महादानी थे। प्रारम्भिक जीवन से ही उन्होंने अपना सारा धन और शक्ति साधू-संतों और निराश्रितों की सेवा में अर्पण कर लंगर-प्रथा का शुभारम्भ कर दिया था। जहां संगत-पंगत-सिद्धांत के अधीन समस्त प्राणी राजा-रंक, गरीब-अमीर, ऊंच-नीच के भेदभाव को भुलाकर ईश्वर-आराधना करते हुये एक पंक्ति में साथ-साथ बैठ कर भोजन ग्रहण करते रहे हैं और यही प्रथा यथावत आज तक चली आ रही है।

श्री गुरु नानक देव जी सरलता के पुजारी थे, इसलिए आप जी ने सरलतम सीधी-साधी भाषा, बाणी और शैली में गुरबाणी की रचना की। गुरु जी सर्वोच्च मानवतावादी थे जो मानव जीवन को ऊंचा, श्रेष्ठ और पवित्र मानते थे, जिसका उद्देश्य हर प्राणी, जीव और प्रकृति की बिना भेदभाव सच्चे हृदय से सेवा करना और ईश्वर-अराधना से था।

श्री गुरु नानक देव जी ने नेपाल, श्रीलंका, चीन, भूटान, तिब्बत, सिक्किम इत्यादि देशों की महत्वपूर्ण यात्राएं कर तपस्यारत सिद्धों, मठाधीशों एवं लामाओं से विस्तृत ज्ञान-चर्चाएं कर मानवता का संदेश दिया और दुर्दान्त डाकुओं, अपराधियों का सही, सच्चा मार्ग प्रशस्त किया। ब्लूचिस्तान, अफगानिस्तान, सिंध, इराक, ईरान, बगदाद, मक्का, मदीना इत्यादि मुस्लिम देशों का तीर्थाटन कर श्री गुरु नानक देव जी ने निराकार ईश्वर और सत्य का संदेश दिया।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

श्री गुरु तेग बहादर जी : जीवन और शहादत

*-स. बिक्रमजीत सिंघ**

सिख इतिहास शहीदियों का इतिहास है। दुनिया में कोई भी ऐसा धर्म नहीं जिसमें इतनी बड़ी तादाद में शहीदियां हुई हों। अगर हम यह कह लें कि सिख धर्म की बुनियाद शहीदों की हड्डियों पर रखी गई है तो कोई अतिकथनी नहीं होगी।

सिख इतिहास में दो प्रमुख शहीद सतिगुरों के सुनहरी अध्याय हैं—साहिब श्री गुरु अरजन देव जी और साहिब श्री गुरु तेग बहादर जी। यहां यह बात विचारयोग्य है कि साहिब श्री गुरु अरजन देव जी जो कि सिखों के पांचवें गुरु हुए, वे गुरु तेग बहादर जी के दादा जी थे। इन दोनों शहीदियों के बीच काफी लंबा समय होने के बावजूद भी दोनों शहीदियां धार्मिक आजादी की सुरक्षा की भावना के आधार पर हुईं। मानवता की भलाई इन शहीदियों का मूल उद्देश्य था।

श्री गुरु तेग बहादर जी का जन्म ५ वैशाख संवत् १६७८ (१ अप्रैल, सन् १६२१ ई.) को छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के घर माता नानकी जी की कोख से हुआ। आपके चार भाई—बाबा गुरदित्ता जी, बाबा सूरज मल जी, बाबा अणी राय जी और बाबा अटल राय जी थे। आपकी एक बहन बीबी वीरो जी थीं। आप आयु में इन सबसे छोटे थे।

आपने अपना बचपन अमृतसर में गुजारा। आपके पिता ने आपकी शिक्षा के लिए बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी और भाई बहिलो जी को चुना, जिन्होंने आपको गुरमति दर्शन और गुरबाणी का ज्ञान करवाया। आप जी ने तलवार चलाना, शिकार खेलना, बाज उड़ाना और घुड़सवारी करना भी सीखा।

बचपन में आप कितना-कितना समय प्रभु-भक्ति में लीन रहते। माता नानकी जी अपने बेटे के इस समाधिलीन अवस्था को देख कर हैरान रहते। जब यह बात उन्होंने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी से की तो उन्होंने कहा कि आप अपने बेटे की चिंता मत करें, इन्होंने बड़े होकर बहुत महान कार्य करने हैं।

श्री गुरु तेग बहादर जी की शादी करतारपुर निवासी श्री लाल चंद की बेटी श्री गुजरी जी से हुई।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के ज्योति जोति समा जाने के बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने लंबी तपस्या और प्रभु-भक्ति की। इसके अलावा उन्होंने अपने समय के राजनैतिक और धार्मिक हालात पर भी गहरा चिंतन किया।

आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने ज्योति जोति समाते समय "बाबा बकाला" के शब्द का उच्चारण किया और श्री गुरु तेग बहादर जी को दिल्ली से ही गुरु थाप कर सिखों को बकाले गांव भेजा। यहां आकर भाई मक्खण शाह ने आपको ढूंढ कर असली गुरु की पहचान की और माथा टेका।

कुछ समय बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी श्री हरिमंदर साहिब के दर्शनों के लिए श्री अमृतसर पहुंचे लेकिन स्वार्थ से प्रेरित कई कारणों के चलते वहां के पुजारियों ने श्री हरिमंदर साहिब के किवाड़ बंद कर लिए। आप बिना दर्शन के ही वापस आ गए और ग्राम

**२१-४६/७, बाजार लोहारां, चौंक लछमणसर, श्री अमृतसर।*

वल्ला, तरनतारन, खडूर साहिब और गोइंदवाल साहिब से होते हुए बकाले पहुंचे। उधर दूसरी तरफ कीरतपुर साहिब से कुछ सिखों के प्रेम-संदेश पर आप जी वहां की संगत को दर्शन देने के लिए कीरतपुर पहुंचे जहां पर आपका वहां की संगत और पहाड़ी राजाओं ने अभिनन्दन किया। यहीं पर आपने कुछ समय गुजारा।

इसके बाद कीरतपुर के पास माखोवाल नामक एक गांव में गए। यह गांव उजड़ा हुआ था। यहां पर आपने एक नया नगर बसाने की योजना बनाई और 'चक्क नानकी' नाम के नगर की आधारशिला रखी जो कि बाद में 'अनंदपुर साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यहां पर निवास करते हुए जब संगत को पता चला तो संगत दूर-दूर से आपके दर्शनों के लिए आने लगी। आपकी महिमा दिन-ब-दिन बढ़ती चली गई। यहां पर आपने कोई छ: महीने निवास किया। इसके उपरांत देश के पूर्वी हिस्सों से आपको दर्शनों के बुलावे आने शुरू हो गए, जिसके कारण आप वहां से प्रयाग (इलाहाबाद), आगरा, काशी, मिर्जापुर, गया, आसाम, ढाका इत्यादि स्थानों पर गए और वहां की संगत को दर्शन देकर निहाल किया। इसी समय सन् १६६६ ई में माता गुजरी जी की कोख से पटना (बिहार) में आपके घर साहिबजादे ने जन्म लिया, जिसका नाम गोबिंद राय रखा गया। उस समय गुरु जी ढाका में थे।

लगभग पांच साल आसाम और पटना के आस-पास के क्षेत्रों में भ्रमण करते और सिखी का प्रचार करते हुए गुरु जी वहां के राजा राम सिंह को साथ लेकर अकेले ही पंजाब वापस आ गए। आते समय माता नानकी जी को वहां छोड़ दिया और कहा कि कुछ समय यहां पर और टिके रहें, पंजाब पहुंच कर आपको शीघ्र ही बुला लिया जाएगा।

पटना से चलकर गुरु जी रास्ते में बनारस, अयोध्या, लखनऊ, मथुरा शहरों से होते हुए लखनौर, जो कि अम्बाला से चार-पांच मील दूर है, वहां पहुंचे। यहां पर गुरु जी एक सिख भाई जेठा जी के पास कुछ दिन निवास करके कीरतपुर से होते हुए अनंदपुर साहिब आ गए। साहिबजादे की शिक्षा, देख-रेख का प्रबंध करके आपने अपने परिवार को पटना से पंजाब बुला लिया।

उधर वक्त की जालिम हकूमत और बादशाह औरंगजेब मुल्क के तमाम हिन्दुओं को मुस्लिम धर्म अपनाने पर जोर देता आ रहा था। जो भी हिन्दू मुसलमान बनने से इंकार करता था उसे कत्ल कर दिया जाता था। हकूमत के जुल्मों से हाहाकार मची हुई थी। हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थानों जयपुर, अजमेर, पुष्कर, मथुरा, अयोध्या, प्रयागराज, बनारस इत्यादि स्थानों को तहस-नहस कर दिया गया था। मौत का डर अथवा धन का लालच देकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था।

इसी कड़ी के बीच कश्मीर के ब्राह्मणों को वहां के वज़ीर शेर अफ़गान की तरफ से मुसलमान बनने को तंग किया जाने लगा तो पंडित कलयुग के अवतार श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी पर विराजमान श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास अपने 'तिलक जंञू' की रक्षा की विनती लेकर आए। इन पंडितों की अगुआई पंडित किरपा राम कर रहा था। उन्होंने औरंगजेब के जुल्मों की दास्तां गुरु जी को बताई और गुरु जी से रक्षा की मांग की। इसी बीच श्री गुरु तेग बहादर जी और आपके साहिबजादे बाल गोबिंद राय के साथ बातचीत हुई। इस बातचीत के पश्चात गुरु जी ने शरण में आए पंडितों को कहा कि "आप हकूमत से कह दो कि अगर वे गुरु तेग बहादर को मुसलमान बना लें तो हम सब मुस्लिम धर्म कबूल कर लेंगे।" पंडितों ने इसी तरह हकूमत

को जाकर बोल दिया। जब औरंगजेब को इस बात की खबर हुई तो उसे यकीन हो गया कि गुरु जी के पीछे बहुत सारे हिन्दू हैं। अगर उनको इस्लाम कबूल करवा लिया जाए तो वे सब मुसलमान हो जाएंगे। इसी बात को सामने रखते हुए औरंगजेब ने गुरु जी को पकड़ने के लिए अपने सिपाही भेज दिए।

गुरु जी औरंगजेब के इस बुलावे से पहले ही अपने साथ ५ सिखों को लेकर 'तिलक जंञू' की रक्षा के लिए दिल्ली रवाना हो गए। चाहे आपके पूर्वज कभी भी 'तिलक जंञू' के धारक नहीं थे परन्तु यहां प्रश्न धार्मिक आजादी का था अर्थात् जुल्म के विरुद्ध और इन्सानियत के लिए।

अभी आप दिल्ली पहुंचे भी नहीं थे कि आप जी को आगरा में गिरफ्तार कर लिया गया और दिल्ली की कोतवाली 'चांदनी चौक' में कैद कर लिया गया। यहां पर मुगल हकूमत ने आप जी को इस्लाम कबूल करने को कहा कि अगर वे मुसलमान बन जाएं तो उन्हें मुसलमानों का बड़ा पीर बना दिया जाएगा और हर तरह की सुख-सुविधा दी जाएगी। अगर वे ऐसा नहीं करते तो उन्हें कत्ल कर दिया जाएगा। गुरु जी ने उनकी यह बात न मानी। गुरु जी को मौत का डर देने के लिए गुरु जी के साथ गए पांच सिखों में से एक भाई मतीदास जी को आरे के साथ चीर कर शहीद कर दिया। उसके बाद दूसरे सिख भाई दयाला जी को उबलते पानी की देग में डाल कर शहीद कर दिया। तीसरे सिख भाई सतीदास जी को रुई में लपेट कर जिंदा जला कर शहीद कर दिया। यह सब देख कर भी गुरु जी अडोल रहे। इसके बाद खुद गुरु जी को मुगल सिपाहियों ने एक पिंजरे में कैद कर दिया।

कई दिन पिंजरे में कैद रखने के बाद गुरु जी को औरंगजेब की तरफ से तीन बातें पूछी गईं : मुसलमान बन जाओ, नहीं तो करामात अथवा चमत्कार दिखाओ, जिस बल से आप गुरु हो, अगर यह भी नहीं तो कत्ल होने को तैयार रहो।

गुरु जी ने गुरमति के सिद्धांत के मुताबिक न ही मुसलमान होना माना और न ही करामात दिखाई। उन्होंने *"सिरु दीजै काणि न कीजै"* के महान वाक्य पर तीसरी बात यानि मृत्यु कबूल की।

औरंगजेब ने सैयद आदम शाह अथवा जलालदीन जल्लाद को गुरु जी को शहीद करने का हुक्म दे दिया।

गुरु जी को पिंजरे में से निकाल कर चांदनी चौक लाया गया। वहां पर गुरु जी ने सबसे पहले स्नान किया। पास ही एक वृक्ष के नीचे बैठ कर जपु जी साहिब का पाठ किया। पाठ की समाप्ति के बाद जब आपने माथा टेकने के लिए शीश झुकाया तो जल्लाद ने तलवार के तेज वार से आपका पावन शीश धड़ से अलग कर दिया।

यह दुखदाई घटना वृहस्पतिवार शाम के वक्त ११ मार्गशीर्ष, संवत् १७३२ तदानुसार ११ नवंबर, १६७५ ई को हुई। गुरु जी की यह शहीदी धार्मिक आजादी, सरबत्त के भले और जुल्म के खिलाफ थी। श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के बाद यह शहीदी शांति और आत्मा-बलिदान की एक अमर-गाथा है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस घटना का वर्णन अपनी आत्मा-कथा "बचित्र नाटक" में किया है :

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥
साधन हेति इती जिनि करी ॥
सीसु दीआ पर सी न उचरी ॥१३॥ . . .
ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१६॥

श्री गुरु तेग बहादर जी का अमर बलिदान

*-डॉ. दलजीत सिंघ**

नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी का जन्म ५ वैशाख सं. १६७८ तदानुसार १ अप्रैल १६२१ ई को माता नानकी जी की कोख से छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के घर हुआ था। उनका बाल्यकाल गुरु-पिता की छत्र-छाया में बीता। शास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ उन्होंने शस्त्र-विद्या भी हासिल की। श्री गुरु तेग बहादर जी ने केवल १४ वर्ष की आयु में पिता-गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी द्वारा लड़े गए सं. १६९१ में हुए करतारपुर के युद्ध में तलवार के जौहर दिखा कर अपनी वीरता एवं कौशलता का प्रमाण प्रस्तुत किया था।

वे प्रारंभ से ही त्याग की मूर्ति थे। ज़रूरतमंदों की सहायता करते समय वे मूल्यवान वस्तुएं भी दे देते थे। यदि प्रभु के ध्यान में बैठते थे तो घंटों तक ध्यान में लीन रहते थे। इस बीच उनका विवाह माता गुजरी जी के साथ कर दिया गया। माता गुजरी जी भी सिख इतिहास में एक महान स्त्री के रूप में प्रसिद्ध हैं।

पिता-गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने परलोक गमन करने से पहले श्री गुरु तेग बहादर जी को उस समय बकाला गांव में जाकर निवास करने का आदेश दिया। (गुरु) तेग बहादर जी ने गहन् आध्यात्मिक चिंतन अथवा ईश्वर-भक्ति की। ईश्वर-भक्ति अथवा तप-साधना से मनुष्य में एक अद्भुत शक्ति पैदा हो जाती है, जिससे वह किसी से भी डरता नहीं, भयभीत नहीं होता तथा न ही वह किसी को डराता है अर्थात् वह दूसरों के ऊपर अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करता और ज़रूरत पड़ने पर वह सच का पुजारी सच के लिये अपनी जान तक न्यौछावर कर देता है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के उत्तराधिकारी श्री गुरु हरिराय साहिब जी एवं उनके उत्तराधिकारी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने धर्म-प्रचार का काम जारी रखा। मार्च १६६४ ई में श्री गुरु तेग बहादर जी ने लगभग २६ वर्ष तक आध्यात्मिक साधना एवं चिन्तन के पश्चात नौवें गुरु का पद-भार ग्रहण किया। उस समय उनका तेज वर्षा ऋतु के बादलों से निकले सूर्य के समान देदीप्यमान हो उठा था। उनका व्यक्तित्व कुठाली में ढाले गए स्वर्ण के समान कुन्दन हो गया था।

इस बीच दिल्ली में मुगल सम्राट औरंगजेब बैठ चुका था। औरंगजेब ने अपने बाप शाहजहां को कैद कर तथा भाइयों को कत्ल करके राजगद्दी प्राप्त की थी। उसके समय में भारतीय संस्कृति पर किया जाने वाला प्रहार चरम सीमा पर था। हिन्दुओं एवं उनके धर्म-स्थानों पर प्रहार निरन्तर जारी था। हिन्दू जनता इस आतंक की ताव न सह कर दिन-प्रतिदिन ग्लानि और हीन-भावना से ग्रसित होती चली गई। ऐसे आतंक भरे माहौल में सबको एक रक्षक की आवश्यकता थी।

इधर गुरु-पद का भार ग्रहण करते ही श्री

**क्लॉथ मर्चेंट, नियामतपुर, पोस्ट सीतारामपुर, जिला बर्धवान (बंगाल)-७१३३५९, मो. ०९८३२१-५४१७५*

गुरु तेग बहादर जी हिम नदी से निकली जलधारा के समान क्रियाशील हो उठे। उन्होंने शिवालिक की पहाड़ियों में अनंदपुर नामक नगर की स्थापना की। उन्होंने जगह-जगह जाकर धर्म-प्रचार करने का फैसला किया। पंजाब के दौरे के बाद उन्होंने उत्तरी एवं पूर्वी भारत के प्रमुख स्थानों का भ्रमण किया। कुरुक्षेत्र, इटावा, आगरा, इलाहाबाद आदि स्थानों से होते हुए वे बिहार की राजधानी पटना पहुंचे। पटना में अपने परिवार को छोड़कर उन्होंने बंगाल (आज के अनुसार बंगलादेश) एवं आसाम का दौरा किया। गुरु जी ने जगह-जगह भ्रमण कर लोगों को जागृत किया। उन्होंने अपनी बाणी के द्वारा लोगों में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का प्रकाश फैलाया तथा पथ-भ्रष्ट जनता को सशक्त प्रेरणा दी, ताकि वह सब प्रकार की मानसिक एवं भौतिक दास्तां के बंधनों से मुक्त हो सके। उनका सिद्धांत था—"न किसी से डरो और न किसी को डराओ।"

गुरु जी की ख्याति धीरे-धीरे सारे भारतवर्ष में फैल गई। लोग अब अत्याचार (सामाजिक अथवा राजनीतिक) के खिलाफ आवाज उठाने लग गए। इस अभियान की सूचना जब औरंगजेब को मिली तो वह उनकी तरफ से चिन्तित हो गया और उन्हें धार्मिक नेता समझने के बजाय अपना राजनीतिक शत्रु समझने की भूल कर बैठा।

इस बीच धर्मान्ध शासक औरंगजेब का हिन्दुओं के ऊपर अत्याचार बढ़ता जा रहा था। लाखों हिन्दू मौत के घाट उतारे जा चुके थे। उन दिनों कश्मीर के पंडित विशेष तौर पर विद्वान एवं मुखी समझे जाते थे, अत: वे ही विशेष करके जुल्म का शिकार होते थे। पांच सौ कश्मीरी पंडितों का एक समूह पंडित कृपा राम के नेतृत्व में मदद मांगने के लिये श्री गुरु तेग बहादर जी के दरबार में पहुंचा। उन्होंने अपने ऊपर हो रहे अत्याचार का वृत्तांत सुनाया तथा हिन्दू संस्कृति को विनाश से बचाने के लिये नेतृत्व एवं मदद मांगी। जैसे कोई निराश रोगी डाक्टर के पास पहुंच कर अपनी व्यथा रोकर बताता है, ठीक वैसी ही दशा उस समय उन लोगों की थी। अत्यन्त ही दयनीय दशा देख कर श्री गुरु तेग बहादर जी ने उन लोगों को सांत्वना देते हुए भरोसा दिलाया एवं कहा कि आप जाइए एवं औरंगजेब से कह दीजिए कि यदि श्री गुरु तेग बहादर साहिब इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगे तो हम लोग भी अपने आप ही इस्लाम धर्म में चले आयेंगे।

असल में श्री गुरु तेग बहादर जी इस रोग की गंभीरता को समझ चुके थे कि भारतवर्ष की जनता बहादुरों की मौत मरना भूल चुकी है। जनता भय से असहाय होकर मौत को गले लगा रही है। कायर रोज-रोज मरता है, बहादुर एक बार मरता है। गुरु जी जानते थे कि उन पंडितों का साथ देना उनके लिये भी खतरा है, पर महापुरुष इन खतरों से नहीं डरते। जिस तरह किसी को क, ख, ग . . . सिखाने के लिए खुद लिखकर दिखाना पड़ता है, पानी में तैरना सिखाने के लिए खुद तैर कर दिखाना पड़ता है . . ., इसी तरह किसी को शहीर होना सिखाने के लिए खुद शहीद होकर दिखाना पड़ता है, ऐसा ही विचार गुरु जी का था। अत: गुरु जी ने औरंगजेब के दमन एवं अमानवीय अत्याचारों का विरोध करना आरंभ कर दिया।

असहायों की मदद करना, उनको सहारा देना, उनका मनोबल ऊंचा करना, ये सब औरंगजेब से सहा नहीं गया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सत्य एवं सत्ता के मध्य लड़ाई

शुरू से होती आई है, संतों एवं हुक्मरानों के बीच द्वंद होते आये हैं। औरंगजेब के सिपाही गुरु जी को आगरे के निकट गिरफ्तार कर तथा पिंजरे में कैद कर दिल्ली ले आये।

गुरु जी को भयभीत करने के लिये उनके सामने ही एक शिष्य (सिख) भाई मतीदास जी को आरे से चीर दिया गया, दूसरे शिष्य भाई सतीदास जी को रूई में लपेट कर आग से जला दिया गया एवं तीसरे शिष्य भाई दयाला जी को खुले बर्तन में उबलते हुए पानी में बैठा कर शहीद कर दिया गया। इसके बावजूद 'न डरो न डराओ' का पाठ पढ़ाने वाले गुरु जी अडोल बैठे रहे भयमुक्त होकर। इस तरह गुरु जी के सामने ही सिख कौम के शूरवीर एवं भारत के तीन सपूतों ने हंसते-हंसते गुरबाणी का पाठ करते हुए शहादत का जाम पी लिया। अंत में दिल्ली के चांदनी चौक में एकत्रित भीड़ के सामने ११ मार्गशीर्ष सं. १७३२ तदानुसार ११ नवंबर १६७५ ई को श्री गुरु तेग बहादर जी को शहीद कर दिया गया। जहां गुरु जी की शहादत हुई, वहां पर एक आलीशान गुरुद्वारा सीसगंज साहिब सुशोभित है। गुरु जी ने अपना शीश तो दे दिया, पर अपनी बात पर दृढ़ता से कायम रहे। वे स्वयं को शहीद करवा कर देशवासियों को शहीद होना सिखा गए।

अपने धर्म अथवा आस्था के लिए यदि किसी समय बलिदान की जरूरत पड़ जाए तो कई लोग तैयार हो जायेंगे, परन्तु यदि दूसरे धर्म पर हमला हुआ हो तो उस अत्याचार के विरुद्ध कुर्बानी देने वाला शायद ही कोई सामने आए। धन्य है श्री गुरु तेग बहादर जी, जिन्होंने तिलक और जनेऊ के धारणी न होते हुए भी तिलक और जनेऊ की रक्षा के लिए अपने आप को कुर्बान कर दिया। इस शहादत के बारे में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस तरह लिखते हैं :

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥ . . .
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥

(बचित्र नाटक पा: १०)

इस शहादत के बारे में अंग्रेज लेखक मैकालिफ लिखता है—"दुनिया की किसी भी घटना से इसकी तुलना नहीं की जा सकती, यह अपने आप में एक आलौकिक और अनोखी घटना है।"

श्री गुरु तेग बहादर जी का समस्त जीवन आत्म-बल की प्राप्ति, अत्याचार के प्रति विद्रोह तथा धर्म की विजय के प्रतीक के रूप में परिलक्षित होता है। एकांत का परित्याग कर जब आप गुरगद्दी पर आसीन हुए तो आपके सामने अनेक धार्मिक एवं सांसारिक समस्यायें उपस्थित थीं। आध्यात्मिक चेतना को जगाने के लिए आपने देश के विभिन्न भागों की यात्रायें कीं। ऐसे समय में जब मुगल शासन के अत्याचारों को स्थानीय जनता अपनी नियति मान बैठी थी, आपने भ्रमण कर अपने उत्साही उपदेशों से उन्हें अनुप्रमाणित किया। आपकी बाणी हृदय के अंदर एक नई चेतना को उजागर करती है। आपकी बाणी में हर एक निर्बल, असहाय, परेशान एवं दुखी मन में एक नया उत्साह, साहस और शक्ति पैदा करने की अद्‌भुत क्षमता है। उन्होंने तृष्णा, माया, लालच, काम आदि के दुष्चक्र में फंसे व्यक्तियों के लिए संसार में रहते हुए, सामाजिक दायित्वों को निभाते हुए, शांति, वैराग्य एवं करुणा का संदेश दिया। मुगल शासन से पीड़ित राष्ट्र-निवासियों के स्वाभिमान की रक्षार्थ दी गई शहादत ने भारतीय इतिहास को एक नया मोड़ दिया तथा

देशवासियों के अंदर स्वगरिमा एवं स्वाभिमान की नवीन अलख जगाई। श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा उच्चरित बाणी की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ (पन्ना १४२७)

अर्थात् वही ज्ञानी कहलवाने के योग्य है, जो न किसी को भय दिखाता है और न किसी का भय स्वीकार करता है। गुरु जी ने 'जीओ और जीने दो' की तरह का एक नारा दिया- 'न डरो और न डराओ।' भय-मुक्त समाज के लिये यह एक सशक्त नारा है।

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥ (पन्ना ६८४)

अर्थात् गुरु जी का संदेश था कि मनुष्य को घर-गृहस्थी को त्याग कर जंगल में भटकने की जरूरत नहीं, क्योंकि ईश्वर जंगल में वास नहीं करता, बल्कि वह जीव के हृदय में उसी तरह वास कर रहा है जिस तरह पुष्प में सुगंध और शीशे में परछाई।

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥ (पन्ना ६३३-३४)

अर्थात् जो मनुष्य दुख के दिनों में दुखी नहीं होता, सुख के समय मोह में नहीं फंसता, सोने को मिट्टी के समान मानता है, न किसी की निन्दा करता है और न किसी झूठी प्रशंसा करता है तथा लोभ, मोह एवं अहंकार से दूर रहता है। जो खुशी अथवा शोक के समय, सम्मान अथवा अपमान के समय अपने हृदय को व्यथित नहीं करता, जो मन की भटकनाओं का त्याग करके संसार में स्थिर रहता है एवं जिसे काम, क्रोध स्पर्श नहीं करते, उसी के हृदय में ईश्वर वास करता है।

जाग लेहु रे मान जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥
मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
जीउ छुटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥
जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥ (पन्ना ७२६-२७)

मनुष्य को झकझोरने के लिए गुरु जी मन को सम्बोधित करते हुए कहते हैं, ऐ मन! तू जाग, तू बड़ी गहरी नींद सोया हुआ है। तुझे पता नहीं कि जो यह शरीर तुझे मिला है, वह भी तेरे साथ जाने वाला नहीं। माता, पिता, पुत्र एवं मित्र, जिनके साथ तू इतना हित बांधे हुए हैं, जब इस शरीर से 'जीव' चला जाएगा, तो वे ही सब मिल कर तुझे अग्नि में जला डालेंगे। ऐ मन! यह अच्छी तरह समझ ले कि जीवित रहने तक ही इस संसार के साथ सम्बंध है, इसलिये तू हरि के गुण गा ले, क्योंकि इसके अलावा बाकी सब कुछ स्वप्न के समान है।

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥
संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥

काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥
जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥
जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥
(पन्ना ७२७)

अर्थात् ऐ नासमझ मन! उस प्रभु के गुण गा ले, जो अन्त समय में तेरे साथ जायेगा, क्योंकि प्रभु के गुणगान करने का जो तुझे अवसर मिला है, वह धीरे-धीरे बीतता जा रहा है। सम्पत्ति, रथ, स्त्री, राज-सत्ता आदि के साथ जो तुमने सम्बंध जोड़ रखा है, जब काल रूपी फंदा गले पर कस जायेगा तो ये सारे सम्बंध पराये हो जायेंगे। मोह-माया में फंसे हुए ऐ बावरे! तूने जान-बूझ कर अपना काम बिगाड़ लिया है क्योंकि पाप करते हुए तुझे कोई संकोच नहीं होता और न ही तूने अहंकार का त्याग किया है। हे भाई! ध्यान से सुनो! गुरु के उपदेशों पर चलते हुए प्रभु की शरण में आ जाओ।

भारतीय संस्कृति के महान रक्षक श्री गुरु तेग बहादर जी के शहीदी दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाना चाहिये, ऐसी मांग हम भारत सरकार से करते हैं।

सर्वधर्म सम्भाव प्रणेता श्री गुरु नानक देव जी

(पृष्ठ २४ का शेष)

सिख विचारधारा मुख्यतया तीन सिद्धांतों- (१) नाम जपना (ईश्वर-भक्ति) (२) किरत करना (परिश्रम की कमाई और सच्चा जीवन) (३) वंड छकना (हर जरूरतमंद और दीन-दुखी की मदद करना) पर आधारित है। गुरबाणी के अनुसार ईश्वर एक है, जो जन्म-मरण रहित और हर वस्तु में विद्यमान है, जिसका न कोई रूप है और न ही कोई रंग है। शरीर नाशवान है, जो हवा, पानी, मिट्टी, अग्नि, आकाश के पांच तत्वों से निर्मित है, पर शरीर में समाई हुई आत्मा अमर है, जो जन्म-मरण से परे है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी दुर्गुणों से बचते रहना चाहिये। सबसे छोटा और सीधा रास्ता सत्य, सतसंग, सेवा, सुमरिन है, जहां 'सत्य बोलो, सत्य सोचो, सत्य करो' ही आदर्श है। कर्त्तव्य और त्याग-भावना से परिपूर्ण गुरु जी का जीवन कहीं भी अपने लिये नहीं रहा, अपितु आदर्श से प्रेरित, आदर्श को समर्पित और आदर्श को आचरण में व्यक्त करते हुये दिव्य महापुरुष का जीवन है, जहां अधिकार के स्थान पर कर्त्तव्य की भावना ही निहित है। गुरु जी द्वारा दिखाये सत्य, शाश्वत सिद्धांतों, आदर्शों का अनुसरण ही प्रेरणा-स्रोत है, जो युग के घने अंधकार से निकालकर नई रोशनी दे सकता है। आओ! श्री गुरु नानक देव जी के प्रति आज हम सच्ची श्रद्धा धारण करके उनके दर्शाये जीवनमार्ग पर चलने का प्रयास करें :

फूलों के बदले हे गुरुवर, हम भाव पिरोकर लाए हैं।
कर्त्तव्यों में निष्ठा भर दो, अभिलाषा लेकर आए हैं।
तन-मन-धन अर्पण करने का, दृढ़ भाव समर्पित है तुमको।
हे युग-द्रष्टा, हे युग स्रष्टा, सद्भाव समर्पित है तुमको।

अमर बलिदानी श्री गुरु तेग बहादर जी

-डॉ. तिलकराज गोस्वामी*

अगस्त मास की एक भीगी सुबह। नयी दिल्ली में लोक-सभा मार्ग के समीप स्थित गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब का मुख्य द्वार। हमारे पग एक मनोरम बीथिका से होते हुए मुख्य भवन की ओर अग्रसर हो रहे थे। लाउडस्पीकर द्वारा प्रसारित हो रही गुरबाणी की पवित्र ध्वनि कानों में पड़ रही थी और मेरे अन्त:स्थल में श्रद्धायुक्त भावनाओं का समुद्र उमड़ रहा था। सोच रहा था कि कुछ ही क्षणों बाद मैं उस पावन स्थल पर अपना मस्तक नत करूंगा, जहां आज से तीन सौ तेंतीस वर्ष पूर्व लक्खी शाह बंजारा नामक एक सिख ने अपनी कुटी के आंगन में उस युग-प्रवर्तक महापुरुष का दाह-संस्कार सम्पन्न किया था, जिसने तत्कालिक पीड़ित हिंदू धर्म एवं देश-कौम के स्वाभिमान की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति देकर सम्पूर्ण राष्ट्र को नवजीवन और नवचेतना दी थी। वह महान विभूति थे सिख धर्म के नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी। शौर्य, त्याग, स्वभाषा और स्वदेश-प्रेम जैसे गुण उन्हें अपने वीर पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से विरासत में प्राप्त हुए थे। उन्हें मुगल सत्ता से लोहा लेने वाले महान वीर योद्धा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पिता होने का गौरव प्राप्त हुआ था। संसार में शायद ही कोई ऐसा परिवार हुआ हो जिसके इतने सदस्यों ने धर्म की रक्षा हेतु हंसते-हंसते निज प्राण न्यौछावर किये हों। उनके चारों पोते (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्र) धर्म की बलिवेदी पर शहीद हुए। उनके सपुत्र और पौत्रों के अलावा उनकी वीर पत्नी माता गुजरी जी को भी धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने पड़े। मेरा मन तीन सौ तेंतीस वर्ष पूर्व के घटनाक्रम में खो गया था। श्री गुरु तेग बहादर जी की शौर्य-गाथा का एक-एक सूत्र मेरे सामने आ रहा था।

श्री गुरु तेग बहादर जी का प्रारंभिक नाम श्री त्यागमल था। एक बार युद्ध में उन्होंने अपनी तेग-तलवार से अपने शौर्य के अद्‌भुत जौहर दिखाये। उनकी वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उन्हें 'तेग बहादर' की पदवी से सुशोभित किया। सिख धर्म के आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के देहावसान के बाद गुरगद्‌दी पाने के लिए गुरु जी के वंश के कतिपय सदस्यों में परस्पर काफी रस्साकसी हुई। अंत में मार्च, १६६५ में श्री गुरु तेग बहादर जी गुरगद्‌दी पर आसीन हुए। गुरु-पद प्राप्ति के बाद वे धर्म-प्रचार के लिए भारत के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों की यात्रा पर निकल पड़े। सर्वप्रथम उन्होंने सतलुज के किनारे नैना देवी पर्वत के समीप कहलूर के राजा से जमीन खरीदकर वहां 'चक्क नानकी' नामक नगर बसाया जो कि बाद में अनंदपुर साहिब के नाम से विख्यात हुआ। वहां उन्होंने एक गुरुद्वारा भी बनवाया। यह ज्ञात हो कि अनंदपुर साहिब बाद में खालसा-पंथ का उद्‌गम-स्थल बना। अनेक सिख-पर्वों पर लाखों श्रद्धालु यहां पधारते हैं। कुछ समय यहां रहने के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी अवध, बिहार, बंगाल

*'आकांक्षा', ९१-सी/८-सी, सर्वोदय नगर भारद्वाजपुरम, इलाहाबाद-२११००६ (उ. प्र.)।

और मालवा प्रदेशों में गये। सन् १६६६ में वे अपने महिल सहित पटना गये। अपने महिलों तथा अन्य परिवार को वहां विश्वासपात्र श्रद्धालुओं की सेवा में छोड़ स्वयं धर्म प्रचार हेतु लंबी यात्रा पर चल पड़े। वहां माता गुजरी जी की कोख से पुत्र-रत्न का प्रादुर्भाव हुआ। समयान्तर में ये सिखों के दसवें गुरु और खालसा पंथ के प्रवर्त्तक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के रूप में जाने गए।

उन दिनों देश के बहुत बड़े भाग में मुगल सम्राट औरंगजेब का शासन था। उसने हर संभव उपाय से देश की शासन-व्यवस्था को कट्टर हठधर्मी ढंग से चलाने का संकल्प कर रखा था तथा उसके द्वारा हिन्दुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये जा रहे थे।

इन अत्याचारों से पीड़ित सैंकड़ों कश्मीरी पंडित श्री गुरु तेग बहादर जी की शरण में अनंदपुर साहिब पहुंचे। उन्होंने दिनों-दिन बढ़ रहे इन कष्टों के निवारण हेतु गुरु महाराज से प्रार्थना की। उनकी दुख भरी कहानी सुनकर वे गहन चिंतन में पड़ गये। वे कोई उपाय खोज ही रहे थे कि बाल गोबिंद राय वहां पहुंच गये और गुरु-पिता को चिंतन-मुद्रा में देखकर कारण जानने की इच्छा प्रकट की। गुरु महाराज ने बाल गोबिंद राय के सामने ही आये हुए पंडितों को धैर्य बंधाते हुए कहा—"ऐसे समय में किसी महान विभूति की आहुति की देश को आवश्यकता है। यदि देश का सबसे बड़ा धर्मनिष्ठ व्यक्ति धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे तो अवश्य ही राष्ट्र का कल्याण होगा।" नौ वर्षीय बाल गोबिंद राय उसी समय बड़ी गम्भीरता से पिता से बोले— "पिता जी! आपसे बड़ा धर्मनिष्ठ महापुरुष इस देश में कौन है? देश तथा धर्म की रक्षा अब आपके हाथों में है।" गुरु-पुत्र के शब्द सुनकर सभी लोग चकित रह गये और वे गुरु-मुख की ओर निहारने लगे। तब गुरु साहिब ने उन कश्मीरी पंडितों से कहा—"तुम लोग सूबेदार से कह दो कि यदि गुरु तेग बहादर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेंगे तो हम सभी स्वतः मुसलमान हो जायेंगे।"

श्री गुरु तेग बहादर जी की कश्मीरी पंडितों से हुई भेंट का समाचार जब औरंगजेब तक पहुंचा तो उसने गुरु महाराज को तुरंत दिल्ली पहुंचने के लिए आदेश भेजा। गुरु जी जब अपने कतिपय सिखों के साथ दिल्ली आ रहे थे तो रास्ते में वे शाही सैनिकों द्वारा बंदी बना लिये गये। फिर वे दिल्ली लाये गये, जहां औरंगजेब की आज्ञा से उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहा गया। तब उन्होंने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया—"मैं इस संसार में धर्म की रक्षा के लिए आया हूं न कि उसे त्यागने के लिए। किसी प्रलोभन अथवा दबाव में आकर निज-धर्म बदलना पथ-भ्रष्ट अधर्मियों का काम होता है। मृत्यु प्रत्येक व्यक्ति के लिए अटल है।"

उनका उत्तर सुनकर काजी बौखला उठा और गुरु साहिब पर कुफ्र का फतवा लगाकर उन्हें मृत्यु-दंड का आदेश सुना दिया।

अब मुगल शासन द्वारा गुरु महाराज तथा उनके अनुयायियों को क्रूर यातनाएं दी जाने लगीं। उनके एक सिख भाई मती दास को आरे से चीर कर शहीद किया गया। दूसरे सिख भाई दयाला जी को भी उबलते हुए पानी की देग में बिठा कर शहीद कर दिया गया। तीसरे सिख भाई सती दास जी को रुई में लपेट कर आग लगा कर जिंदा जला शहीद कर दिया गया। मुगल अधिकारियों ने गुरु महाराज को लोहे के पिंजरे में बंद कर दिया।

आखिर ११ मार्गशीर्ष, संवत् १७३२ को शाही पहरेदारों के संरक्षण में श्री गुरु तेग बहादर जी दिल्ली के चांदनी चौक लाये गये।

औरंगजेब के फरमान से सैकड़ों लोगों के सामने जल्लाद ने उनका पावन शीश धड़ से अलग कर दिया। सम्राट ने अपनी आज्ञा में कहा था कि लाश चांदनी चौक से हटायी न जाये, बल्कि उसे वहीं पड़े-पड़े सड़ने दिया जाये। कहते हैं, उस समय भयानक आंधी चलने लगी, चारों ओर घटाटोप अंधकार छा गया। ऐसा लगता था जैसे इस घोर अत्याचार से पृथ्वी कांप रही हो। जनता शोक के सैलाब में डूब गयी। सब ओर लोग औरंगजेब को बुरा-भला कहने लगे। इस घटाटोप वातावरण में गुरु साहिब के श्रद्धालु भाई जैता जी ने गुरु जी का पावन शीश उठा लिया और सतर्कता व सावधानी से पावन शीश सहित अनंदपुर साहिब आ पहुंचा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई जैता जी का स्वागत करते हुए उसे अपनी छाती से लगाया और उसे 'रंगरेटा गुरु का बेटा' कह कर विशेष सम्मान व प्यार दिया। गुरु साहिब के पावन शीश का श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्रद्धापूर्वक दाह-संस्कार किया।

चांदनी चौंक में गुरु जी के पड़े धड़ को भाई लक्खी शाह बंजारा नामक एक सिख उठाकर अपने घर ले गया और वहीं अपने हाथों अपने मकान को अग्नि लगाकर दाह-संस्कार सम्पन्न किया। दिल्ली के चांदनी चौंक में वह स्थान, जहां गुरु जी को शहीद किया गया था, आज गुरुद्वारा सीसगंज साहिब के नाम से जाना जाता है और जहां भाई लक्खी शाह बंजारे ने उनके धड़ की अन्त्येष्टि की थी, वह स्थान आज गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब के नाम प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है।

देश और धर्म हेतु बहा रक्त बेकार नहीं जाता। उर्दू के किसी शायर ने कहा है— 'शहीद की जो मौत है, वो कौम की हयात है।' बलिदानी का रक्त तो निर्जीव जाति में नवजीवन एवं नवचेतना भर देने की क्षमता रखता है। श्री गुरु तेग बहादर जी के महान अद्वितीय बलिदान ने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध लड़ने के लिए सिख कौम को नयी शक्ति प्रदान की। उनके महान बलिदान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबजादों, बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा अन्य सहस्रों वीरों को क्रूर शासकों की कट्टर धार्मिक नीति के विरुद्ध आंदोलन करते हुए अपने प्राणों की आहुतियां देने के लिए प्रेरित किया। वे भारतीय, जिन्हें आततायियों ने अपने पैरों तले रौंदा था, उठे और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा अन्य सेनानियों के नेतृत्व में मुगल सत्ता के विरुद्ध जान हथेली पर रख कर लड़े। इतिहास गवाह है कि श्री गुरु तेग बहादर जी की शहीदी से 'खालसा फौज' के रूप में भड़की ज्वाला मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण बनी।

आपका पत्र मिला

गुरु महिमा

हमारे देश में पुराने समय में गुरुकुल आश्रम की प्रथा थी, जहां पर बालक २५ वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करते थे तथा वहीं पर गुरु जी की सेवा में निवास करते थे और उन दिनों में गुरुओं की आज्ञा को शिष्य शिरोधार्य करते थे और गुरु की आज्ञा के बिना एक कदम भी आगे नहीं चलते थे, परन्तु आज आधुनिक युग में गुरु महिमा पूर्णतया आलोप हो चुकी है। कारण कि न तो आदर्श गुरु रहे हैं और न चेले।

आज अधिकतर आधुनिक शिक्षक बच्चों के सामने मोबाइल से बातें करना, सिगरेट पीना तथा और भी कई तरह के नशे करना ही अपना गौरव समझते हैं। जबकि ये अशोभनीय कार्य करने पर बच्चों पर कितना बुरा असर पड़ता है। आज कितने स्वदेशी अध्यापक हैं, सभी पाश्चात्य सभ्यता में डूबे हुए हैं। वे क्या बच्चों का भविष्य बनायेंगे? आज हम सभी यह संकल्प लें कि हम सदैव अपने गुरुओं का सम्मान करेंगे।

-आर. एल. यानवी जिला नागौर (राज.)

भक्त नामदेव जी की भक्ति का सगुण से निर्गुणवादी स्वरूप

-डॉ. रामनिवास शर्मा*

भक्त नामदेव जी का समय सन् १२७० से १३५० तक माना जाता है। "आप वारकरी सम्प्रदाय के श्रेष्ठतम प्रचारक थे। आपकी काव्य रचना ने न केवल मराठी की अपितु हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की। संत ज्ञानेश्वर ने ब्रह्म-विद्या को लोकसुलभ बनाकर उसका महाराष्ट्र में प्रचार किया तो भक्त नामदेव जी ने महाराष्ट्र से लेकर पंजाब तक उत्तर भारत में हरि-नाम की वर्षा की। उन्होंने अपनी भक्ति-रस-भीनी अभंग रचना द्वारा साधारण-जनों के हृदयों पर भक्ति का अमिट प्रभाव डाला। भक्त नामदेव जी का महाराष्ट्र में वही स्थान है जो भक्त कबीर जी अथवा भक्त सूरदास जी का उत्तरी भारत में है।"[१]

"भक्त नामदेव जी का सारा जीवन मधुर भक्ति-भाव से ओत-प्रोत था। आपके दादा श्री परिशेट जी तथा पिता श्री दामाशेट शिंपी (दर्जी) पंढरपुर के विट्ठल के भक्त थे। विट्ठल-भक्ति भक्त नामदेव जी को विरासत में मिली। विट्ठल-भक्ति की दिव्य परम्परा से संस्कारित होने के कारण बचपन से ही भक्त नामदेव जी विट्ठल-प्रेम में रंग गये थे।"[२]

भक्त नामदेव जी के समय में नाथ और महानुभाव पंथ प्रचलित थे। नाथ मत स्पष्ट रूप से अलख निरंजन की योगपरक साधना का समर्थक और बाह्याडंबरों का विरोधी था।

"ब्रह्म किसी मंदिर में नहीं सब जगह है। यह बात नाथपंथी 'बिसोबाखेचर' ने विशेष रूप से प्रचारित की और भक्त नामदेव जी को, जो पंढरपुर के बिसोबा के बड़े भक्त थे, अपने मत में मिला लिया।"[३]

"भक्त नामदेव जी ने मुकता बाई और ज्ञानेश्वर की प्रेरणा से बिसोबाखेचर से दीक्षा लेने का संकल्प किया। बिसोबाखेचर ने भक्त नामदेव जी को भगवान की व्यापकता का बोध करा दिया। उनकी सगुण-भक्ति में निर्गुण-ज्ञान का समावेश हो गया, जिससे उनकी दृष्टि व्यापक हो गई, उनके भगवान व्यापक हो गये, पंढरपुर के मंदिर से निकल कर सारे विश्व में छा गये।"[४]

उपर्युक्त कथन इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि आप गुरु-उपदेश से पूर्व सगुणोपासक थे, लेकिन गुरु विसोबाखेचर से निर्गुण-निराकार की शिक्षा प्राप्त कर इनमें आपेक्षित परिवर्तन हुए। ये अपने आराध्य विट्ठल से एक क्षण भी अलग नहीं होते थे। इनके अनुसार माधव के मिलते ही ठाकुर और जन में एकाकार हो जाता है :

बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥
ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥१॥रहाउ॥
आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥
जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥१॥
आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥
कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू

**रीडर, हिन्दी विभाग, पंजाबी युनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२*

पूरा ॥२॥ *(पन्ना १२५२)*

निस्संदेह भक्त नामदेव जी प्रारंभ में सगुणोपासक थे परन्तु गुरु बिसोबाखेचर से दीक्षित होने के उपरांत निर्गुणोपासक बने। अब इनका राम संकुचित घेरे में आबद्ध न होकर अणु-अणु में व्याप्त है। उसे कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं। वह तो घट-घट में व्यापक है। उसे केवल एक निष्ठ साधना के द्वारा ही पाया जा सकता है। यह निर्गुण ब्रह्म सम्पूर्ण सृष्टि में समाहित है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥ *(पन्ना ९८८)*

उस पारब्रह्म के अनेक नाम हैं, अनेक रूप हैं। इस सृष्टि की संरचना उसी की लीला का विस्तार है। जल और तरंग में कोई भिन्नता नहीं। तरंग उस जल का ही रूप है :

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥
माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥
सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥
सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥१॥रहाउ॥
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई ॥
इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥ . . .
कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥
घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥ *(पन्ना ४८५)*

अर्थात् एक पारब्रह्म पूर्ण स्वरूप व्यापक अनेकता में प्रकट होता है, जहां देखो वहां वही दृष्टिगोचर होता है। चित्र-विचित्र रूप में प्रकट होने वाली विश्व-मोहनी शक्ति माया को बिरला ही कोई समझ सकता है। सर्वत्र गोबिंद ही गोबिंद है, गोबिंद के बिना अन्य वस्तु विश्व में नहीं है। हजारों मणियों में भी जैसे एक ही सूत्र विद्यमान रहता है, इसी प्रकार उसी प्रभु की लीला का सर्वत्र विस्तार है। जल-तरंग, फेन और बुलबुले जिस तरह स्वतंत्र रूप धारण करते हुए भी अपने मूल जल-स्वरूप से भिन्न नहीं होते हैं, उस जल से पैदा होने वाले ही अलग-अलग रूप हैं। मूल तत्त्व जल ही है। जल-तरंग न्याय के उदाहरण द्वारा विश्व भर में उसी की अनुभूति करायी गई है। भक्त कबीर जी ने भी इसी प्रकार भिन्नत्व में एकत्व अनुभव किया। कभी विट्ठल की मूर्ति पर भोग चढ़ाने वाले भक्त नामदेव जी अपनी साधना के दूसरे चरणों में मूर्ति-पूजा का निषेध करते हुए आंतरिक साधना पर बल देते दिखाई देते हैं :

भैरउ भूत सीतला धावै ॥
खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥१॥
हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥
आन देव बदलावनि दैहउ ॥१॥रहाउ॥
सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥
बरद चढे डउरू ढमकावै ॥२॥
महा माई की पूजा करै ॥
नर सै नारि होइ अउतरै ॥३॥
तू कहीअत ही आदि भवानी ॥
मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥४॥

गुरमति राम नाम गहु मीता ॥
प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥ (पन्ना ८७४)

वारकरी मत में एक देवोपासना का महत्त्व है। भूत, भैरव, शीतला आदि के पीछे दौड़ने वाली जनता को जागृत करने के लिए ही उन्होंने ऐसी डाट सुनाई।

भक्त नामदेव जी चित्त की शुद्धि पर और विशुद्ध-भक्ति पर अत्यधिक जोर देते थे। उपवास, जप, तप, अनुष्ठान, तीर्थ-यात्रा इत्यादि को वे अंतःशुद्धि का साधन मानते थे। यदि उपर्युक्त धार्मिक आचारों से चित्त की शुद्धि नहीं होती तो वे उनको व्यर्थ मानते थे। वे कहते हैं, "यदि तीर्थ-यात्रा करके मन अवगुणों से भरा हुआ रहता है तो उससे क्या लाभ है? यदि तप से मन में अनुताप नहीं पैदा होता तो उससे क्या लाभ है? संक्षेप में, वे हृदय की पवित्रता को ही परमेश्वर की प्राप्ति के लिए प्रमुख साधन मानते थे। अन्य सब साधन व्यर्थ हैं। जो साधक चित्त की शुद्धि पर और आचरण की पवित्रता पर जोर देता है वह तो वाह्याडम्बरों की तीव्र आलोचना करता है। उन्होंने एक चुटकीले अभंग में कहा— "बहुरूपिया और नट बनकर सिर पर जटाओं का भार बढ़ाना, भस्स लगाना, हाथ में दण्ड धारण करना, त्रिपुण्ड-सा तिलक लगाना, देह पर चन्दन लेप लगाना, कण्ठ में तुलसी की अनेक मालाएं लटकाए रखना इत्यादि सब वाह्याचार तब तक व्यर्थ हैं जब तब कि सर्वव्यापक पारब्रह्म को चित्त में धारण नहीं किया। तिलक, टोपी, माला धारण कर भोले भक्त भले ही भ्रम में डाले जा सकते हैं पर वास्तव में सब व्यर्थ है।"[५]

वाह्याडम्बरों का विरोध कर शुद्ध चित्त से, नाम-सुमिरन करने से परमेश्वर की प्राप्ति होती है, ऐसा भक्त नामदेव जी ने बार-बार कहा :

बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै
अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै
राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१॥
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥१॥रहाउ॥
गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुंभि जउ केदार
न्हाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥
कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले
गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥
(पन्ना ९७३)

भक्त नामदेव जी की रग-रग में भक्ति-भाव समाया हुआ था। वे प्रभु के अनन्य भक्त थे। उन्हें प्रभु-नाम के सिवाय इस संसार में कोई वस्तु प्रिय न थी। वे कहते हैं—"न मुझे बैकुण्ठ की चाह है, न कैलाश की आकांक्षा है। मैंने अपनी सब अभिलाषाएं विट्ठल के चरणों पर ही अर्पित की हैं। न मुझे संतान चाहिए, न धन-मान, मेरे लिए तो एक विट्ठल का ध्यान ही सब कुछ है।"

"भक्त नामदेव जी की प्रभु-भक्ति के कई रूप हैं। वे कभी प्रेमवश होकर विट्ठल के दर्शन के लिए बिछुड़े हुए बालक की तरह छटपटाते हैं, कभी आराध्यदेव (प्रभु) के चरणों में झुक जाते हैं, कभी प्रेम-विह्वल होकर रोने लगते हैं, कभी प्रभु के प्रति बालक जैसे रूठ जाते हैं और कभी विट्ठल से लड़ पड़ते हैं। उनके अभंगों में प्रेम के सब प्रकार सरसता से प्रकट हुए हैं।"[६]

भक्त नामदेव जी भक्ति में गुरु-कृपा की आवश्यकता का अनुभव करते हैं, क्योंकि :

जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥
जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥ . . .
जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥
जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ (पन्ना ११६६)

"साधना रहस्यमय है, अतः पोथी नहीं। भक्ति मत में गुरु का ही महत्त्व मान्य है। गुरु-कृपा के बिना साधक का चित्त विकल्प को जीत नहीं सकता, अतः गुरु के महात्मय के विषय में संतों ने अनेक पद कहे हैं और परवर्ती कबीर-पंथ में गुरु को पारब्रह्म से भी अधिक उच्चतर पद दे दिया गया है।"[७]

नाम-दान प्राप्त होने के बाद सगुण-साधक भक्त नामदेव जी पूर्णरूपेण निर्गुणवादी भक्त हो गये। गुरु विसोभाखेचर की कृपा से उन्हें निराकार परमेश्वर का अनुभव हुआ। इस प्रकार नाम प्राप्त करने के बाद मंदिर व मूर्तियां भक्त नामदेव जी को नहीं बांध सकीं। विट्ठल या बीठल अब किसी एक मूर्ति का नाम नहीं रहा, न ही किसी एक अवतार का। भक्त नामदेव जी के लिए वह सर्व संसार में व्याप्त परम पिता परमेश्वर का प्रतीक हो गया, ऐसा परमेश्वर जो कि कई रूपों में अपने आप को प्रकट करता है और जिसे अपने गुरु की कृपा से उन्होंने पा लिया था।

संदर्भ

१. प्रो. भी. गो. देशपांडे, मराठी का भक्ति-साहित्य, पृष्ठ ७१. (प्रकाशक, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी-१, संस्करण सन् १९५९.)

२. प्रभाकर सदाशिव पण्डित, महाराष्ट्र के संतों का हिन्दी काव्य, पृष्ठ १९ (प्रकाशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजश्री पुरुषोत्तम दास टण्डन हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ, संस्करण सन् १९९९ ई)

३. आचार्य विनय मोहन शर्मा, हिन्दी को मराठी संतों की देन, पृष्ठ ९७-९८ (प्रकाशक बिहार-राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, संस्करण सन् १९५७ ई)

४. उपर्युक्त, पृष्ठ १०७-१०८

५. प्रो. भी. गो. देशपांडे, मराठी का भक्ति साहित्य, पृष्ठ ७८

६. उपर्युक्त, पृष्ठ ७७

७. डॉ. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, संत-वैष्णव काव्य पर तान्त्रिक प्रभाव, पृष्ठ २४१ (प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर, हास्पिटल रोड, आगरा, संस्करण १९६२ ई)

गुरु नानक देव जी

तुम्हारा अवतरण
ज्ञान का सूर्योदय था, अज्ञान का सूर्यास्त था।
सरबत्त का भला
समस्त संसार, एक परिवार के
तुम्हारे सार्वकालिक, सार्वभौमिक
विचारों से पृथ्वी आप्लावित थी।
आज पुनः सूर्यास्त हो रहा है,
आपके अवतरण से पूर्व की सी
स्थितियां बन रही हैं, आदमी का वजूद
आदमी के हाथों खो रहा है।
अपने ही बुने जाल में
उलझता जा रहा है आदमी।
जब मानव, मानव होने का अर्थ
और मानव होने की सार्थकता
सब भूल चुका है।
अज्ञान-तिमिर को भगाने और
तुम्हारे ज्ञान प्रकाश को फैलाने की
आज पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है।

-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', एस. ए जैन कॉलेज, अम्बाला शहर।

आत्म शुद्धि का अवसर : दीवाली

-श्री संतकृपाल सिंघ

दुनिया कर क्या रही है, सच को झूठ, झूठ को सच। एक झूठ को दस बार सुनो, वह सच के बराबर हो जाता है। देखा-देखी इंसान कहीं का कहीं बहता चला जाता है।

एक जाट खेतों से घर वापिस आया तो नंगे सिर था। अब पुराने रिवाज़ के मुताबिक नंगे सिर बाहर निकलना बुरा समझा जाता था। घर वालों ने देखा, सोचा, शायद कोई मर गया है, सब रोने-पीटने लग गये उसको देखकर। जाट ने यह समझा कि ये जो रोने-पीटने लग गये घर में, शायद कोई मर गया है। वह भी उसके साथ मिलकर रोने-पीटने लग गया। बाद में उसने पूछा, 'भाई, बात क्या है, कुछ पता तो लगे?' तो घर वाले कहने लगे, 'तुम नंगे सिर घर आए तो हमने समझा कोई मर गया है।' यह हालत है दुनिया की। देखा-देखी इंसान बहता चला जाता है। हकीकत की तरफ़ नज़र नहीं है। बाबा फरीद जी ने कहा:

फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥ *(पन्ना १३८३)*

बजाओ, यानि कुछ कह दो, दूसरा उसी के लफ़्ज़ों को दोहराता है, हां यह है। कौन नहीं बजता? सोही नहीं वजदा जिन अल्लाह करदा सार। जो रब्ब के बंदे हैं, प्रभु के बच्चे हैं, वे हकीकत देखते हैं कि यह कर क्या रहा है? वे बहते नहीं, बजाये से बजते नहीं। मगर वे सोचते हैं, भई, ठहरो तो सही, असल बात क्या है?

सियाना आदमी कौन है? जो हकीकत की तरफ़ नज़र मार कर देखे कि क्या है? क्यों है? उसके क्या और क्यों में जाए कि बात असल में क्या है? तब तो इंसान गलती से निकल सकता है। अगर वही बजते-बजाते ढोल बजाये, बजता ही चला जाए, तो नतीजा क्या है? दु:ख! गुरमुख बड़े अच्छे निरीक्षक होते हैं। वे दुनिया के साथ बजते नहीं, कहते सच ही हैं, मगर प्यार से कहते हैं। अगर कुछ स्वार्थ हो किसी किस्म का तो फिर बजना ही है। आज दीवाली का दिन है। आप को पता है आज क्या होता है? बहुत सारे लोग जुआ खेल रहे हैं। मालूम करो तो कहते हैं, यह हमारी रस्म है, इससे जन्म-मरण खत्म होगा। यह नहीं पता कि इस तरह का जुआ खेलने से जन्म-मरण का चक्र पड़ेगा।

इसलिए दुनिया अगर बजे तो हम साथ न बजें। वही बजने से बचेगा जिसकी नज़र हकीकत (सत्य) की तरफ होगी। अब परमार्थ है। परमार्थ में भी सब ढोल बजा रहे हैं। हकीकत की तरफ़ नज़र नहीं। हरेक समाज में एक ही तालीम है कि नाम से मुक्ति है, नाम के बगैर गति नहीं। मगर हम समझ बैठे हैं कि अपरा-विद्या के साधन ही सब कुछ हैं। अपरा-विद्या के साधन क्या हैं, जो हरेक समाज में पहला कदम है। ग्रंथों-पोथियों का पढ़ना-पढ़ाना तो इसलिये था कि समझों, उन्होंने क्या कहा। तो विचारने के लिये था :

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ *(पन्ना ९३५)*

विचारना था, इसमें दिया क्या है? उन्होंने कहा क्या है? लेकिन हम समझाते हैं कि खाली

पढ़ छोड़ना ही सब कुछ है। गुरु नानक साहिब ने कहा:

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥
(पन्ना ४६७)

पढ़ना अच्छा है। मगर खाली पढ़ते रहें, पढ़ने की ख़ातिर पढ़ना जो है, सुर लगाकर या बाजे बजाकर पढ़ें, खाली पढ़ना ही है न? जब तक समझते नहीं, समझ कर उसको अपने जीवन का हिस्सा नहीं बनाते, तब तक काम नहीं बनेगा। मनुष्य जीवन पाकर सबसे बड़ा काम प्रभु-प्राप्ति है। प्रभु सब खंडों-ब्रह्मंडों को बनाने वाला है, आधार देने वाला है, उसको 'नाम' कहते हैं। 'नाम' से कल्याण है, चाहे वे किसी समाज में भी आये।

नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ (पन्ना २८४)

'नाम' से सारे खंड-ब्रह्मंड बने हैं। वह प्रभु अनाम है। जो हस्ती में आई ताकत (व्यक्त प्रभु-सत्ता) है, उसको 'नाम' कहते हैं, उसको शब्द' कहते हैं। उससे यह सब बना है। वह सबको बनाने वाला, सबका आधार है। वह कहीं बाहर नहीं :

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ (पन्ना ४६३)

मगर हम क्या करते हैं? खाली पढ़ने पर ज़ोर लगाने वाले हैं। दुनिया कहती है, यह रस्म रखी है कि नहीं, वह रस्म पूरी की है कि नहीं? रस्में पूरी करने से प्रभु नहीं मिलेगा। रस्में जिस गरज़ से अदा की जाती हैं, वह है उस प्रभु को हासिल करना। बाणी का पढ़ना पहला कदम है। महापुरुषों ने जब प्रभु को पाया तो बताया कि उन्हें क्या आनंद प्राप्त हुआ। कौन सी चीज़ें प्रभु को पाने में सहायक हुई? क्या रुकावटें बनीं? ये बातें समझ आ जायें तो जो रुकावटें बनीं प्रभु-प्राप्ति में, हम उन्हें छोड़ दें, जो मददगार चीज़ें हैं, उन्हें धारण करें। खाली जुबानी ज़मा-खर्च से काम नहीं बनेगा। वास्तविक पूंजी गुरबाणी के निर्मल बचन हैं जो मन को स्वच्छ कर देते हैं :

संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ (पन्ना ६१४)

वह पूंजी इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर मिलती है। जब तक इंद्रियां दमन न हों, मन खड़ा न हो, तब तक आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता।

बाकी पूजा-पाठ? पूजा करने का मतलब है, भाव-भक्ति का बनाना, बाअदब होकर पूजा करना, उसको हाज़िर-नाज़िर समझकर बैठना। उसकी हजूरी में जाएं तो अकेले जाएं। हम रहें, और कोई न रहे। हमने पूजा भी की और साधन भी किये, मगर मन कहीं और भटकता रहा। जो काम रोज़-रोज़ करें, वह आदत बन जाती है और आदत जब दृढ़ हो जाये तो वह हमारे स्वभाव में शामिल हो जाती है।

जहां मन लग गया है, उस तरफ़ जाने की पांव को आदत बन गयी। अगर मन उस तरफ़ नहीं तो ऐसे रस्म-रिवाज़ करने से पूरा फायदा नहीं। बगुले की तरह समाधि लगाकर बैठे रहे और मन में यह रहे कि किस वक्त मछली आती है। एकाग्रता तो बड़ी है, मगर किस चीज़ को पाने के लिये? मछली को हड़पने के लिये या लोगों को दिखाने के लिये कि बड़ा महात्मा है।

मैं रस्मों-रिवाजों के ख़िलाफ़ नहीं कह रहा हूं। यह पहला कदम है जमीन की तैयारी है। जिसके साथ लगने से मुक्ति है, वह हमारी आत्मा की आत्मा है। उसको 'नाम' कहते हैं।

उसकी निशानी है,

नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥ (पन्ना ७००)

उसमें ज्योति का विकास है। प्रभु ज्योति-स्वरूप है। उसमें उद्‌गीत, नाद हो रहा है, कीर्तन हो रहा है। खाली कहते रहने से कि ज्योति का विकास है, अखंड-कीर्तन हो रहा है और ज्योति देखी नहीं, अखंड-कीर्तन अंतर सुना नहीं, तो क्या फायदा? हम लोग बाहर ज्योति जगा कर उसके ऊपर सिर घुमाते हैं। असल मतलब यह था कि ऐसी ज्योति तुम्हारे अंदर में है। लेकिन हमको अंदर की ज्योति तो मिली नहीं, परंतु बाहर ज्योति जगाकर सिर घुमाते हैं। अत: जिस उद्देश्य के लिए रस्म बनाई गयी थी उसको आंख से ओझल न करें।

आज के दिन छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ग्वालियर के किले से रिहा होकर अमृतसर पहुंचे थे। आज का दिन बहुत मुबारिक है। हम खुशी में दीये जगाते हैं, आज का दिन मिलने का है। भाई, भाई से मिले, सब भेद-भाव दूर हों, दिल की गिलाज़त दूर हो, प्रभु की याद की ज्योति जगे, असल मतलब यह है। खाली दिन मनाने से काम नहीं बनेगा।

दीवाली के दिन हम मकानों को साफ़ करते हैं। गंदगी, कूड़ा-करकट, साल-छ: महीने का साफ़ करके सफेदी करते हैं। फिर दीये जलाते हैं। यह तो हुई बाहर की दीवाली। केवल इस से काम नहीं चलेगा। अंतर भी जब परमात्मा की ज्योति जगे तब काम बनेगा। ज्योति जगना प्रभु के आने की अथवा प्रसन्नता पाने ज़ाहिरा निशानी है अंदर में। जब तक दिल की मैल साफ़ नहीं होगी तब तक अंतर में ज्योति नहीं जगेगी।

किसी का बुरा चितवन न करना, यह परम धर्म है। हम किसी समाज में रहे, हम से मन करके किसी का बुरा चितवन न हो, वचन करके भी। फिर उसमें निंदा-चुगली, बुरा-भला कहना, यह जुबान करके है। कर्म करके, मारना-पीटना आता है। तो बुरा चितवन, किसी कारण हो, अगर एक के अंदर यह चीज़ बनी है, दूसरे पर भी असर होता है। वह बजा, दूसरे भी साथ बजने लग गये। नतीजा क्या है? वह ज्योति नहीं जगेगी। दूसरी चीज़ है, सत्य को धारण करना। झूठ-फरेब, दग़ाबाज़ी, रियाकारी, आगे और, पीछे और, ऊपर से और, दिल में और, यह गिलाज़त को बढ़ाती है। हम इसका ख़्याल रखें।

हम सत्य को धारण करें। प्यार से दूसरों को समझाएं। और किसी के सुने-सुनाये पर बहते मत जाएं। कोई कुछ कहता है तो शायद उसकी कोई गरज़ होगी। होती है, आम गरज़ हुआ करती हैं, ज़ाहिरा या दरपरदा। या तो कोई आप बजता है, या दुनिया बजने लगती है। इससे खराबी होती है। दिल की गिलाज़त बढ़ती है, आओ! इसको साफ़ करें। जिस हृदय में किसी का बुरा चितवन नहीं, दुश्मन के लिये भी बुरा चितवन नहीं, अपने भाई के लिए तो अलहदा बात रही, किसी के लिये भी बुरा चितवन नहीं, जिसमें झूठ, फरेब दग़ाबाज़ी, ऊपर और, अंतर में और, चतुराई की बातें नहीं है और जिसका ख़्याल पवित्र है, ख़्वाब में भी ख़्वाब अपवित्र नहीं होता, जुबान करके मैला नहीं होता, कर्म करके गृहस्थ जीवन शास्त्र-मर्यादा के अनुसार रखता है, ऐसे मनुष्य मात्र का हृदय साफ हो सकता है। हम कहते हैं कि हम परमात्मा को पाना चाहते हैं। प्रभु का अंश सब में है। वही सबका जीवनाधार है। उसी की हम सब पूजा करते हैं, चाहे नाम उस का कुछ

रख लें। हरेक के अंतर में जब उसी की अंश काम कर रही है और वही परमात्मा करन-कारण सत्ता है, जिसके सबब से हमारी आत्मा जिस्म के साथ कायम है। यदि यह जान लें तो नफ़रत किससे करेंगे? यह सही नज़री बनने से शुभ विचार बनेंगे। शुभ विचार बनने से शुभ वचन बनेंगे। जुबान भी ठीक बनेगी और आगे शुभ कर्म बनेंगे। जब सबमें परमात्मा है, तो कोई अगर दुःखी है, तो क्यों न उसका दुःख दूर करें? क्यों न ज़रूरतमंद की ज़रूरत पूरी करें, क्यों न भूखे-प्यासे को बांट कर खाएं। ये चीज़ें हैं जिनसे हमारा हृदय साफ़ होगा। प्रभु सब में है, सबके अंतर उसको देखें, उसकी ख़ातिर सब की सेवा करें। यह बंधन का कारण नहीं। जब ये सारे काम करते हुए प्रभु भूल जाये, फिर बंधन ही बंधन है।

तो यह है हृदय की सफ़ाई। आज के दिन घरों को लोगों ने साफ किया। रस्म है न! फिर वहां ज्योति जगाते हैं, सुगंध रखते हैं। वहां **radiation** होती है, स्वच्छता की किरणें प्रसारित होती हैं, वातावरण कुछ और बनता है। सब बैठकर ज्योति की पूजा करते हैं।

आज दीवाली का दिन है। पहला कदम हमने उठाना है। देखो, किस तरह से उठाया है? अगर हमारे अंतर में किसी का बुरा चितवन नहीं रहा, किसी की निंदा-चुगली-बुराई, हर वक्त ये ऐसा, वो ऐसा, का भाव नहीं। सब पापों में तो कुछ रस है, मगर निंदा में कौन सी लज़्जत है? मीठी है या सलोनी है। कइयों का पेशा ही निंदा करना बन गया है। उससे फिर ज़हर फैलती है, **radiation** होती है बुराई फैलती है। वह बजा, साथ दुनिया बजती चली गई। हम यह नहीं देखते कि मामला क्या है? हम को दूरदर्शिता से काम लेना चाहिये, हरेक चीज़ को समझना चाहिये, किसी सुनी-सुनाई बात पर नहीं जाना चाहिये, जब तक कि अपनी आंख से न देखें, अपने कानों से न सुनें। नहीं तो किसका नुकसान है? अपना, और बड़ा भारी नुकसान है। मनुष्य जन्म पाकर उस ज्योति को जगाना था, भजन बनाना था, वह नहीं बना।

बिच्छू डंक मारता है, उस वक्त मालूम नहीं होता, बाद में कड़वल पड़ते हैं। वह बात का जहर छोड़ गया, उसकी ज़हर बढ़ती है। उसका नतीजा क्या है? अपना ही नुकसान है। हमने मनुष्य-जीवन पाया है। कोई अच्छा है या बुरा, हम यह सब प्रभु पर छोड़ दें। हमदर्दी है तो प्यार से समझा दें, नहीं तो प्रभु पर छोड़ें। वह सबका प्रभु है। इस तरह से दिल की सफाई होगी। यह हृदय की सफाई जब तक नहीं होती, तब तक काम नहीं बनता। हज़ार पूजा-पाठ कर लें, अगर दिल में दूसरों का बुरा चितवन है, कपट है, चोरी है, हक मारना है, खून निचोड़ना है, ख़्यालात अपवित्र हैं, नफरत है, हठ है, तो फिर हम कहीं नहीं पहुंचेंगे।

जिस दिल में प्रभु के सिवाय और कोई ख़्याल न रहे, वह सच्ची सफाई है। प्रभु सबको देखता है और हम सब प्रभु के बच्चे हैं। अतः हम सब प्रभु की ज्योति देखें। माता है, पिता है, स्त्री है, पति है, प्रभु ने जोड़ा है, उनको मात्र, रिश्तों की दृष्टि से ही नहीं देखें बल्कि प्रभु को रचना जानकर उन की सेवा करें। उनकी सेवा में फिर कोई बंधन नहीं। जब सेवा में मैं-पना (मैं-मेरा) आया, फिर बंधन ही बंधन है। हम दुनिया के सारे कर्त्तव्य पूरे करें, पर दिशासूचक की तरह, जिसकी सुई उत्तर की ओर रहती है। हमारा ध्यान यदि प्रभु की ओर रहे, फिर कोई बंधन नहीं। ❁

पेड़ की पुकार

-डॉ. दादूराम शर्मा*

भाई मनुष्य!
जब से तुमने आंखें खोलीं,
मुझे तुमने अपना सतत् सहचर पाया है।
मेरे पालने ने तुम्हारे, शैशव को दुलराया है।
मेरे रसीले कंद-मूल-फलों ने, तुम्हें शक्तिधर बनाया है।
तुम्हारे आतप-तप्त तनु को, दी मैंने शीतल छाया है।
मेरी कुटिया ने तुम्हें, वर्षा और सर्दी से बचाया है।
मेरे वल्कलों ने तुम्हारी, नग्नता को छिपाया है।
मेरे कौशेय परिधानों और पुष्प-पल्लवों ने,
तुम्हारी अंग-लतिका को सजाया है।
मेरे क्रोड़ में पले पक्षियों के कलरव ने, तुम्हें प्रातः जगाया है।
मेरी विसर्जित प्राणवायु में, तुम लेते रहे सतत सांस,
मेरी ही औषधियों ने दी तुम्हें स्वस्थ काया है।
मेरे सहचर मेघों से मेरे ही इंगित पर,
तुम्हारी इस धरा ने नवजीवन पाया है।
मेरे बने हल ने भूमि की कोख से,
तुम्हारे लिए पुष्कल अन्न उपजाया है।
मेरी काष्ठ ने सुस्वादु भोजन पकाया है।
तुम्हारे यौवन ने शक्ति के प्रतीक रूप में,
मेरी लाठी को अपनाया है।
और वृद्धावस्था ने उसे सहारा बनाया है।
तुम्हारी मानवीय संस्कृति के आदिम स्रोत हैं मेरे तपोवन,
जिनसे तुमने विचार और कर्म का मुक्ति-पथ पाया है।
जिनकी मधुर-ध्वनि ने दिग् दिगन्त को मुखर बनाया है।
कितने अवतार विचारक पले थे मेरी गोद में,
जिनकी सत्य अनुभूतियों ने मानस सरसाया है।
कितने महा कवियों में मुझसे ही जन्मा कवित्व,
जिसने तुम्हारे संस्कृति-कोश को समृद्ध बनाया है।
महापुरुषों ने भी बोध मेरे तले पाया है।
सभ्यता के अरुणोदय से ही,
अपनी वाटिका में तुमने मुझे लगाया है।
और अपने हाथों से सींच-सींचकर मुझे बढ़ाया है।
एक-दूसरे के पालक और पालित का, संरक्षक-संरक्षित का,
यह अटूट रिश्ता हमने सदियों से निभाया है।
फिर आई हमारे शवों पर पली-बढ़ी मशीनी सभ्यता।
उजड़े वन, बसे नगर, लगे कल-कारखाने।
उठ गए हमसे बहुत ऊंचे तुम सभ्यता के दीवाने।
कारखाने करने गले नदियों का दूषित जल,
चिमनियां और वाहन उगल रहे धुआं अविरल,
उनकी कर्णविधी ध्वनि कर रही सबको विकल,
तुम्हारे प्रश्वास से भर गया वायुमण्डल!
होकर प्रदूषित अब खो बैठा संतुलन,
हमारे अभाव में हमारे चिर सहचर,
घिरते नहीं नभ में अब पूर्ववत् जलचर।
घिरें भी तो बरसे बिना जाने कहां उड़ जाते
और चर-अचर सब तरसते रह जाते!
इस तरह काटकर हमें काट लिया अपना मूल।
कितनी महंगी पड़ी तुम्हें हे मानव तुम्हारी भूल!
आओ! फिर रोपो हमें, करो फिर हमसे प्यार।
पर्यावरण-परिशुद्धि का सौंपो, सब हमें भार।
होगा ज्यों-ज्यों धरती पर हमारा विस्तार,
त्यों-त्यों खुलेगा तुम्हारा उद्धार-द्वारा,
जाग रे मनुष्य! जाग रे मनुष्य!

*महाराज बाग भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

गुरबाणी राग परिचय-१५

रागी सूही : तेरा एको नामु मंजीठड़ा

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पूर्वार्द्ध में सिरीरागु से बैराड़ी राग तक बाणी १३ रागों में अंकित है। उत्तरार्द्ध का आरंभ राग तिलंग से होता है। राग तिलंग में श्री गुरु नानक देव जी का महत्त्वपूर्ण शबद में शरीर रूपी वस्त्र को नाम-रंग में रंगे जाने का संदेश है :

जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ (पन्ना ७२२)

राग तिलंग के बाद क्रमांक १५ पर राग सूही में इस विचार का विस्तार से अंकन हुआ है :

तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥ (पन्ना ७२२)

राग सूही में बाणी ६७ पन्नों में (७२८-७९४) अंकित है।

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार सूही काफी ठाठ की षाडव रागणी है। इसमें धैवत वर्जित है; गंधार निषाद कोमल है। वादी मध्यम संवादी षडज है। गायन का समय एक घड़ी दिन सूर्योदय के बाद है। इस राग के दो उपभेदों के अंतर्गत भी बाणी अंकित है। श्री गुरु अरजन देव जी की असटपदी *"जे भुली जे चुकी साईं"* भी सूही काफी राग में है। इसका गायन दिन के दूसरे पहर में होता है। भक्त कबीर जी के दो शबद *"एकु कोटु पंच सिकदारा"* तथा *"थाके नैन स्रवन सुनि थाके"* और बाबा फरीद जी का एक शबद 'सूही ललित' राग में है। सूही ललित वैराग्य भावना के अनुरूप मधुर राग है।

राग सूही में श्री गुरु नानक देव जी के ९ शबदों में प्रथम छ: में मन-निर्मलता का संदेश है। प्रथम शबद में नाम जप कर मंथन से अमृत प्राप्त करने की विधि का वर्णन है। दूसरा शबद मन को सम्बोधित है, जिसमें विकार छोड़कर सत्य-अमृत के सेवक होने पर बल दिया गया है। तीसरा शबद सज्जन ठग को सम्बोधित है। विकारों का प्रतीक कांसे का बर्तन है, जिसकी मैल सौ बार धोने पर भी नहीं उतरती:

धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥ (पन्ना ७२९)

माया-मोह के बंधन से छुटकारा नाम-स्मरण से ही संभव है। पांचवें और छठवें शबद में 'भाण्डा' शब्द को हृदय के अर्थ में दोहराया गया है। हृदय-निर्मलता का आधार 'प्रभु-प्रेम' है किन्तु उसकी पूर्णता प्रभु-कृपा पर निर्भर है :

जिन कउ भांडे भाउ तिना सवार सी ॥

'सलोकु वारा ते वधीक' में श्री गुरु नानक देव जी ने निर्मलता की समस्या और समाधान को सूत्र रूप में दिया है :

—भांडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥
धातू पंजि रलाइ कूड़ा पाजिआ ॥ . . . (पन्ना १४११)

—परम जोति जागाइ वाजा वावसी ॥
भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥ (पन्ना ७३०)

उक्त श्लोक की व्याख्या राग सूही के श्री गुरु नानक देव जी ने छठवें शबद में की गई है। तीर्थ आदि के बाहरी स्नान से हृदय निर्मल नहीं होता। गुरु के द्वार पर स्वयं को पवित्र

*C/o S. Gurmeet Singh, H-230/MDC/SEC-5, Shikhar Apartment, Panchkula.

करने की सुबुद्धि मिलती है। प्रभु-कृपा से भले-बुरे का विवेक जागृत होता है। मनुष्य के कर्म प्रेरक के रूप सहायक हैं। आत्मिक जीवन का दान प्रभु स्वयं देता है। जीवन की सार्थकता हरि-नाम की ज्योति से होती है :

भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥
भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥
गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥
एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥
मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥
मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥
जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥
अंम्रितु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥
चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा वाइसी ॥
माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥
नानक आपि निहाल सभि कुल तारसी ॥
(पन्ना ७३०)

श्री गुरु नानक देव जी के मन-निर्मलता तथा शुभ कर्म के शबदों के भाव को शबद सात तथा आठ में जोग के संदर्भ में दिया गया है :

जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सुो खाइ ॥ . . .
गली जोगु न होई ॥ *(पन्ना ७३०)*

माया-मोह की कालिमा में माया से निर्लिप्त प्रभु की सुरति में लीन रहना ही योग की युक्ति है:

अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ *(पन्ना ७३०)*

राग सूही में श्री गुरु नानक देव जी के अंतिम शबद में प्रभु के अगम और व्यापक स्वरूप का मनोरम चित्रण है। वह प्रिय अगम्य है। उसका अंत समझ से बाहर है। दूसरी ओर वह सभी में समाया है। इस द्वन्द्व का समाहार इस तथ्य से होता है कि प्रभु के सिवा कुछ भी नहीं है। चंचल मन की कुसंगति छोड़ कर प्रभु की वास्तविकता का ज्ञान होता है।

श्री गुरु नानक देव जी के शबदों के बाद श्री गुरु रामदास जी के १५ शबद हैं। इनमें प्रथम चौदह शबदों में विविध रूप से हरि-नाम, आराधना, हरि-संग से मन को दृढ़ करना *(हरि रंङु मजीठै रंङु)* और हरि नाम से आरोग्य होने का *(हरि जन आरोग भए)* विविध रूप से वर्णन है। अंतिम शबद में हरि-कृपा या प्रभु-रजा का वर्णन है। सभी कुछ प्रभु की रजा से होता है, हमारे अपने करने से कुछ नहीं होता है, इसलिए प्रभु की रजा से प्रसन्न रहना ही हमारे लिए उसकी सच्ची बख्शिश है। स्वामी की शरण लेना अनजान जीवों की प्रार्थना का एक मात्र मार्ग है :

कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥
आपणा कीता किछू न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥१॥ . . .
हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥
जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥ *(पन्ना ७३६)*

राग सूही में श्री गुरु अरजन देव जी के ५८ शबद हैं। आरंभ के शबद में प्रभु के स्वरूप का दार्शनिक चित्रण है। *"अनिक बिसथार एक ते भए"* के अनुसार प्रभु और सृजन की एकरूपता के विविध रूप दर्शाये गये हैं, जैसे जल और लहर, स्वर्ग और आभूषण, बीज और फल आकाश और घड़ा (अंदर रिक्त स्थान)। सृजन उस एक प्रभु का स्वांग है जो विविध रूप में दृष्टिगोचर होता है। प्रभु बाजीगर के रूप में विविध रूप दिखाता है और फिर अपना विस्तार समेट कर पुन: एक हो जाता है :

बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥
नाना रूप भेख दिखलाई ॥
सांगु उतारि थंम्हिओ पासारा ॥
तब एको एकंकारा ॥ *(पन्ना ७३६)*

शबद चार में प्रिय कंत से मिलन के लिए शरीर रूपी घर को संयमित करने का वर्णन है। दस इंद्रियां दासी हो गई हैं :

ग्रिहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥
दस दासी करि दीनी भतारि ॥ (पन्ना ७३७)

शबद पांच में प्रभु-मिलन के लिए उमंग का वर्णन है। जीव-स्त्री पहले मोह-निद्रा में सोई थी। प्रभु-पति निर्लिप्त रहता था। सतसंग से प्रभु से मिलन हुआ। भ्रम का पर्दा हटने से मन स्थिर हो जाता है। जीवात्मा जहां देखती है वहीं प्रिय का दर्शन होता है :

भइओ क्रिपालु सतसंगि मिलाइआ ॥
बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ॥
सगल सीगार हुणि मुझहि सुहाइआ ॥
कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ (पन्ना ७३८)

श्री गुरु अरजन देव जी ने दिखावे के धार्मिक कार्यों को छोड़कर वासना रहित होकर करतार की गुण-स्तुति का उपदेश दिया है। एक पल मात्र स्मरण करने से जन्म-मरण का बंधन छूट जाता है :

करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥ (पन्ना ७४७)

श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों में क्रमांक ४१ व ५६ का विचार एक साथ किया जा सकता है। प्रथम शबद में हरि के गुणगान से युक्त झोपड़ी, प्रभु का स्मरण दिलाने वाली सतसंगति, प्रभु के अनुरागमय मन-आत्मा के धारक शरीर की उत्तमता दर्शाई गई है जबकि हरि-विस्मरण वाले महल, बढ़प्पन और रेशमी वस्त्रों को व्यर्थ, जलाने योग्य बताया गया है :

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥
कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥१॥रहाउ॥
अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥
जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥१॥
पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥२॥
नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥
पाट पटंबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥
(पन्ना ७४५)

दूसरे शबद में हरि-नाम-स्मरण से आनंद का वर्णन है तथा हरि के द्वारा विस्मृत किये जाने पर आत्मिक मौत की स्थिति दर्शाई गई है। शबद चार और पांच के कान्ता भाव के स्थान पर स्वामी-सेवक भाव का वर्णन है। जीवात्मा प्रभु के सेवकों की चरण-धूलि होकर प्रभु-दर्शन की इच्छुक है :

मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥
अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥ (पन्ना ७४९)

राग सूही में कुल १६ असटपदियां हैं। श्री गुरु अमरदास जी की एक असटपदी *"दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी"* (दुनिया की खुशामद व्यर्थ है क्योंकि दुनिया नश्वर है) में ३४ पद हैं, जिसके प्रत्येक पद में दो पंक्तियां हैं। श्री गुरु रामदास जी की एक असटपदी *"कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतम पिआरा"* में ३२ पद है। प्रत्येक पद में एक पंक्ति है। यह असटपदी पांच उपखण्डों में बांटी जा सकती है, क्योंकि प्रत्येक खण्ड की अंतिम पंक्ति में उपनाम 'नानक' का प्रयोग मिलता है।

राग सूही की असटपदियों के क्रम के बाद तीन विशेष शीर्षक सहित बाणियां हैं जो जीवात्मा के तीन रूपों को दर्शाती हैं। कुचजी का रूप दोहागिन का है जो दोषों से भरी है सुचजी का रूप सुहागिन का है जिसे हर जीव प्रतिष्ठा देता है। इन दोनों छंदों की रचना श्री गुरु नानक देव जी ने की है। जीवात्मा का

तीसरा रूप गुणवंती का है जो प्रभु-मिलन के मार्ग जानने की इच्छुक है। गुणवंती छंद की रचना श्री गुरु अरजन देव जी ने की है। गुणवंती से आरंभ होने वाला एक संदर्भ सिरीरागु में श्री गुरु नानक देव जी के शबद में भी है:
गुणवंती गुण बीथरै अउगुणवंती झूरि ॥
(पन्ना १७)

गुणवंती गुणों का विस्तार करती है, अवगुणहारी पश्चाताप से मुरझा जाती है।

राग सूही में संकलित छंद इस राग का श्रृंगार है। संख्या की दृष्टि से राग आसा और राग वडहंस के समान सूही राग का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इस राग में श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अमरदास जी के सात, सात, श्री गुरु रामदास जी के छ: तथा श्री गुरु अरजन देव जी के १२ छंद हैं। आत्मा-परमात्मा के मिलन सम्बंधी इन छंदों को सहज ही सिख धर्म में पाणि ग्रहण/आनंद कारज के समय सामूहिक रूप में गायन किया जाता है। हृदय में प्रभु का निवास हुआ है *"हम घरि साजन आए"* का गायन वर-कन्या पक्ष के परिवारों के मिलन के समय किया जाता है :
हम घरि साजन आए ॥ साचै मेलि मिलाए ॥
सहजि मिलाए हरि मनि भाए पंच मिले सुखु पाइआ ॥
साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइआ ॥
अनदिनु मेलु भइआ मन मानिआ घर मंदर सोहाए ॥
पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए ॥ *(पन्ना ७६४)*

गुरु के शबद से जिस धन (पत्नी) का श्रृंगार हुआ है वह सदा सोहागिन होती है क्योंकि उसका वर अमर है :
जे लोड़हि वरु बालड़ीए ता गुर चरणी चितु लाए राम ॥
सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ॥ *(पन्ना ७७१)*

आनंद कारज सम्बंधी श्री गुरु रामदास जी का छंद उनके रचित छंदों में द्वितीय क्रमांक पर है। उससे पहले जीवात्मा के हउमै-रोग दूर होने तथा सत्-संतोष के द्वारा कुड़माई होने का वर्णन है। मनमुख जीवात्मा को गुरु के बिना मार्ग नहीं मिला था। वह क्षण-क्षण धक्के खा रही थी। प्रभु ने सतिगुरु को मिला दिया, जिससे जन्म-जन्म से बिछुड़े सज्जन मिल गए। शादी के प्रतीकों के माध्यम से की गई आनंद कारज की तिथि निर्धारित प्रथम छंद के अंतिम पद में वर्णित है :
आइआ लगनु गणाइ हिरदै धन ओमाहीआ बलि राम जीउ ॥
पंडित पाधे आणि पती बहि वाचाईआ बलि राम जीउ ॥
पती वाचाई मनि वजी वधाई जब साजन सुणे घरि आए ॥
गुणी गिआनी बहि मता पकाइआ फेरे ततु दिवाए ॥
वरु पाइआ पुरखु अगंमु अगोचरु सद नवतनु बाल सखाई ॥
नानक किरपा करि कै मेले विछुड़ि कदे न जाई ॥ *(पन्ना ७७३)*

आनंद कारज के छंद के चार चरणों में जीवात्मा-परमात्मा-मिलन के चार सोपानों को दर्शाया गया है जो लौकिक पक्ष पती-पत्नी या धन-पिर के सम्बंधों को दिव्यता प्रदान करता है।

राग सूही में श्री गुरु अरजन देव जी के छंदों का विषय अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना और सरोवर-निर्माण में प्रभु-कृपा है। इस हरिमंदर साहिब की स्थापना संत-जनों के द्वारा हरि-जप और प्रभु-गुणगान के लिए की

गई है। मानव शरीर भी एक मंदिर है जिसमें प्रभु का निवास है। अमृतसर नगर की स्थापना के समय अमृतसर की महिमा की गई है। यह परमात्मा की नगरी है तथा स्थायी रहने वाली, इसको प्रभु ने स्वयं बसाया है :

अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥
मन इछे सोई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ *(पन्ना ७८३)*

राग सूही की वार श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रचित है। इसमें २० पउड़ियां हैं, कुल संलग्न ४७ हैं, जिनमें श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित २१ श्लोक, श्री गुरु अंगद देव जी के ११ तथा श्री गुरु अमरदास जी के १५ श्लोक हैं।

पउड़ी १५ में श्री गुरु नानक देव जी के चार श्लोक संलग्न हैं। उनमें से दो-दो पंक्ति के तीन श्लोक सरस और भावपूर्ण हैं। प्रभु की सेवा में जितनी भी जीवात्माएं खड़ी हैं वे प्रभु के गुणों में अनुरक्त हैं तथा परमात्मा के गुणों की चर्चा करती हैं। सभी जीवात्माएं अपने प्रियतम पति में रत हैं। मैं वियोगिनी किस गिनती में हूं? मुझमें इतने अवगुण हैं कि मेरी ओर पति परमेश्वर ध्यान नहीं देता। मैं उन पर बलिहार जाती हूं जिनको स्तुति की बख्शिश मिली है। उनकी सभी रातें सौभाग्यमयी हैं। मैं एक रात के मिलन के लिए तड़प रही हूं :

इको कंतु सबाईआ जिती दरि खड़ीआह ॥
नानक कंतै रतीआ पुछहि बातड़ीआह ॥२॥
सभै कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥
मै तनि अवगुण एतड़े खसमु न फेरे चितु ॥३॥
हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै वाति ॥
सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥३॥
(पन्ना ७९०)

वार की अंतिम पउड़ी के साथ संलग्न श्लोक में श्री गुरु अंगद देव जी प्रभु-मिलन के विषय में बताते हैं कि हे जीवात्मा! तुमने सुख में पति के साथ रमण किया है तो दुख में भी उसे ही स्मरण करना होगा। परमात्मा रूपी पति इसी तरह मिलता है :

जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥
नानक कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना ७९२)

वार में श्री गुरु अमरदास जी ने आदर्श दम्पत्ति की व्याख्या की है। पति और पत्नी वे नहीं है जो एक साथ मिलकर बैठते हैं, वास्तव में पति और पत्नी वे कहलाने के योग्य हैं जिनके शरीर देखने में अलग-अलग हैं किन्तु जिनकी आत्मिक चिन्तन की धारा (ज्योति) मिलकर एक रूप हो गई है :

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ७८८)

राग सूही में भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी तथा बाबा फरीद जी के शबद भक्त-बाणी के अन्तर्गत संकलित हैं। भक्त-बाणी का मुख्य स्वर जीवन की अल्प अवधि तथा जीवन का मिथ्यापन है। यौवन शीघ्र बीत जाता है तथा जरा (वृद्धावस्था) के कष्ट घेर लेते हैं, किन्तु माया फिर भी बलवान बनी रहती है। भक्त कबीर जी का फरमान है :

थाके नैन स्रवन सुनि थाके थाकी सुंदरि काइआ ॥
जरा हाक दी सभ मति थाकी एक न थाकसि माइआ ॥ *(पन्ना ७९३)*

भक्त रविदास जी का फरमान है :

किआ तू सोइआ जागु इआना ॥
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥ *(पन्ना ७९४)*

बाबा फरीद जी कथन करते हैं :

तै साहिब की मै सार न जानी ॥
जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥ *(पन्ना ७९४)*

भक्त कबीर जी राग सूही से पूर्व राग आसा में इस शरीर रूपी गांव में न बसने की घोषणा कर चुके थे :

बाबा अब न बसउ इह गाउ ॥ (पन्ना ११०४)

राग आसा के शबद में पांच किसान अथवा पांच ज्ञानेन्द्रियां तंग कर रही थीं। राग सूही में शरीर रूपी किले में पांच विकार कृषक से उपज का भाग मांग रहे हैं। घड़ी-घड़ी का लेखा मांगने वाले चेत का स्थान, नित डसने वाले पटवारी ने ले लिया है। भक्त कबीर जी भाग्यवान हैं, क्योंकि उन्हें गुरु के द्वारा विवेक का पथ-प्रदर्शन मिल गया है :

एकु कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहि हाला ॥
जिमी नाही मै किसी की बोई ऐसा देनु दुखाला ॥
हरि के लोगा मो कउ नीति डसै पटवारी ॥
ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी ॥ (पन्ना ७९३)

बाबा फरीद जी के चार शबद हैं, दो राग आसा में तथा दो राग सूही में हैं। बाबा फरीद जी की सूफी विचारधारा पर गुरु साहिबान ने अपनी टिप्पणी की है तथा कष्टमय साधना को सहज-साधना का स्वरूप प्रदान किया है। बाबा फरीद जी का साधक को चेतावनी भरा उद्बोधन है। जब बंदगी का बेड़ा बांधने का समय था तब तुमने बेड़ा नहीं बांधा। जब जीवन में विषय-विकार बढ़ जावेंगे तब तैरना कठिन हो जाएगा। विषय-विकार कुसुंभ के फूल के समान सुंदर और आकर्षक हैं। उनकी सुंदरता आग की लपट के समान दाहक होती है। प्रभु का नाम न लेने के कारण जीव-स्त्री कमजोर है। उसे स्वामी के कठोर आदेशों को मानना होता है। परमात्मा से मिलन इसी जन्म में संभव है। हमारी मृत्यु जरूर आयेगी। आत्मा उदास होकर चल पड़ेगी। शरीर मिट्टी का ढेर हो जाएगा :

बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥
भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥
(पन्ना ७९४)

श्री गुरु नानक देव जी ने बाबा फरीद जी के कुसुंभ प्रतीक के स्थान पर मजीठ को केन्द्र बनाया है। प्रभु का नाम ही मजीठ है जिसके पक्के रंग से आत्मिक चोला रंगना है। प्रभु-स्मरण का सुंदर सा बेड़ा तैयार करो जिससे तुम शीघ्र पार उतर जाओगे। स्मरण द्वारा जीवन-मार्ग सहज हो जाएगा। न तेरे मार्ग में संसार-समुद्र आएगा और न ही इसका मोह चंचलता उत्पन्न करेगा। अहंकार का निवारण करके जिसने प्रभु-मिलन का चोला पहना है उसे गुरु के वचनों के अनुसार प्रभु के अमृत-वचन मिलते हैं :

जप तप का बंधु बेड़ुआ जितु लंघहि वहेला ॥
ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥
तेरा एको नामु मजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥ (पन्ना ७२९)

इस प्रकार राग सूही में सूहा रंग विषय-विकारों का प्रतीक है, जिसका सम्बंध 'दोहागणी' से है। द्वैत से पूर्ण संसार का रंग भी सूहा है। सूहा रंग रात के सपने के समान है। यह एक ऐसा हार है जिसमें पिरोने वाला सूत्र नहीं है। ब्रह्म विचार का रंग मजीठ का है :

सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि ब्रहम बीचारु ॥(पन्ना ७८६)

निष्कर्ष रूप में सद्गुणों के फूलों को शरीर की कोंपल पर धारण करना प्रभु से मिलन के श्रेय का साधन है, अन्य फूलों को चुनने की आवश्यकता नहीं है :

काइआ कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥
एनी फुली रउ करे अवर कि चुणीअहि डाल ॥
(पन्ना ७९१)

गुरबाणी चिंतनधारा : २६

जापु साहिब की विचार व्याख्या

-डॉ. मनजीत कौर*

कि सरबत्तर भानै ॥ कि सरबत्तर मानै ॥
कि सरबत्तर इंद्रै ॥ कि सरबत्तर चंद्रै ॥११९॥

हे वाहिगुरु! तू समस्त स्थानों पर सूर्य की तरह प्रकाश फैला रहा है। सर्वत्र तेरी ही पूजा हो रही है। सब जगह तू ही जीवों का स्वामी है तथा सर्वत्र तू ही चन्द्रमा की तरह निर्मल, शीतल चांदनी फैला रहा है।

उपरोक्त बंद में गुरु कलगीधर पातशाह उस परवरदिगार के तेज प्रताप एवं शीतल स्वरूप का वर्णन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि वह प्रभु सारे जगत को सूर्य की तरह रौशन कर रहा है। 'भानै" शब्द का अर्थ इस बंद में स. जोगिंदर सिंघ जी तलवाड़ा ने 'मनभावन' के अर्थ में लिया है। परमात्मा सबके मन को अच्छा लगने वाला है अर्थात् सबके मन को भा जाने वाला।

वह ईश्वर सबके लिए पूजनीय हस्ती है, सबका राजा है, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है—*"तुम हो सब राजन के राजा ॥"* यही नहीं वह प्रकाश और शीतलता का भी भंडार है।

कि सरबं कलीमै ॥ कि परमं फ़हीमै ॥
कि आकल अलामै ॥ कि साहिब कलामै ॥१२०॥

हे प्रभु! तू ही 'कलीमै' अर्थात् सुंदर, मीठे बोल बोलने वाला है। 'फहीमै अर्थात् तू ही अच्छी समझ वाला है। 'आकल' भाव कि बुद्धि वाला है। वह ईश्वर सूझवान है। 'साहिब कलामै' अर्थात बाणी का मालिक है।

इस बंद में भी गुरदेव उसी परमेश्वर के विलक्षण गुणों का वर्णन करते हुए उसके प्रत्येक गुण को नमन करते हैं कि हे वाहिगुरु! तू समस्त जीवों की रचना करता है और फिर उन सब में सुंदर वचन बोल रहा है। तू सर्वोत्तम अक्ल का मालिक है। तू ही समस्त भाषाओं का विद्वान है। समस्त बोलियां तेरी ही रचना हैं और तू सब भाषाओं में निपुण है, अतः तू ही बोल और बाणी का धनी है।

कि हुसनल वजू हैं ॥ तमामुल रुजू हैं ॥
हमेसुल सलामैं ॥ सलीखत मुदामैं ॥१२१॥

हे वाहिगुरु! तू सौन्दर्य की प्रतिमा है। 'तमामुल' अर्थात् सारे रुजू अर्थात् ध्यान, अतः सभी जीवों पर तेरी ही नज़र है। तू सदैव कायम रहने वाला है। तेरी सृष्टि की रचना बिघ्न-रुकावटों से रहित है।

इस बंद में गुरु कलगीधर पातशाह सुंदरता की मूर्त की रचना को निर्विघ्न मानते हुए फरमान करते हैं कि हे प्रभु! तू सौन्दर्य का साकार स्वरूप है। समस्त जीवों पर तेरा ध्यान है अर्थात् तू किसी की भी उपेक्षा नहीं करता। तेरी रचना सदैव कायम रहने वाली है, अतः इसमें कोई बाधा डालने की गुस्ताखी नहीं कर सकता। वस्तुतः तू और तेरी रचना अमर है।

ग़नीमुल शिकसतै ॥ ग़रीबुल परसतै ॥
बिलंदुल मकानैं ॥ ज़मीनुल ज़मानैं ॥१२२॥

हे वाहिगुरु! तू शत्रुओं को परास्त करने वाला है। 'बिलंदुल' अर्थात् तेरा ठिकाना बुलंद

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ मो: ०१४१-२६५०३७०

अथवा सबसे ऊंचा है। तू सब जगह मौजूद है। अतः हे प्रभु! तू वैरियों को शिकस्त देने वाला है अर्थात् धर्म के दुश्मनों को हराने वाला है। तू गरीब निवाज अर्थात् निराश्रयों को आश्रय देने वाला है। तू सर्वव्यापी और सर्वकालीन है। धरती और आसमान के मध्य सर्वत्र हर पल तेरी मौजूदगी है। अतः कोई क्षण और कोई कण तेरे अस्तित्व के बगैर नहीं है।

उस परमेश्वर के गरीब निवाज स्वरूप को गुरबाणी में बहुतायत से दर्शाया गया है। भक्त रविदास जी की बाणी का प्रमाण है :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)

तमीजुल तमामैं ॥ रुजूअल निधानैं ॥
हरीफुल अजीमैं ॥ रज़ाइक यकीनैं ॥१२३॥

हे वाहिगुरु! तू सब जीवों की पहचान करने वाला है, सबका ख्याल रखने वाला है। तू अधर्मियों का बड़ा शत्रु है। तू सचमुच सबको रिज़क देने वाला है।

गुरदेव उपरोक्त बंद में उसी परमेश्वर के गुणों का गान करते हुए स्पष्ट करते हैं कि वह सब जीवों को पहचानने वाला ईश्वर सम्पूर्ण ध्यान का ख़ज़ाना है। हे प्रभु! दुष्टों-पापियों का तू सबसे बड़ा वैरी है। तू यकीनन सब प्राणियों को रिजक देने वाला है, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक स्थान के जीव को वह ईश्वर रिज़क पहुंचाता है, यथाः

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ (पन्ना १०)

अनेकुल तरंग हैं ॥ अभेद हैं अभंग हैं ॥
अज़ीजुल निवाज़ हैं ॥ ग़नीमुल ख़िराज है ॥१२४॥

हे वाहिगुरु! तू विशाल सागर के सदृश्य है और समस्त जीव मानो तेरे से उत्पन्न लहरें हैं। तेरा भेद नहीं पाया जा सकता। तू अविनाशी है अर्थात् तुझे कोई खंडित नहीं कर सकता। तू अपने प्यारों को मान-सम्मान देने वाला है। तू वैरियों से टैक्स वसूल करने वाला है अर्थात् दुश्मनों को दण्डित कर सदैव अपने अधीन रखने वाला है।

कविता

गुरमति-ज्ञान

इंसानियत का आसमां, गुरमति-ज्ञान है।
इंसानियत पे मेहरबां, गुरमति-ज्ञान है।
सूर्य हज़ार हों मगर, गुर बिन अंधार है,
सैभंग जैसी दास्तां, गुरमति-ज्ञान है।
मक्का में जूझता कभी, काशी में गरजता,
इंसानियत का पासबां, गुरमति-ज्ञान है।
चारों वर्ण के वास्ते, इसके हैं दर खुले,
चारों वर्ण का आशियां, गुरमति-ज्ञान है।
एकेश्वर का ध्यान ही, गुरमति-ज्ञान है।
इक नूर का करता बयां, गुरमति-ज्ञान है।
बाबर को जाबर बोलना, गुरमति-ज्ञान है,
जलती तवी पे इम्तिहां, गुरमति-ज्ञान है।
सारे विश्व की एकता, आदेस है यहां,
सारे विश्व का गुलिस्तां, गुरमति-ज्ञान है।

-श्री फकीर चंद 'जलंधरी', ५, रमेश कॉलोनी, सामने एस. डी. कॉलेज, जालंधर-१४४००१

गुरु-गाथा : ५

हाथों की शुद्धता

*-डॉ. अमृत कौर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दरबार सजा था। गर्मी के दिन थे। उन्हें प्यास लगी। उन्होंने पानी मांगा। एक सुंदर कोमल युवा सिख अपने रूप यौवन में मदमस्त बैठा था। हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया, "गुरु जी! यदि आज्ञा हो तो मैं आपके लिए पानी ले आऊं।" गुरु जी ने पानी लाने के लिए अपनी सहमति प्रकट की। वह फटाफट भागा गया और शीतल ठंडे जल का कटोरा ले आया। गुरु जी ने उसके अत्यंत सुकोमल स्वच्छ हाथों को देखकर पूछा, "सिखा! तुम्हारे हाथ बहुत कोमल हैं, तुम क्या काम करते हो?" उसने बड़े गर्व से उत्तर दिया, "गुरु जी! मेरे पर प्रभु की कृपा है। अनेक नौकर-चाकर हैं। मेरे सारे काम वही करते हैं। मुझे काम करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। आज प्रथम बार इन हाथों से मैं आपके लिए पानी लाया हूं।"

गुरु जी ने उत्तर दिया, "जिन हाथों ने कभी कोई सेवा का कार्य नहीं किया, उन हाथों से पानी पीने का कोई लाभ नहीं है।"

"पर गुरु जी! मैं तो इस कटोरे को बड़ी अच्छी तरह से मांज कर स्वच्छ पानी भर कर लाया हूं!" गुरु जी ने उसके हाथों द्वारा लाया पानी पीने से इंकार कर दिया। सभी हैरान थे। उसे भी कुछ समझ नहीं आ रहा था। गुरु जी ने उसके भ्रम की निवृत्ति इस प्रकार की— "सिखी सेवा से शुरू होती है। सेवा के द्वारा शरीर स्वच्छ होता है। सेवा से मन की मैल उतर जाती है। सेवा से अहंकार का नाश होता है। सेवा से जीवन में विनम्रता का संचार होता है। सेवा से शान्ति प्राप्त होती है। सेवा का मार्ग नेकी का मार्ग है। सेवा क्रियात्मक रूप से प्रेम का सर्वोत्तम साधन है। निष्काम भाव से मनुष्य-मात्र की सेवा प्रभु की सेवा है।"

गुरबाणी का पावन कथन है :

सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ (पन्ना २८६)

"नाम-सुमिरन से जब मन स्वच्छ हो जाता है तो हाथों से स्वयंमेव सेवा के कार्य होते हैं। आत्मा स्वच्छ होती है नाम-सुमिरन के द्वारा और शरीर स्वच्छ होता है सेवा के कार्य करने से। सेवा के द्वारा प्रभु के दरबार में स्थान प्राप्त होता है।"

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (पन्ना २६)

सिख पर गुरु जी के इन वचनों का इतना प्रभाव पड़ा कि उसने अपना शेष जीवन तन, मन, धन से लोक-सेवा हेतु समर्पित करने का संकल्प लिया।

गुरबाणी पढ़ें !
गुरबाणी सुनें !
गुरबाणी विचारें !

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०५०३

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवि-१५

'जंगनामा गुरु गोबिंद सिंघ' के रचयिता—कवि अणीराय

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान आध्यात्मिक-सामाजिक नेता, उत्कृष्ट योद्धा, कुशल रणनीतिज्ञ और आदर्श सेनापति तो थे ही, साथ ही आप उच्च कोटि के विद्वान, दार्शनिक, अनुपम साहित्य-सृजक, कलाविद् और बहुभाषाविद् भी थे। दशमेश पिता के दरबार में धर्म, इतिहास, समाज, राजनीति, कला, साहित्य आदि पर अध्ययन-मनन एवं सृजन-चिंतन नित्य-प्रति अबाध रूप से चलता रहता था। गुरु जी के दरबार की यह कीर्ति सम्पूर्ण भारत में फैली हुई थी। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि अनेक कवि-कोविद तथा विद्वान पाऊंटा साहिब और अनंदपुर साहिब में साहित्यकारों एवं विद्वानों को मिलने वाले सम्मान से आकर्षित होकर गुरु-दरबार में आये और सदा के लिए दशमेश पिता के आश्रय में ही रह गये। गुरु जी के आश्रित दरबारी कवियों में एक महत्वपूर्ण नाम कवि अणीराय का भी है। अन्य कवियों की भांति कवि अणीराय भी गुरु-दरबार की शोभा सुनकर दशमेश पिता के पास आये थे।

कवि अणीराय अपनी रचना 'जंगनामा गुरु गोबिंद सिंघ' के कारण अमर हो गये। इस कृति में कवि अणीराय ने गुरु साहिब द्वारा लड़े गये एक युद्ध का चित्र प्रस्तुत किया है। इसमें मुगल बादशाह औरंगजेब के एक सिपहसालार अज़ीम ख़ां के अनंदपुर साहिब पर चढ़ाई करने का हाल बयान किया गया है।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह युद्ध १४ जनवरी सन् १७०३ ई को लड़ा गया था। दशमेश पिता चमकौर से अनंदपुर साहिब को वापस आ रहे थे। मार्ग में अज़ीम खां और उसके लश्कर ने गुरु जी पर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध में गुरु जी ने सिर्फ एक ही तीर मार कर अज़ीम खां को मौत के घाट उतार दिया। कवि अणीराय ने अज़ीम खां के मारे जाने और शाही लश्कर की हार का वीर-रसात्मक वर्णन अपने जंगनामे में किया है।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भी कवि अणीराय से बड़ा स्नेह रखते थे। कवि ने अपने शब्दों में गुरु साहिब के अपने प्रति प्रेम को बयान किया है :

अणी राय गुर से मिले, दीनी तांहि असीस।
'आओ' कहयो आप ने, बहुर करी बखशीश।

इसी प्रकार जब कवि अणीराय ने दशम पातशाह को अपनी कृति 'जंगनामा गुरु गोबिंद सिंघ' भेंट की तो दशमेश पिता ने कवि के प्रति अत्यंत प्रेम प्रदर्शित किया। गुरु जी ने नग-जड़ित सोने का अभूषण एवं एक 'हुक्मनामा' प्रदान किया :

नग कंचन भूखण बहुत, दीनो सतिगुर एह।
'नामा हुकम' लिखाइ के, कीनो सभस सनेह।

इस प्रकार कवि अणीराय को 'जंगनामा गुरु गोबिंद सिंघ' रच कर न सिर्फ दशमेश पिता का अमूल्य स्नेह ही प्राप्त हुआ बल्कि दशम पातशाह की कृपा से वह अपनी रचना के साथ ही अमर हो गया। ❀

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)।*

शिरोमणि कमेटी १ हजार कमरों वाली सराय का निर्माण करेगी : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसरः १६ अक्तूबर। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में देश-विदेश से आने वाली संगत की रिहायश के लिए शिरोमणि गु: प्र: कमेटी जल्दी ही एक हजार कमरों वाली एक बड़ी सराय का निर्माण करने की योजना बना रही है। यह जानकारी शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने दी। गुरुद्वारा बाबा दीप सिंघ जी शहीद के सामने बनाए गए शहीद बाबा दीप सिंघ जी निवास की आरम्भता के अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि इस नवनिर्मित सराय में ११० कमरों के अलावा ४२ छोटे-बड़े हाल कमरे हैं तथा दो लिफ्टों की सुविधा भी रखी गई है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि अकाली मार्केट में एक हजार कमरों वाली सराय बनाने की योजना है। उन्होंने बताया कि नई सरायें वातानुकूलित बनाई जा रही हैं। पुरानी सरायों में अब तक १५० कमरे वातानुकूलित हो चुके हैं। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के सदस्यगण तथा शिरोमणि कमेटी कार्यालय के पदाधिकारी एवं श्री दरबार साहिब के प्रबंधक साहिबान उपस्थित थे।

शिरोमणि कमेटी का वार्षिक अधिवेशन २२ नवंबर को

फतेहगढ़ साहिब : १७ अक्तूबर। आज गुरुद्वारा श्री फतेहगढ साहिब में शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की कार्यकारिणी की एकत्रता जत्थेदार अवतार सिंघ की अध्यक्षता में हुई। एकत्रता के बारे में जानकारी देते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि कमेटी का वार्षिक अधिवेशन २२ नवंबर २००८, दिन शनिवार को तेजा सिंघ समुद्री हाल, श्री अमृतसर में दोपहर बाद १ बजे होगा, जिसमें नए पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी कमेटी के सदस्यों का चयन किया जाएगा। आज की एकत्रता में सिंघ साहिब ज्ञानी जसविंदर सिंघ को श्री हरिमंदर साहिब का कार्यकारी हॅड ग्रंथी लगाया गया। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि वाघा तथा अटारी में श्री हरिमंदर साहिब की बड़ी तस्वीर तथा श्री अमृतसर से सम्बंधित इतिहास लिखाकर लगाया जाएगा। विदेशों से जो यात्री श्री हरिमंदर साहिब आएंगे उनके लिए दो वातानुकूलित बसें अमृतसर जिले के गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन के लिए लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि श्री अमृतसर के अजीत नगर में साईं मीयां मीर की याद में एक सराय ४ करोड़ ५७ लाख ५५ हजार रुपए की राशि खर्च कर बनाई जाएगी। उन्होंने बताया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का हिंदी अनुवाद जो डॉ. जोध सिंघ, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला ने किया है, उसे शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ले लेगी तथा २० अक्तूबर को तलबंडी साबो में डॉ. जोध सिंघ को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में जो चेयर गुरु तेग बहादर साहिब जी ने नाम पर है उसे प्रत्येक वर्ष शिरोमणि कमेटी की ओर से ५ लाख रुपए दिया जाया करेगा। उन्होंने हरियाणा के टेनिस खिलाड़ी बाजवा तथा एक सात साल के लड़के, जो दौड़ का चैंपियन बना है, को भी सम्मानित करने का ऐलान किया।

केंद्रीय सिख अजायब घर में प्रसिद्ध सिख शख़सीयतों की तस्वीरें सुशोभित

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी कमेटी के द्वारा लिये निर्णय के अनुसार गत दिनों स्थानीय केंद्रीय सिख अजायब घर में भाई जसबीर सिंघ खन्ने वाले, ज्ञानी संत सिंघ मसकीन, ज्ञानी मेवा सिंघ, भाई गुरदयाल सिंघ रोड़ांवाली और भाई ज्ञान सिंघ सुरजीत की तस्वीरों को सुशोभित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित इन सभी के परिवारों के सदस्यों और विशेष सहयोगियों को गुरु-घर की बख्शिश सिरोपाओ से निवाजा गया। ये सभी शख्यियतें सिख पंथ के विकास में विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अमूल्य सेवाओं के लिए सम्माननीय हैं। इस अवसर पर श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि शूरवीर योद्धाओं और महान शख्सियतों, जिन्होंने देश-कौम के लिए स्वयं को न्योछावर किया, गुरमति के प्रचार व प्रसार हेतु प्रयास किया, कौम का मार्गदर्शन किया ऐसी शख्सियतों के चित्र केंद्रीय सिख अजायब घर में इसलिए सुशोभित किये जाते हैं ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि केंद्रीय सिख अजायब घर समस्त सिख इतिहास को रूपमान करता है। कौम के लिए नये कीर्तिमान स्थापित करने वाली, गुरमति का प्रचार व प्रसार करने वाली समर्पित सिख शख्सियतों के चित्र स्थापित करके शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति की है। इस शुभ अवसर श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी साहिबान तथा काफी संख्या में, शिरोमणि कमेटी के सदस्य और पदाधिकारी उपस्थित थे।

राजस्थान पाठक मंच द्वारा डॉ. मनजीत कौर को सम्मानित किया गया

जयपुर :। 'गुरमति ज्ञान' ने पाठकों के मनों पर अपनी अमिट छाप बनाते हुए समाज में अच्छा-खासा मुकाम हासिल कर लिया है। यह सब 'गुरमति ज्ञान' में प्रकाशित होने वाली विद्वान लेखकों की रचनाओं का सदका ही है। ऐसा ही एक उदाहरण देखने को मिला जयपुर में, जहां 'गुरबाणी चिंतनधारा' कालम की लेखिका डॉ. मनजीत कौर को 'जयपुर पाठक मंच' द्वारा 'पंजाबी साहित्यकार' के रूप में सम्मानित किया।

हुआ यूं कि 'जयपुर पाठक मंच' के अध्यक्ष ने जब 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका को पढ़ा तो वे अन्य लेखों के साथ-साथ डॉ. मनजीत कौर द्वारा लिखित कालम 'गुरबाणी चिंतनधारा' में प्रकाशित 'जपु जी साहिब' तथा 'जापु साहिब' की विचार-व्याख्या से भी प्रभावित हुए बिना न रह सके। उन्होंने तुरंत डॉ. मनजीत कौर से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें गुरबाणी की व्याख्या हिंदी में लिखने पर उनका धन्यवाद किया तथा उनके मंच द्वारा १४ सितंबर २००८ को चौदह विविध भाषाओं के साहित्यकारों को सम्मानित किए जाने वाले समारोह में डॉ. मनजीत कौर को पंजाबी साहित्यकार के रूप में सम्मानित किए जाने का निर्णय लिया। इस अवसर पर डॉ. मनजीत कौर ने कहा इस सम्मान की बख्शिश परमात्मा द्वारा हुई है तथा इसका सारा श्रेय 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका को जाता है।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-११-२००८